BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 मार्च-30 अप्रैल, 2023 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

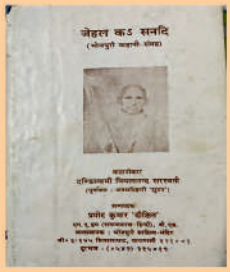

समीक्षा विशेषांक

(भाग-3)

समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह

भोजपुरी सिनेमा के संसार (अध्याय 4)

आईं भोजपुरी जंक्शन के सोशल अड्डा पऽ

https://humbhojpuria.com

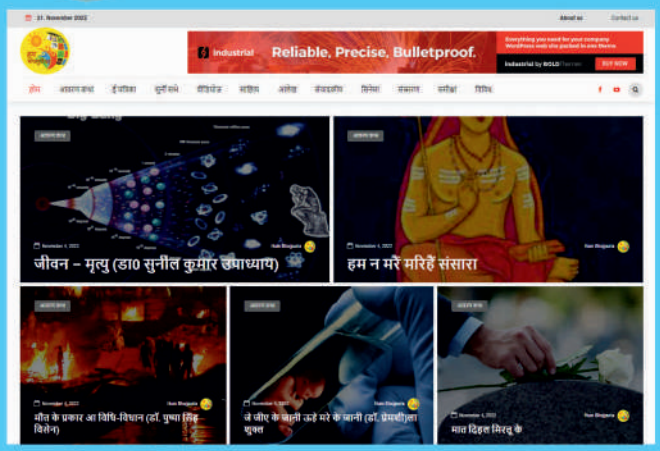

YouTube

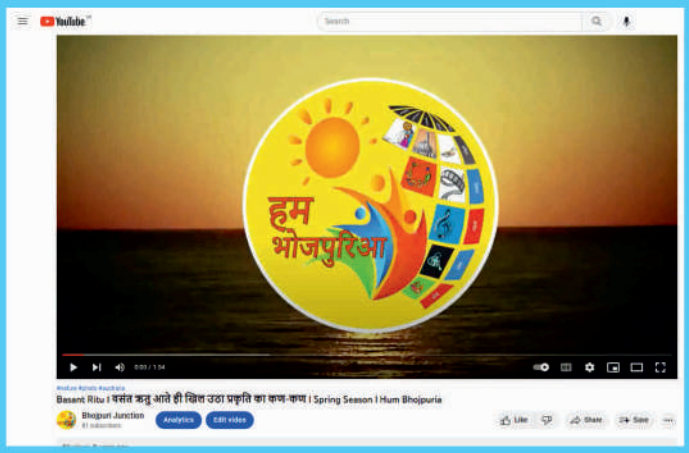

https://facebook.com/humbhojpuriaa/

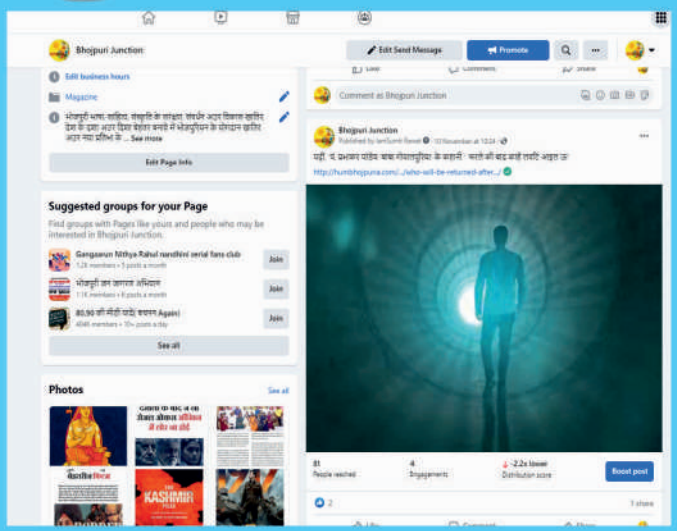

https://twitter.com/humBhojpuria

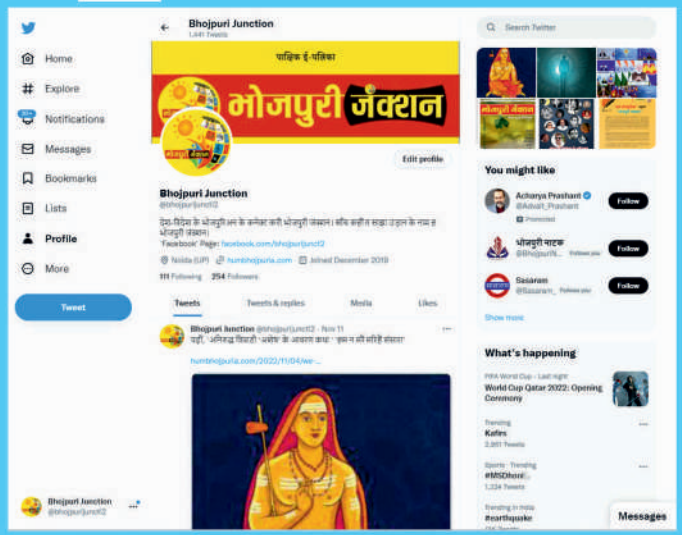

वर्ष : 3, अंक : 13-16 | 1 मार्च - 30 अप्रैल 2023

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश मिश्र
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित। संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा।

भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी सिनेमा के संसार (अध्याय-4, भाग-2).....60

एह अंक में

सुनी सभे

काश, अजय बांगा अउर गुनीत मौंगा से खालिस्तान समर्थक लोग कुछ सिखित 6

समीक्षा खंड (किताब / समीक्षक)

एक कड़ी गीत के / अशोक द्विवेदी.....8
अन्तहीन / आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'.....12
लोक देवता कारिख नन्द लाल / निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव..... 14
जेहल क सनदि / डॉ.प्रमोद तिवारी 16
सुरता के पथार / सूर्यदेव पाठक 'पराग'.....18
बाते बात में / डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़' 20
हे देखा हो / चंद्रेश्वर 22
बाबू कुंअर सिंह / बलभद्र 24
कान्ही ना लागब सजनी / विष्णुदेव तिवारी 26
गाँव के मोह / डॉ. संध्या सिन्हा 28
काठ के रिस्ता / जयशंकर प्रसाद द्विवेदी 30
नवरंग / दिव्येन्दु त्रिपाठी 32
नीक-जबून / रामदेव शुक्ल 34
बंगड़ गुरू / केशव मोहन पाण्डेय 36
गाँव गावे गीत / रवि शंकर सिंह 38
जइसे अमवा के मोजरा से रस चूवेला / किरण सिंह 40
नून तेल / अखिलेश कुमार पाण्डेय 42
इन्द्र धनुसी रंग में भोजपुरी / शिबू गाजीपुरी 44
ए सरकार! किसान हईं हम / विश्वजीत शेखर राय 46
अदहन / अभिषेक भोजपुरिया 48
दोहमच / डॉ.रजनी रंजन 50
सोन चिरइया / डॉ. आदित्य कुमार 'अंशु' 52
मनपाखी /आनन्द कुमार 54
एकलव्य / अजय साहनी 56
रेत-रेत नदी / राजेन्द्र प्रसाद 58

नोट -

कई गो किताब के समीक्षा में व्यक्त विचार से हम सहमत नइखीं बाकिर समीक्षक के भावना आ अभिव्यक्ति के आजादी के कद्र करत ओह विचार भा लेख के प्रकाशित कइले बानी। एह से कवनो समीक्षा खातिर संपादकीय टीम जिम्मेदार नइखे। पाठक के कवनो भी लेख भा विचार पर असहमति होखे त पाठकीय प्रतिक्रिया के स्वागत बा। लिख के भेजीं, अगिला अंक में प्रकाशित कइल जाई। - संपादक

The Indian Public School

Dehradun

The 21st century gurukul

- Auditorium with a seating capacity of 1500
- 2 Swimming Pools
- In- House Dairy with more than 200 Cows Supplying pure fresh milk & dairy products to the Mess
- 80 acres of lush green campus
- Co- educational Residential School with qualified & experienced teachers
- Modern Academic Block with laboratories, Music & Art rooms with covered area measuring 60,000 sq. ft.
- Horse Riding Facility
- Smart Classrooms
- Excellent Games & Sporting facilities: Cricket, Football, Chess Badminton, Basketball, Volleyball, Tennis, Rugby, etc.

ADMISSION OPEN

For Classes III-IX & XI - 2022-23

www.indianpublicschool.com

+91 9568012777 | +91 9568012778

संपादकीय

समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह

जिनगी का ह। ऊर्जा ह। ऊर्जा के किसिम-किसिम के खेला ह। जनम से मृत्यु ले ई खेला चलत रहेला। जन्म आ मृत्यु एक्शन ह, बाकी सब रिएक्शन। वैज्ञानिक भाषा में कहीं त जन्म फ़्यूजन ह आ मृत्यु फि जन, शरीर के आ आत्मा के। फ़्यूजन आ फि जन उर्जे के खेला ह।

जन्म आ मृत्यु के बीच में हँसल, रोअल, गावल-बजावल, जागल-सूतल, खाइल-पचावल ...इहाँ तक कि साँस लीहल सब ऊर्जा के कमाल ह। ऊर्जा पर नियंत्रण माने जीवन पर नियंत्रण।

कॉस्मिक ऊर्जा, नेगेटिव ऊर्जा, पाजिटिव ऊर्जा, श्वसन आ भोजन से बनल ऊर्जा आदि के समझे आ एह पर काम करे के जरूरत बा। मानसिक आ आध्यात्मिक ऊर्जा के उच्च स्तर पर ले जाए के जरूरत बा। उर्जे से एक्शन आ रिएक्शन होला। ऊर्जा जवना स्तर के रही, एक्शन-रिएक्शन ओही स्तर के होई। रिएक्शन कई गो रूप में प्रगट होला। सृजनो एगो रिएक्शन ह। गीत-गजल, कविता-कहानी लिखलो एगो रिएक्शन ह।

जे ओह रिएक्शन के समझी, उहे समीक्षा कर पाई। रचना के साथे रचनाकार के 'चित्त के अनुभूति' के पढ़े के होई, तबे ओह रचना के सही स्वर सुनाई दी। ना त रचना बोली कुछ अउर आ समीक्षक के सुनाई-बुझाई कुछ अलगे। समीक्षक अगर दोसरा 'चित्तस्थिति' में बा, तबो एकर चांस बा। समीक्षक अगर पूर्वाग्रह से ग्रस्त बा, तब त अउरो चांस बा।

रचनाकार के संवेदनशील मन अपना आस-पास जवन कुछ देखेला, ओकरा से जवन प्रतिक्रिया होला, ओकरे से ऊ अपना रचना के शिल्प गढ़ेला। समीक्षा ओह प्रतिक्रिया के प्रतिक्रिया ह। समीक्षो एक लेखा से रचने ह भा ई कहीं कि ऊ रचना के "सप्लीमेंट" ह। ई समझीं कि रचनाकार रचना के रूप में एगो बच्चा के जनम देला जवना के समीक्षक नाप जोख के कपड़ा पहिरावेला। कबो-कबो हमरा इहो लागेला कि समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह। समीक्षा के मुख्य औजार ह विश्लेषण आ तुलना, बाकिर समीक्षा के उद्देश्य समानांतर रचना से तुलना मात्र ना ह, बल्कि साहित्य के कैनवास पर ओह पेंटिंग के उभार के प्रस्तुत कइल ह। समीक्षा के उद्देश्य होला पाठक के रचना के आस्वाद करावल।

लेखक के मन से समीक्षक के मन जब ले ना मिली, तब ले रचना के सही आस्वाद पाठक तक पहुँचबे ना करी। सही समीक्षा खातिर सम मन चाहीं।

सम मन से ही रचना के साथे न्याय हो पाई। समीक्षा में रचना के गुण-दोष दूनो के विवेचना होला। जब सम मन रही तब समीक्षा केहू के पानी उतारे खातिर ना होई, बेहतरी खातिर होई, राह देखावे खातिर होई, सचेत करे खातिर होई अउर प्रशंसा भी गाछ प चढ़ावे खातिर ना होई, प्रोत्साहित करे आ हौसला बढ़ावे खातिर होई।

बाकिर, एकरा खातिर अपना एनर्जी के नियंत्रण में रखे के होई। दिमाग के न्यूरोन्स ठीक रखे के होई आ ई आत्म-चिंतन अउरी आत्म-समीक्षे से संभव बा। अफसोस के बात ई कि अपना शिक्षा-प्रणाली से ई सब गायब हो गइल बा।

अपना देह-दिमाग, जीभ-जबान आ आचरण के कइसे हैंडिल कइल जाय, एकर पढ़ाई अब होते नइखे। एही से तनी-तनी बात पर सुसाइड होता। मन सुसाइड से पहिलहूँ स्थिति के समीक्षा त करते नू होई! ना-ना, ऊ समीक्षा ना ह। सही समीक्षा खातिर मन के प्रशिक्षित करे के पड़ी। बाहर के दुनिया मन के भीतर अइसन तबाही मचावत बा कि आदमी आपन अस्तित्वे खतम कर लेता। जीवन के हर घटना, हर स्थिति, हर अनुभव कुछ सीखे खातिर, अपना के मजबूत बनावे खातिर, अपना के विकसित करे खातिर होला, ना कि अपना के तकलीफ देबे खातिर भा आपन विनाश करे खातिर!

अइसन समीक्षा जवन आदमी के डिप्रेशन भा मौत के तरफ ढकेले, ठीक नइखे। ऊ चाहे जीवन के होखे भा किताब के। धरती पर आदमिये एगो अइसन जीव बा जे आपन प्रोग्रामिंग खुद कर सकेला। ऊ मन से ठान लेव त नकारात्मक से सकारात्मक राह पकड़ सकेला।

हम किताब के समीक्षा के बहाने जीवन के समीक्षा के बात करत बानी। किताबो में त एगो जीवने होला, जीवने के घटना आ घटक होला, अनुभव-एहसास होला। जे जीवन के गहराई से समझी, उहे किताबो के ठीक से समझ पाई।

समीक्षा माने ऑब्जर्वेशन आ एक्सप्लानेशन। आ ई त एह बात पर निर्भर करत बा कि राउर नजरिया आ बुद्धि केतना पवित्र, केतना तीक्ष्ण आ केतना अनुभवी बा।

पहिला आ दूसरा भाग के बाद समीक्षा विशेषांक के तीसरा भाग प्रस्तुत करत अपार खुशी हो रहल बा।

प्रणाम!

मनोज भावुक

सुनीं सभे

आर.के. सिन्हा

काश, अजय बांगा अउर गुनीत मौंगा से खालिस्तान समर्थक लोग कुछ सिखित

काश, खालिस्तान के पक्ष में नारेबाजी करे वाला लोग अजय बांगा अउर गुनीत मौंगा से कुछ प्रेरणा ले लित। ई दूनू जन भी कट्टर सिख ह लो आ ये लोग के हालिया उपलब्धि पर सारा देश गर्व कर रहल बा। बांगा ओ वर्ल्ड बैंक के अध्यक्ष बने जा रहल बाड़ें जेकर 189 सदस्य देश बाटे, जेमे 170 देशन के नागरिक संसार के 130 शहरन में काम कर रहल बाड़ें। बेशक, गरीबी के खत्म करे आ विकास के रास्ता देखावे वाला वर्ल्ड के प्रमुख बने जा रहल बांगा के उपलब्धि पर सारा भारत खुश बा।

आजकल ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, कनाडा आ अमेरिका में कुछ भटकल सिख नवयुवक ना जाने कवना भ्रम में काल्पनिक खालिस्तान के मांग करत देखाई देवे लागल बा लोग। ये लोग पर गुस्सा से बेसी तरस हीं आ रहल बा। अपना महान गुरु लोग के धरती पंजाब आ भारत के लेके ई लोग जवना तरे से अनाप-शनाप बकवास कर रहल बा लो, ऊ बेहद अशोभनीय बा। ई लोग ई समझ लेव कि अब भारत कबहूँ विभाजित ना होई। भारत के बंटवारा के ख्वाब देखे वालन के निराशा ही होई। ये बिन्दु पर 140 करोड़ भारतीय एक बा। कहीं कवनों विवाद नइखे। अब ऊ जमाना गइल जब आपन-आपन नेतागिरी चमकावे आ प्रधानमंत्री बने खातिर नेहरु अउर जिन्ना हिन्दुस्तान-पाकिस्तान बाँट लिहल लो। अब ओइसन होखे से रहल।

काश, खालिस्तान के पक्ष में नारेबाजी करे वाला लोग अजय बांगा अउर गुनीत मौंगा से कुछ प्रेरणा ले लित। ई दूनू जन भी कट्टर सिख ह लो आ ये लोग के हालिया उपलब्धि पर सारा देश गर्व कर रहल बा। बांगा ओ वर्ल्ड बैंक के अध्यक्ष बने जा रहल बाड़ें जेकर 189 सदस्य देश बाटे, जेमे 170 देशन के नागरिक संसार के 130 शहरन में काम कर रहल बाड़ें। बेशक, गरीबी के खत्म करे आ विकास के रास्ता देखावे वाला वर्ल्ड के प्रमुख बने जा रहल बांगा के उपलब्धि पर सारा भारत खुश बा। अजय बांगा एगो शूरवीर के पुत्र हउअन। उनकर पिता हरभजन सिंह बांगा भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट जनरल पद से रिटायर भइल रहले। ऊ 1962, 1965 आ 1971 के जंग में शत्रु सेना के दांत खट्टा क दिहले रहलन। अजय बांगा के परिवार बहुत आस्थावान सिख परिवार ह।

अजय बांगा बेहतरीन मोटिवेशल स्पीकर भी हउअन। उनके नेतृत्व में ही **"मास्टर कार्ड"** नाम के कंपनी अपना निकटतम प्रतिद्वंद्वी **"वीजा कार्ड"** के पछड़ले रहे। अजय

बांगा मास्टरकार्ड के मोबाइल पेमेंट के क्षेत्र में पहिला नंबर पर पहुंचवलन। ऊ हिन्दी, पंजाबी, इग्लिश के अलावा गुजराती भी बोल लेलन। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 2015 के अमेरिका यात्रा के समय उनका से फार्च्यून-500 कंपनियन के सीओ मिलल रहलें। ओमे अजय बांगा भी रहले। बांगा के बैंकिंग आ फाइनेंस के दुनिया के एक्सपर्ट मानल जाला। बांगा के अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा अपना ट्रेड पॉलिसी से जुड़ल सलाहकार टीम में लेले रहले। अब ऊ वर्ल्ड बैंक के अध्यक्ष बने जा रहल बाड़ें। जाहिर बा कि उनके सलाह से सदस्य देशन के लाभ होई।

अजय बांगा वर्ल्ड बैंक के अध्यक्ष पद पर रह के ओ देशन खातिर विशेष योजना ले अइहें जे विकास के दौड़ में बहुत पिछड़ गइल बा।

अगर बात गुनीत मोंगा के कइल जाय त उनका उनके फिल्म **'द एलीफैंट विस्परर्स'** खातिर आस्कर सम्मान मिलल ह। **'द एलीफैंट विस्परर्स'** के बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट कैटेगरी में नॉमिनेट कइल गइल रहे। गुनीत मोंगा के बारे में देश के तब कायदा से पता चलल जब ऊ **"लंच बॉक्स"**, **"मानसून शूट आउट"** आ **"गैंग्स ऑफ वासेपुर"** जइसन फिल्मन के प्रोड्यूस कइले। ई सब फिल्म हिट भइल आ ये फिल्मन के दर्शक अउर समीक्षक के समान रूप से प्यार मिलल।

पहिले वर्ल्ड बैंक के अध्यक्ष बने वाला अजय बांगा आ फेर गुनीत मोंगा देश के नाम रोशन कइले बा लो। ई साँच बा कि अजय बांगा अब अमेरिकी नागरिक बन चुकल बाड़ें। पर उनका अपना भारतीय मूल के भइला पर गर्व बा। ऊ बार-बार भारत आवेलें। ऊ भारत से दूर जा भी नइखन सकत। आखिर इहे उनकर देश ह। उनकर मातृभूमि ह।

ओने, मूल रूप से दिल्ली के रहे वाली गुनीत मोंगा अब मुंबई में रहेली। गुनीत मोंगा जब आस्कर पुरस्कार लेवे गइली तब ऊ साड़ी पहिनले रहली आ ऊ कहली कि उनका भारतीय भइला पर नाज बा।

जे खालिस्तानी लोग लंदन में भारतीय तिरंगा के अपमान कइल, ओ लो के नींद कइसे आवत होई। ऊ लो त अब अमर शहीद भगत सिंह के भी गाली दे रहल बा। ओ लोग के डूब मरे के चाहीं। ओ लोग के मरे खातिर एसे बेहतर कवनों रास्ता नइखे हो सकत। जवना भारत माता के प्रति हरेक हिन्दुस्तानी अपना जान देवे खातिर तइयार रहेला, ऊ लोग ओकरा खातिर अपशब्द बक रहल बा। ऊ लो भारत आके काहे ना भारत माता आ भगत सिंह खातिर अपशब्दन के प्रयोग करेला। एक बेर क के देखे लो त सही। ओ लो के तब जन्नत के हकीकत सामने से देखे के मौका मिली। पर ई लोग त कायर ह।

अगर बात गुनीत मोंगा के कइल जाय त उनका उनके फिल्म 'द एलीफैंट विस्परर्स' खातिर आस्कर सम्मान मिलल ह। 'द एलीफैंट विस्परर्स' के बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट कैटेगरी में नॉमिनेट कइल गइल रहे। गुनीत मोंगा के बारे में देश के तब कायदा से पता चलल जब ऊ "लंच बॉक्स", "मानसून शूट आउट" आ "गैंग्स ऑफ वासेपुर" जइसन फिल्मन के प्रोड्यूस कइले। ई सब फिल्म हिट भइल आ ये फिल्मन के दर्शक अउर समीक्षक के समान रूप से प्यार मिलल।

भारत में करोड़न सिख जीवन के अलग-अलग क्षेत्रन में श्रेष्ठ काम कर रहल बाड़ें। देश के प्रमुख समाजसेवी जितेन्द्र सिंह शंटी कहेलन कि उनकर जीवन भारत माता के समर्पित बा। ऊ खलिस्तनियन के ललकारेलन। शंटी लगभग तीन दशक से लावरिस शव के अंतिम संस्कार करवा रहल बाड़ें। ऊ कोविड काल में अपने हाथ से दर्जनों अभागा लोगन के अंतिम संस्कार करववले रहलन। ओ बेरा उनका आ उनके परिवार के कई सदस्य के कोविड हो गइल रहे। लेकिन ऊ हार माने वाला कहाँ रहले। ऊ कोविड के हरवला के बाद फेर से सड़कन पर उतर गइले। पदमश्री पुरस्कार विजेता शंटी रक्त दान के सैकड़ा भी बना लेले बाड़न। ये बीचे, अर्पणा कौर भारतीय समकालीन कला जगत के सशक्त हस्ताक्षर बाड़ी। उनकर कूची 1984 के सिख विरोधी दंगा आ वृन्दावन के विधवा लोग पर खूब चलल बा। अर्पणा कौर के चित्रन में बुद्ध, बाबा नानक आ सोहनी-महिवाल भी मिली लो। उनका चित्र में स्त्री पात्र खूब मिलेला लो। उनका पर सारा भारत गर्व करता।

करीब दू साल पहिले बिजनेस के दुनिया से रिटायरमेंट ले लेवे वाला पीआरएस ओबराय से सारा देश परिचित बा। ओबराय के निगरानी में राजधानी के ओबराय इंटरकांटिनेंटल होटल 1965 में बनल रहे। उनका के भारत के होटल इंडस्ट्री के गॉड फादर मानल जाला। मुंबई के दि ट्राइडेंट होटल 26/11 हमला में बर्बाद हो गइल। लेकिन पीआरएस ओबराय ओही राख के ढेर से फेर खड़ा कइलन। खालिस्तान के मांग करे वाला इयाद क ले कि ओबराय ओ लोग पर थुकबो ना करिहें।

भारत के चोटी के सिख हस्ती के बात होई त भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान बिशन सिंह बेदी, भारतीय हॉकी टीम के दू पूर्व कप्तान क्रमशः हरबिंदर सिंह आ अजीत पाल सिंह के नाम भी लेवे के होई। भारत के चौतरफा विकास में सिख लोगन के योगदान अमूल्य रहल बा। सारा देश ये सच्चाई के जान रहल बा। बहरहाल, देश के खालिस्तानी तत्वन के साथ कवनों भी तरह के रियायत बरते के जरूरत नइखे। ये लोग के कठोरता से कुचलेके होई। 卐卐

पुस्तक समीक्षा

डॉ. अशोक द्विवेदी

आनन्द संधिदूत के गीत-संसार

आनन्द 'संधिदूत' के शिकायत बा कि "गीत नापे के ठोस आधार ओह वर्ग का पासे नइखे जे गीत लेखन भा समीक्षा कार्य में लागल बा।" दरसल काव्य-संसार के नाप जोख अउर चीजन मतिन मीटर; सेर, किलो ग्राम से ना होखे। अधिका से अधिका कवनो सहृदय आ समझदार अदिमी ओह 'अद्वितीय संसार' में पइठि के ओकरा कारीगरी आ संवेदनात्मक गहराई आ फइलाव के निहार सकेला आ लवटि के अपना भाषा में ओकर बखान क सकेला। आचार्य सम्मट के इयाद बरबस आव ता-

'अपारेकाव्य-संसारे कविरेकः प्रजापतिः
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते।'

रूचलानुसार संसार सिरजे वाला कवि क काव्य-सृष्टि 'नियतिकृत नियम सहिता' न होके नियति के नियमन से अलग, 'अनन्य परतंत्र' (दोसरा के अधीन ना रहे वाला) मानव के आनदं उत्कर्ष खातिर, सुरुचिपूर्ण आ मनोहारी होले। कवि के ई संसार आ ओकर चीज जइसन लउकेले आ रुचेले, ओइसने अपना संसार में ऊ सिरजन करेला। ब्रह्मा आ सृष्टि से सुन्दर आ अलग ओकरा काव्य-संसार के कवनो पैमाना से सही-सही नापलो न जा सके। गीत कविता क एगो कलात्मक, भावपर्णू आ सांकेतिक रूप (फार्म) हऽ जवना में लय, गेयता आ संगीतात्मकता का साथे अदंरूनी संगति (पॉजिटिव यूनिटी) जरूरी होला। आजु के बदलत परिवेश में गीतकार अपना संवेदनात्मक उठान आ गुनगुनहट में अगर साँच अनुभूतियन के सार्थक ढंग से उरेहे खातिर नया जमीन, नया रूप के तलाश करऽता त कवनो बेजायँ नइखे।

पुरान शास्त्रीय छंद विधान ओकरा कथ्य के .....उक्ति वक्रता भाव-सघनता आ रचनात्मक साचे के वाजिब ढंग से उजागर ना क सके। भाषा के सृजनात्मक इस्तेमाल कवि के रचना के मूल्य बढ़ावेला। पुरान सौंदर्याभिरुचि आ सौंदर्यदृष्टि के आदी लोग, नया दृष्टि सौंदर्य-चेतना से भड़की त भड़कल करो। संधिदूत ओह गिनल चुनल गीतकारन में बाड़न जवन लोक-प्रचलित छंदन के इज्जत देके, शास्त्रीय रचना-विधान के साँचा तुरे के प्रयास कइले बाड़े। साथ-साथ ऊ लोक राग आ लय से लगावो रखले बाड़े।

संधिदूत के एक कड़ी 'ना दिमाग में दिल बलकी दिलवे में रहे दिमाग' उनका गीत-संसार "एक कड़ी गीत के" में घुसे क कुंजी ह। एही कुंजी

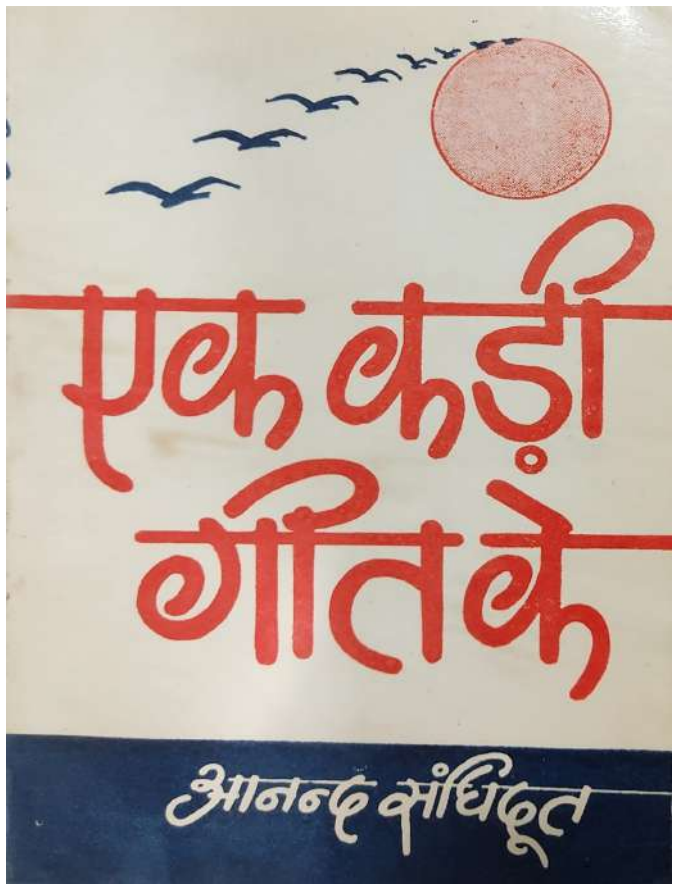

किताबः एक कड़ी गीत के
लेखकः आनंद संधिदूत
विधाः गीत, लोक गजल
प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान, पटना
प्रकाशन वर्ष : 1993

के लेके हम ओम्मे घुसे के कोशिश करऽ तानी। सिरजन के तन्मयता आ पढ़ला का तन्मयता में बहुत कम दूरी होला। ज्ञानात्मक संवेदना आ संवेदनात्मक ज्ञान के फर्क करही के परी। बे डूबल आ बे तन्मयता के एह गीत-संसार क सुघराई ना लउकी। आ ईहो रचना के सुघराई आ विन्यास के खिंचाव (आकर्षण) पर निर्भर करेला कि ऊ कतना खींचऽतिया आ डुबाव तिया। संधिदूत लेखा कवनो समझदार पारखी आ कवि-कर्म का प्रति ईमानदार गीतकार के, अनुभूति के गहराई आ संवेदनात्मक संदर्भ के पकड़ला बिना ओकरा गीत के मर्म ना बुझाई। संधिदूत का गीतन में मानवता क प्रेम, जिनिगी के जिनगी बनावे क सोच-फिकिर, आशा-निराशा, चिन्तन, संघर्ष क क्रियाशीलता या विसंगतियन पर सार्थक व्यंग्य बा।

सुघराई चाहे भाव के हो भा रूप के, विचार के हो भा कथ्य के, सहृदय ओकरा अदंरूनी आ बाहरी दूनो रूपन पर रीझेला। आज के सजग गीतकार अपना सुघराई आ बोध के दू रूपन के उकेरेला-भाव में आ कथन (अभिव्यक्ति) में। अभिव्यक्ति के औजार भाषा ह। ओकरा भाषिक रचाव में गुँथाइल संवेदना आ अनुभूति के ओकरा सहज सोभाव में ना पकड़ला पर भूल हो जाई। संधिदूत पुरान सौंदर्य-अभिरुचि से हट के लिखले बाड़न, गीत के लक्ष्य बा कि ऊ जेतना गेंदा-गुलाब के रक्षा करसु ओतने धतूरो के हिफाजत देसु। कवनो प्रकार के जीवन पृथ्वी पर विलुप्त ना होखे। सब पर्याप्त मात्रा में लहलहात रहे-हमरा गीत-के गेय वस्तु इहे बा। "ई दृष्टि महाप्राण निराला का ओह दृष्टि से मेल खाता, जवना से ऊ गुलाब आ कुकुरमुत्ता के देखले बाड़े। संधिदूत का गीतन में रोमैण्टिक भावोच्छवास ना होके साँच-सहज अनुभवन के जियत-जागत चित्र बाड़न स। ईहे चित्र (बिम्ब) उनका गीतात्मक सहजानुभूति के जान बाड़े स आ कलात्मक सुघराई के प्रान।

'एक कड़ी गीत के' मानुस जिनिगी के अंदरूनी आ बाहरी साक्षात्कार के गीत-संग्रह बा। कई गीतन में संधिदूत अपना भीतर उतरे, अपने के देखे आ 'देखल' के उरेहे के कोशिश कइले बाड़े। स्वामी दक्षिणामूर्ति आ शारदा सन्यासी के संगत आ थोर-बहुत प्रभाव का नतीजन ई कोशिश अवरु अर्थवान हो गइल बा। आत्म अन्वेषण आ साक्षात्कार का एह क्षणन में लोक संदर्भन के अलौकिक रूपो लउकि जाता। कबीर के रहस-भेद आ प्रेम-संसार के झलक ठावाँ-ठईं मिल जाता-बाकि उलटबाँसी नइखे होत। बिरोधाभास के बीच संसार के नश्वरता उभारि के, कवि काव्य-रूढ़ियन के नया अर्थ देबे के कोशिश कइले बा।

जवना परतिया में दुबिया ना जमली
उड़ली असढ़वो में धूल
समय बनावे तहाँ निरमल तलवा उगेला
कँवलवा के फूल ।

कवि के 'मानसर' भा 'निरमल तलवा' में कँवल के फूल (पूर्ण सौंदर्य) खोजे खातिर भीतर का-अगम तहखाना में उतरे के परत बा।

भइया नजर गड़लि असमनवाँ में
हम चितई अगम तहखनवाँ में ।

तहखाना में उतर गइला पर भित्तर क स्याह-सफेद लउके लागऽता आ अन्हार छँटला पर आपन बौनापन आ निरीहता उजागर होखे लागऽता। सरीर का 'टुटही बखरी' से अउँसल प्रेम बहरियाये लागऽ ता-एहू के कहे क उनकर लूर ढंग-निराला बा-

लागे हमरो ले नीक कहीं तार-रेंगनी।
एगो कोनवाँ बखरिया का सूप-बढ़नी
जे पोंछात रोज हाथ से अँगनवाँ में ।
...
रोआँ रोआँ अंग-अंग सगरी टटोरलीं
जलवे में जल बिनु छछने परनवाँ ।

प्रतीक आ मान पारम्परिक बाड़न स-कबीरी अंदाज में संधिदतू धरती के बिछावन आ आकास के ओढ़न बना ले ताड़न, फेरु खोज नया सिरा से जारी हो जाता आ नश्वरता उजागर होखे लागऽ ता-

सवख- सिंगरवा कोइलवा के लुतिया।
लहँगा चुनर चोली चोटी चुटपुटिया
लागत व्यर्थ, उतार फेंकत हम पागल भइलीं ना।

आज के आदमी असहाय। आ उपास जिनिगी के मनःस्थिति, पीड़ा आ आह से आहत अनाम 'बालम' का आर्त आत्मनिवदेन करत कवि फिकिरमदं आ दुखी बा-

निकसे न पावे नाहीं कतहीं दुअरिया
छछनि रोवे मनवे में मनवा के देवता ।
...
चिन्तवा फिकिरिया के चिन्तन बनवली।
जिनिगी रिन्हत दुख बिनलीं बेंसवलीं
खाय केहू अउरो घुसल बखरी।

अन्त में कूल्हि सुख-दुख, चिन्ता-फिकिर सँउपि के ओही अंतर्मन का अरूप रूपवान के बारे में सोचला पर उनका मन के लहर थिराता-एही से कवि दुनियाँ का लउके वाला विद्रूप के देखला का बजाय अपना भीतर देखे के बार-बार जतन करत लउकत बा।

दुनियाँ सोचले माथ पिराला।
तोहके सोचले लहर थिराय....
अगली बगली जलन समाले।
अंदर देखले आँखि जुड़ाय।

अपना कई गो गीतन में संधिदूत वर्तमान व्यवस्था, समाज आ ओम्मे सामान्य जन के छछनत-तड़पत-जूझत-बिलात जिनिगी के असली मार्मिक रूप उभारे के प्रयास कइले बाड़न। एह गीतन में नोकरिहा के दर्द, मजूर आ किसान के समूचा परिवेश के सांकेतिक बाकि पुरहर अभिव्यक्ति मिलल बा-लोकभाषा का जियतार अर्थ-गम्हिराई का साथ-

हाथ-गोड़ नाके रिया में धइ
तन रेकसा में जाय
आम अस झोरल बदन लागे मोर
मन बन्हकी जनाय
...
अतना उघार कि चिन्हार खोरी-खोरी।
जाई हम कहवाँ छिपाय चोरी-चोरी
...
मुट्ठी भर बीया के हो गइल तबाही।
आसा के खेती में लागलि बा लाही
आँखी से आँसू ना गिरल करे ठार ।
...
अपने जहाँ-जहाँ गोहरवलीं
ओहिजा एक गोड़ पर धवलीं

मुवलीं लाते तर कचरइलीं।

राउर जै जैकार मनवलीं
पर हम परिचय ना बन पाई ।

कठोर वास्तविकता का नाँव पर कोमल भाव के उपेक्षा आधुनिक प्रयोगवादी कविताई के फैशन बन गइल बा। संधिदूत में ई बात नइखे। ऊ आज के तमाम विकृतियन आ कडुवाहट में कोमल आ मधुर के उभारे के कोशिश कइले बाड़े। उनका गीतन में क्रांतिधर्मी लफ्फाजी नइखे, कारुणिक स्थिति आ पीड़ा के मार्मिक अभिव्यक्ति बा। अनास्था के ज्वार के रोके खातिर ऊ सचेष्ट बाड़े आ जीवन मूल्यन खातिर चिन्तित। एही से उनका गीतन के भावात्मक-सघनता तरल बा आ काव्य भाषा आर्द्र। जन-जीवन के असहाय स्थिति, उहापोह आ व्यथा के अतना सहज उरेह उनका गीतन में बा कि मन अनासो बेचैन हो उठऽता। उदाहरण में उनका किसान के बेटी अपना मेहनत से खेत के सजावत आ सँवार तिया- 'बइठे बइठान' बढ़ जा तिया आ सयान होके अपना पूरा गँवई-परिवेश के दर्द अपना में समेट ले तिया-

कहीं भीजे जौ गेहू कोठिला के धनवाँ
कहीं भीजे झाँपी झोरा ओढ़ना बिछौनवाँ
अँगना में भीजेला पथार के दउरिया ।
...
दरे-दरे बेल-बूटा दरे-दरे बिलुकी
अँधी कोठरिया में झोरा बिनाला ।
...
तोहरा कन्यादान के बहनवा बा हो बाबू जी।
केहू नाहीं आवे ई मेहनवा बा हो बाबू जी ।
एहिजा त जर तिया कोइना के दियरी
कवना भावे गाँवे किरसनवा बा हो बाबू जी।
...
फँड़वा में ढूँढ़ा ढूंढी. फुफुती में कचरी
जवरा के धइले, होई कपरा पर गठरी
अवते होई माई जो/कमइले होई बखरी

संवेदना के अइसन भीजल छुवन अपना बिम्ब का साथ एह गीतन में बा कि संदर्भ-चित्रन के मार्मिक रूप सामने आवते मन बेचैन हो उठऽता। गाँव के प्रति लगाव के अइसन मार्मिक कथन दुर्लभ बा, जवना में कवि गाँव से बिछोह के पीर-पसावत बा-

गोरुवो गोड़वा रोकेला, बछरुवो गोड़वा रोकेला।
कइसे जाईं जात खानी गोड़वो गोड़वा रोकेला।
गाँव गइले गाँव के धतुखो गोड़वा रोकेला।

सामान्य कथन से अलग हटि के कहल कवित्व आ वाग्विदग्धता के विशिष्ट बनावेला। संधिदतू का गीतन में कथन के एगो विशिष्ट अंदाज आ लोकज 'टोन' बा। सहज सोभाव का अनुरूप, संदर्भ-चित्रन आ प्रतीकन से लैस, नया उपमा से उजागर होत, उक्तियन का वक्रता से चमकत उनका भाषा के निठाह आ धारदार रूप के देखि के साफ समझ में आवऽता कि कवि क भाषा पर बहुत गहिर पकड़ बा-

कहाँ जइबऽ एकारी अन्हारी बारी घेरे ले
उल्टा पल्ला फेरेले बदरिया रहिया रोके ले ।
...
घर में ना केहू खाली घरवे पड़ल बा।
फटली न धरती तबहियों गड़ल बा
ऊँच-ऊँच खोरि भइली, नीच भइली बखरी।

बदलाव के संदर्भन के अतना सजीव अभिव्यक्ति संधिदूत के भाषिक रचाव में छिपल सृजनात्मकता के उजागर करऽता। उनका भाषा में एगो नया दीप्ति बा जवन उनका भाव-संवेदना के दीपित क देता। उक्ति वक्रता एह भाषा के धार बा-

नई बान ना सम्हरे/आँचर उधियाला ...
लाज बरे कुछऊ के कुछऊ कहाला ...

सिरफल का पतई पर कनइल मुस्काला।
...
टुटला बटाम अस कोट के इजतिया
रोसनी छोड़त आवे सुधि के बरतिया ।
...
डुबलो सवाद के इयाद परे तितिया ।

भाषा के वाजिब इस्तेमाल में कुच्छे जगह बा- कुछ गीतन में-जहाँ संधिदूत ढील परल बाड़े; ना त नया उपमा, नया चित्र, नया प्रयोग के परोसे (प्रस्तुतीकरण) में ऊ विशिष्ट बाड़न। गीत के रचाव आ ओकरा रूप-विन्यास पर उनकर कारीगरी सराहे जोग बा-

देवता घुमत बा उघार खोरी-खोरी
गोड़ तर फाटेला दरार चारुओरी।
...
अतना गड़ेलू बात अँतरा समाइ के
ठोरवन खोजेला पखेरू छितराइ के।
...
करिया सरिरिया/सुखाई भइली पोखरी
फाटि गइली कनई/ओराइ गइली मछरी।

गिहिथिन आ कलावन्त मेहरारू जइसे नया-नया रूप मे, नया-नया तरीका से घर संसार के सँवारे सजावेले; संधिदूत अपना गीत-संसार के भाव प्रवण, संवेदनात्मक क्षणन के सांस्कृतिक आ सृजनात्मक धरातल पर उरेहत बाड़े। छंद-विधान, लय, गीत, संगीतात्मकता आ कलात्मक सांकेतिकता का लिहाज से उनका गीतन के ई संग्रह बहुमूल्य बा। संधिदूत, लोकधुन-सोहर, कजरी आ बियाह आदि गीतन का 'फार्म' में बहुत असरदार आ मार्मिक अभिव्यंजना कइले बाड़न। एकर उदाहरण संकलन के गीत सं0 25, 52, 68, 69, 75, 77, 79 आदि में देखल जा सकेला। लोक-धुनन आ लोक-तर्ज पर त एह संग्रह में उनकर कुछ गजल बहुते जोरदार, मार्मिक आ असरदार बन गइल बाड़ी स।

संधिदूत का कविताई पर संक्षपे में कहल बहुत कठिन बा। कोशिश कइल जाव त इहे कहाई कि ऊ रचना-विधान का दिसाई सजग, उक्तियन में माहिर, कारीगरी में दक्ष, संवेदना आ अनुभूतियन से भींजल गीतकार बाड़न। जीयत-जागत गृहस्थ मानव के हास-विलास, नेह-छोहे, सुख-दुख, चिन्ता-फिकिर, बेचैनी आ सोच-संघर्ष के नया चितेरा आ ओकरा आत्म-अवलोकन के गायक बाड़न। उनका गीतन में करुणा के जल-धारा बा, 'अँजुरी भर असरा' आ 'अरघा भर आँसू' बा, सगुनवती दूब आ अँकुरल हरदी का सँगे अच्छत के लहरत धान बा। सभ्यता के बदलाव में फैशन उनका के चिउँटी काटऽता- शहर में रहत गँवई हिरोह बा, आ परिवेश से सहज लगाव बा। ऊ कहीं किसान का बेटी से ज्ञान-संस्कृति के खेती करावऽ ताड़न कहीं आधुनिक सीता से परदोष भुखवावत बाड़े। हर जगह उनकर आधुनिक दृष्टि बा-'एक्शन' के सही पकड़, संदर्भन के सार्थक उरेह बा आ बाटे अभिव्यक्ति के नया तेवर आ ठेठ अंदाज। 'एक कड़ी गीत के' भोजपुरी गीत-विधा का क्षेत्र में, अनुपम गीत-संग्रह बा। 卐卐

शंकर मुनि राय 'गड़बड़'

बिहारी परब सतुआन

सतुआन भोजपुरी संस्कृति के काल बोधक पर्व ह। हिन्दू पतरा में सौर मास के हिसाब से सुरूज जहिआ कर्क रेखा से दखिन के ओर जाले तहिये ई पर्व मनावल जाला। एहि दिन से खरमास (खर-मास) के भी समाप्ति मान लिहल जाला।

सतुआन के बहुत तरह से मनावल जाला, सामान्य रूप से आज के दिन जौ के सत्तू गरीब, असहाय लोगिन के दान करे के प्रचलन बा। आज के दिन लोग स्नान कवनों जलाशय भा पावन नदी गंगा में कइल जाला, पूजा आदि के बाद जौ के सत्तू, गुर, कच्चा आम के टिकोरा आदि गरीब लोगिन के दान कइल जाला आ अपना ईस्ट देवता, कुलदेवता, बरम बाबा आदि के चढ़ा के प्रसाद के रूप में ग्रहण कइल जाला। ई काल बोधक पर्व संस्कृति के सचेतना, मानव जीवन के उल्लास आ सामाजिक प्रेम प्रदान करेला।

सतुआन के वैज्ञानिक महत्व

आज सउंसे पूर्वांचल में सतुआनी के पर्व मनावल जाला। आजु के दिन भोजपुरिया लोग खाली सतुआ आ आम के टिकोरा के चटनी खाला। साथे-साथ कच्चा पियाज, हरियर मरिचा आ आचार भी रहेला। एह त्योहार के मनावे के पीछे के वैज्ञानिक कारण भी बा। इ खाली एगो परंपरे भर नइख। असल में जब गर्मी बढ़ जाला, आ लू चले लागेला तऽ इंसान के शरीर से पानी लगातार पसीना बन के निकले लागेला, तऽ इंसान के थकान होखे लागे ला।

रउआ जानते बानी भोजपुरिया मानस मेहनतकश होखेला। अइसन में सतुआ खइला से शरीर में पानी के कमी ना होखे देला, तनि-तनि देरी पर पियास लगावेला आ शरीर में पानी के मात्रा बनवले रहेला। अतने ना सतुआ शरीर के कई प्रकार के रोग में भी कारगर होखेला।

पाचन शक्ति के कमजोरी में जौ के सतुआ लाभदायक होखेला। एकरा में भरपूर प्रोटीन, लवण-पानी के मात्रा रहेला। कुल मिला के ई सतुआ एगो संपूर्ण, उपयोगी, सर्वप्रिय आ सस्ता भोजन हऽ जेकरा के अमीर-गरीब, राजा-रंक, बुढ़-पुरनिया, बाल-बच्चा सभे चाव से खाला। आजकाल्ह शूगर के मरीज लोग हर जगह मिली, ओह लोगिन खातिर सतुआ दवाई के दवाई आ भोजन के भोजन दूनों ह।

सतुआ खायें खातिर ढेर बरतन-बासन के भी जरुरत ना परेला। खेत-बधार में किसान-मजदूर लोग, गाड़ीवान लोग अपना गमछों में सतुआ सान लेला। पहिले जब पैदल बारात जाता रहे तब बाराती लोग बोला में भर के सतुआ ले जाते रहे। राह में कतहूं पड़ाव रहते रहे, एके धोती पर दस-पांच लोग के सतुआ सनातन रहे आ लोग बईठ के, हथेली पर सतुआ के लोंदा लेके लोग अचार आ पियाज संगे खा लेत रहे।

असली सतुआ जौ के ही होखेला बाकि केराई, मकई, मटर, चना, तीसी, खेसारी, आ रहर मिलावे से एकर स्वाद आ गुणवत्ता दूनो बढ़ जाला। सतुआ के घोर के पीलय भी जाला, आ एकरा के सान के भी खाइल जाला। दू मिनट में मैगी खाए वाला पीढ़ी के इ जान के अचरज होई की सतुआ साने में मिनटों ना लागेला। ना आगी चाही ना बरतन। गमछा बिछाई पानी डाली आ चुटकी भर नून मिलाईं राउर सतुआ तइयार.. रउआ सभे के सतुआनी के बधाई। कम से कम आज तऽ सतुआ सानी सभे!

घेंवड़ा: सतुआ में देसी घीव आ गूर मिलाके मीठा सतुआ बनावल जाला। एकरा के घेंवड़ा कहल जाला। जेकरा घरे लइका लोग सतुआ ना खात होखे ऊ लोग के चाहीं कि अपना-अपना लयिकन के घेंवड़ा खिलाईं। 卐卐

पुस्तक समीक्षा

आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

कविवर चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह: लोक जीवन के चितकार

सच्चा कवि शब्दन के प्राणवायु से जीएला। ओकरा खातिर शब्द साध्य होला एसे कि ऊ शब्द में जिनगी तलासेला, ओकरा असलियत के पड़ताल करेला। जीवन के लहर-लहर प ऊ सवार होके जन-मन में जीवित रहे के विश्वास पैदा करेला। रचना करतखा कवि के भीतर जीवन के अनुभव जब मथे लागेला तब शब्दे के जरिए कवि ओकरा के कलात्मक रूप में आकार देला-व्यक्ति आ समाज के जीवन्त मूरति गढ़ेला। ओकरा शब्दन बीच लय में समूचा जीवन के इयादगारी, जीए के विश्वास गूंजेला। आदमी के जवन असल रूप रंग बा ओकरा के आ ओकरा कइसन होखे के चाहीं दूनो के लचीला कवनो धातु जइसन कविता के आँच में गला के ओकर दमकत नया रूप शब्दन के साँचा में ढारि देला। साँचा कवि के शब्दन के आत्मा के फैलाव दुपहर के चौड़ा पाट वाली नदी जइसन होला, जहवाँ नदी के बहाव लउके ना बाकी ऊ अपना दूनो किनार प बहत नजर आवेले। कवि के-जवना कवि के शब्दन में पढ़ेवाला बन्हा जाय आ बन्हिइयो के मुक्त रहे-मुक्त होइयो के बन्हाइल रहे उहे सफल कवि मानल जाला। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' अइसन शब्द के पारदसिद्ध कवि रहीं। एह पारद-शोधित शब्दन से रचिइल सोरठा के सवाँची सभे-

अनुभव साथे ज्ञान, पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले।
आरोही के ध्यान, अपना रचनन पर रहे।।

अन्तिम मिले मुकाम, पावन गंगा धार में।
कर मनवाँ ऊ काम, करे अपावन धार ना।।
(अन्तहीन, पृष्ठ - 2)

कवि आरोही जी के जीवन के मरम के नगीच पहुँच बना लेवे के गजब के कूवत बा। उहां के सोरठन के पढ़त-निरेखत ओकरा में छिपल यथार्थ के गझिन अनुभव अइसन कसिके बान्हि लेला कि पढ़वइया के हृदय आ प्राण ओ अनुभूति शब्दन के परे हो जाले।

अपने पूत जवान, कन्धा ऊपर बा चढ़ल।
'आरोही' भगवान, काहे अन्धा हो गइल।।
(अन्तहीन, पृष्ठ - 3)

कवि आरोही के सोरठा के संवेदना के इलाका खाली धूप-छाँह के रंग वाला नइखे बलुक महीन रंग-रेखा आ रेशम के बनावट-बुनावट के अइसन धूप आ लूको वाला बा जवन तावे-तपावेला, झुलसावेला आ बेचैन मन में चिहार पैदा करे वाला बा। आरोही अपना सोरठा के रचाव में जवना अन्हार के बरनन करत बानी ऊ अन्हारो पारदर्शी आ तरल बा, जवन पढ़ते-पढ़त पाठक के अन्दर के बहुत समय के सिंकुरल-

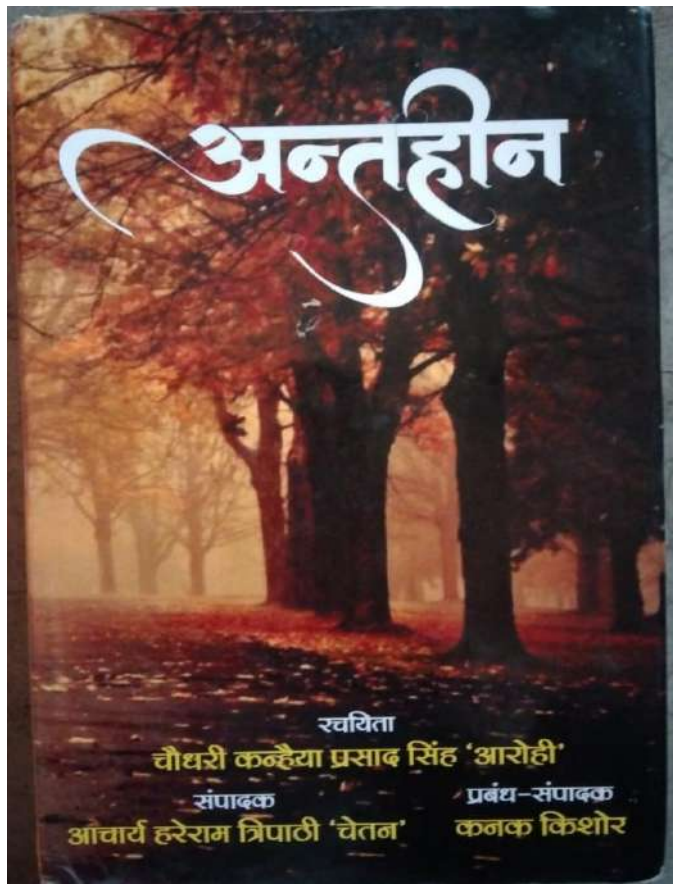

किताब: अन्तहीन
रचयिता: चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही'
संपादक: आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'
प्रबंध संपादक: कनक किशोर
विधा: भोजपुरी सोरठा अउर दोहा संग्रह
प्रकाशक: सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
मूल्य: रूपए 1100

जमकल,पसीजे लागत बा, पसरि के बहे खातिर बेचैन हो जात बा-

आपुस में तकरार, जरा-जरा से बात पर।
चौड़ा करे दरार, नर-नारी के बीच में।।

आरोही अँधियार, भटक रहल मझधार में।
बिना पाल पतवार, बाबू नजर किनार पर।।

आरोही असहाय, देखि रहल आकास के।
गइल रोप मुरझाय, भइल अंधेरा सामने।।
(अन्तहीन, पृष्ठ - 7)

तनाव-चाहे ऊ आर्थिक होखे भा सामाजिक, व्यक्तिगत होखे भा पारिवारिक, देश के होखे चाहे दुनिया के-उभचुभात, कसमसात एगो मानसिक दशा हउवे, जवना में आदमी के मन में सदई एगो दुविधा, एक तरह के रगरा आ तनाव के ताँत तनल रहेला। जीवन के-आदमी के जीवन के-ई जाँचल-सवाचल साँच हऽ कि व्यक्ति के एगो चाह एक ओरि पगहा तुरावला तो दोसरकी चाहना ओकरा उलुटा दिशा में खींचिके ले गइल चाहेले। आजु पुरान सामाजिक आ गाँवक मूल्य टूट रहल बाड़े सऽ, नया-नया मान्यता आ मूल्य के घुसपैठ से जीवन में तनाव बा। आदमी ना सूप से फटके लायक रहि गइल बा आ ना चलनि से चाले लायक। जवने सोझा लउकत बा ओकरे ओसावे के धमा चौकड़ी चारो ओरि मचल बा। कवि आरोही के नजरि चौकन्ना होके सभ कुछ देखि रहल बिया-

धन-दौलत आ प्यार, आरोही बाँटत चले।
तबहूं दे अंगार, लोभ-लाभ बस आदमी।।

धरती से असमान, सब सपना भटकत रहल।
मनवाँ लहूलुहान, बेइमान मौसम भइल।।

धावे नंगे पांव, भूखा रेगिस्तान में।
जोहे लागे छांव, आरोही के काव्य में।।

धूप-छाँह के खेल, जीवन भर होखत रहे।
कबो लड़ाई मेल, आरोही दिन-रात अस।।

नया करे के चाह, बार-बार कोंचत रहे।
कहवाँ मिली पनाह, नरभक्षी सगरो भरल।।
(अन्तहीन, पृष्ठ - 43)

कवि चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही'जी नयका जुग के आदमी के नया चाहना के परतच्छ अनुभव से हासिल जीवन के साँच के आँकि के आ वर्तमान समय के उबड़-खाबड़ हालत आ नीक-जबून संक्रमण के निरिख-परख, चीख-पुकार के, अकेलापन के हतासा आ टूटत, तितिर-बितिर होखत सामाजिक आ पारिवारिक मूल्यन के संगे-संगे राजनीति के दाँव -पेंच के डरावना चित्रो खूबी से उकेरले बानी। बाजारवाद आ पूंजी के सियाहीशोख डरावना रूप के सटीक नाप-जोख भइल बा सोरठा हजारा में-

जाल बिछावल जात, पूंजीवाला रात- दिन।
बद से बद हालात, मुश्किल से मुश्किल भइल।।

लाचारी भरपूर, आरोही बा भूखमरी।
करे राह पुरनूर, भरल ना भीतर हौसला।।
(अन्तहीन, पृष्ठ - 109- 145)

जिनगी के समरस रूप मनुष्य के प्रेम-प्रीति के गहराई से समझे में उजागर होला। प्रेम जीवन से, पलक के फरकन आ प्राण के एक-एक तरंगन, साँसन के जनम आ मउवत के पसार में प्रेम घुलनशील पदार्थ जइसन समरस बा आ सौन्दर्य के कोमल डोर में बन्हाइल बा। मनुष्य के चेतना के एकदम नगीच आ जरूरी बनिके जिनगी के हर उदम आ उधम में ई पसरल बा। एह गहिड़ जीवन दर्शन के कवि आरोही जी नीके तरी समुझले बानी -

फरे फूले विश्वास, दर्द - राह के पार कर।
जिंदा रहे सुबास, सम्बन्धन के बीच में।।

सीतल सुखद बतास, अपनापन के ताजगी।
जीत देत भा हार, खेलकूद प्रतियोगिता।।
(अन्तहीन, पृष्ठ - 193)

छीनि-झपटि के खाइल पशुता हउवे, बिगरल जीवन के लक्षण हऽ आ मिल-बेवहरिके, बाँटि -चोंटि के खाइल संस्कृति कहाले। संस्कृतिए से विचार, सुभाव,आदत बनेला आ समाज में जाके फैलेला। पावल आ त्यागल संस्कृति के मंगलमय देन हऽ। पावल, सफाई कइल, उपजोग कइल आ बढ़ावल संस्कृति के दिहल मनुष्य खातिर बायन हउवे। संस्कृति मनुष्य के जिनगी के दर्शन हऽ जवन प्रकृति के सँगे जुड़िके विकसित होले। संस्कृति आ प्रकृति दूनो आदमी के आस्था के बोध करावले। इहे वजह बा कि रचनाकार/कवि प्रकृति के समुझे के, संघर्ष करेके, मनुष्य बने के, सुख से जिए, आनंद पावे के सुत्र खोजत रहेला। मनुष्य के मनुष्य के दिशाई, समाज के दिशाई, प्रकृति के दिशाई कवन आ कइसन सोंच होखे के चाहीं,का मूल्य होखे के चाहीं,अपना देश प्रति का कर्तव्य होखे के चाहीं,ई सब संस्कृति के रूप ह। कविवर आरोही जी अइसन रूप-रंग वाली संस्कृति आ प्रकृति के कई-कई रूप खूब पूजले बानी, साधना कइले बानी-

झरल गाँछ से पात, आम आदमी के मरल।
हिमगिरि गिरल बुझात, खास आदमी के मरे।।

पवन लगावे जोर, आसमान छूए बदे।
दुर्बल दुर्बा सोर, त्यागे कबो जमीन ना।।

पानी फूलो - पात, आरोही मारक हवा।
बिना पवन उधियात, धरती शेष न पांव तर।।

पानी भीतर फूल, मूल अछूता बिम्ब से।
मानवता अनुकूल, आरोही मोहक सरस।।

पानी, हवा, जमीन, आपन अधिका हो सके।
तनल रहे संगीन, इहाँ - उहाँ चारो तरफ।।

कवि चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' रचित अन्तहीन के सोरठा मनुष्य के अनमोल फूलन के गूछा बा जवन आदमी-आदमी के उत्थान में सहजोगी बनत बा, भोजपुरिया समाज के पल- पल के साँच के, पानी, पत्ता, पहाड़ आ हवा के मुँह से कहवा देता। किसान के कचनार धरती के माँग सेनुर-कुंकुम लगावता। अन्तहीन के सोरठा के पगडंडी से सैकड़न गलियारा के राह से चलत कवि आरोही जी संस्कृति आ संस्कार के चउका पूरी के भोजपुरी साहित्य के कलश स्थापित करत बाड़े। आजु जब बेचैन समय के चाह के लाम आ लाल जीभि लपलपा रहल बिया, चिन्ता-फिकिर से कँपकँपात आदमी जब कुछुओ नकारे आ हँकारे के हालत में नइखे, अइसन समम में परिपक्व रचनाकार चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' के 'अन्तहीन'- सोरठन के सिद्ध रसायन व्यक्ति के, परिवार आ समूचा समाज के शुभ, सुन्दर आ कोमल सींचे-पटावे खातिर कमर कसले बा आ जीवन के जड़ता के, मूल्यहीनता के नोंचि फेंके के तत्पर बा। 卐卐

पुस्तक समीक्षा

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव

रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल' के निबन्ध संग्रह

लोक देवता कारिख नन्द लाल

रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल' भोजपुरी के बहुसर्जनशील लेखक हवें। विकल जी के प्रतिभा बहुआयामी आ बहुवर्णी रहल बा। उनकर कलम सतत क्रियाशील रहल बा। अपना विपुल लेखन से ऊ भोजपुरी साहित्य के बहुत समृद्ध कइले बाड़न। इनकर बाईस गो पुस्तक प्रकाशित भइल बा। उ जवना भाषा आ सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में जीयलें, ओकरा हर पक्ष के बहुते बारीकी से साहित्य का हर विधा में बहुत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कइले बाड़न, चाहे कविता, होखे भा निबन्ध, संस्मरण भा उपन्यास। 'लोक देवता कारिख नंदलाल' इनकर उनइसवां कृति ह।

पुस्तक के शीर्षक ही चौकावे वाला आ उत्सुकता जगावे वाला बा। ई पुस्तक 'कारिख' के बारे में बा जे लोकायत संस्कृति के लोक देवता हवें। लोक देवता वस्तुतः धरती पर जीये वाला लोग ही रहे जे अपना विमल चरित्र आ अमर कृतित्त्व के छाप लोकमानस पर छोड़ले बा। उनकर लोक मंगलकारी काम लोकजीवन का धारा में घुलमिल गइल बा। ई लोक देवी-देवता लोकमानस के शक्ति, साहस, सम्बल आ विश्वास प्रदान करेला। ई देवी-देवता लोग धरती, सूरज, आकाश, हवा, पानी जइसन प्राकृतिक शक्तिअन के खोजकर्ता और प्रयोगकर्त्ता रहल बा। एह देवी-देवतन में प्रथम अनुसंधानक 'कारिक' या 'कारिख' नामक लोक देवता रहल। डॉ० रामप्रवेश सिंह का अनुसार, 'कारिखे पहिला व्यक्ति रहलें, जे सुर-संस्कृति का खिलाफ 'पुर-संस्कृति' के नींव डललें। उ ज्योतिर्वाद के पहिला प्रवर्तक रहस, जे ज्योति के काल आ स्थानवाचक मान के प्रकाश आ ऊर्जा के प्रतीक स्वरूप सूर्य-पूजा के परम्परा के शुरूआत कइलें।

पुर-संस्कृति गैर-वैदिक आ लौकिक संस्कृति ह। एकरा के द्रविड़ लोगन के संस्कृति बतावल गइल बा। एह संस्कृति के प्रवर्तक द्रविड़ बालक कारिख रहलें जेकरा के बाद में लोक में प्रचलित लोक देवता मानल जा रहल बा। उत्तर भारतो में इनकरा के कुल देवता और ग्राम देवता के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त बा। लोक के दू गो अर्थ होला-जन-समाज आ इहलोक। लोकायत के अर्थ भइल लोक-प्रचलित आ लोक से ग्रहण कइल। लोकायत धर्म के सही आ सटीक अर्थ होला अइसन धर्म जे ब्राह्मण आ श्रमण, वाम आ दक्षिण दुनु परम्परा के अपना में समेटले होखे।

विकल जी की आलोच्य पुस्तक 'कारिख नन्दलाल' लोक देवता 'कारिख' के अलौकिक चरित्र आ कृतत्व पर आधारित बा। एह लोक देवता के रंग आ काम भगवान कृष्ण का वर्ण और कृतित्व से मिलला का कारण कदाचित लोक देवता 'कारिख' के 'कारिख

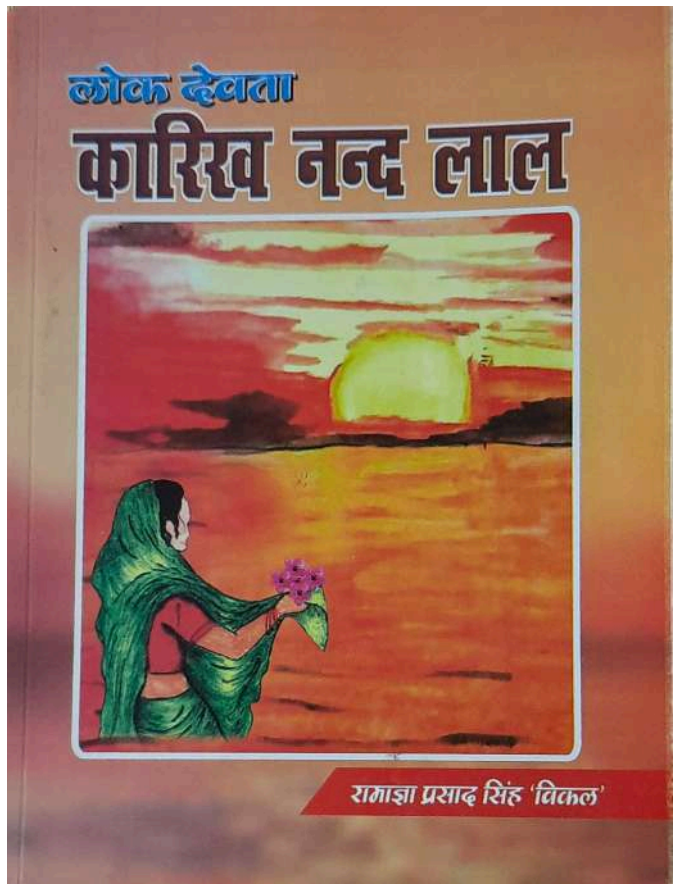

किताब: लोक देवता कारिख नन्द लाल
लेखक: रामाज्ञा प्रसाद सिंह 'विकल'
विधा: गद्य (निबन्ध-संग्रह)
प्रकाशन: राजर्षि प्रकाशन
प्रकाशन वर्ष : 2017
मूल्य (सजिल्द): 150 रुपया

नन्दलाल' के रूप में अभिहीत कइल गइल बा।

विकल अपना पुस्तक के भूमिका खुदे लिखले बाड़न आ एकर बहुते काव्यात्मक शीर्षक देले बाड़न, 'अनुराग के रंग'। विकल अपना भूमिका में एह लोकदेवता बारे में कहत बाड़न, "निराशा का घुप्प अन्हरिया के कोख से आशामय जोत के जनम होखेला। एही आदिम संस्कार में आत्म-चेतना के ज्योति हवें कारिख बाबू जेकरा से जग उजियार भइल। अपुरा (अपूर्वा) का कोख से जनमल कारिख दीन-हीन जन-चेतना के लोक के तोख भरोस रहलें। एकरा अलावा पुस्तक में पांच गो अध्याय बा। अंतिम अध्याय में कारिख देवता से संबंधित गीत बारी सं, जेकर संकलन कतना श्रम-साध्य रहल होई ई अनुमान के विषय बा। पहिला अध्याय, 'कारिख-कथा-सार' में कारिख के कथा बा। दुसरका अध्याय, 'साँच का संभावना के तलाश आ नामकरण का संबंध में' में कारिख देवता के संबंध में सत्य का संभावना के पड़ताल बा आ नामकरण का सम्बन्ध में खोजपूर्ण तथ्य प्रस्तुत कइल गइल बा। तीसर का अध्याय, 'कारिख आ कृष्ण कथा में समता' में कारिख आ कृष्ण का कथा में समता के अंतर्वर्ती सूत्र के तलाश के प्रयास बा। चउथा अध्याय, 'लोक देवता कारिख के पंचरोजा पूजा-विधि' में लोक देवता कारिख के पूजा-विधि के विस्तार से वर्णन बा।

ई पुस्तक से गुजरला का बाद हमारा बुझाता कि हम विकल जीके एह कृति के साहित्य के पुराविद कहीं त कवनो अतिशयोक्ति ना होई। जइसे पुरातत्त्ववेत्ता दबे पांव जमीन के नीचे चलत ओझल अतीत के अनावृत करेला वइसहीं विकल कारिख लोक देवता के जीवन आ उनकर अद्भुत आ अलौकिक कृतित्व के अन्हरिया से बाहर निकाले के बहुते बड़ काम कइलें बाड़न। एह पुस्तक के साहित्य के पुरातत्व-बोध का शुरूआत के रूप में देखल जा सकता।

लोकायत में जिज्ञासा, रहस्यमयता, सौंदर्य, अलौकिकता आ आदिम भय समाविष्ट रहेला। एह वजह से लोक देवता के कृतत्त्व तर्क बुद्धि का कसौटी पर कसला पर अलौकिक आ अविश्वसनीय प्रतीत होला लेकिन लोक देवता लोक आस्था से जुड़ल होला, जहां तर्क के कवनो गुंजाइश ना होखे।

एह पुस्तक में देहल गइल दू गो स्थापना से हम सहमत नइखीं हो पावत। पहिला ई कि लोकायत परम्परा बीज रूप में वैदिक परंपरा ह आ दुसर का ई कि कारिख आग्नेय संस्कृति के उद्भावक रहस। हम ई मानतानी कि वैदिक परम्परा लोकायत के अंदर बीज रूप में विद्यमान रहे, जे अंकुरित होके स्वतंत्र सत्ता ग्रहण कइलस। वैदिक परंपरा लोकायत परम्परा के विकसित रूप ह। आग्नेय प्रजाति द्रविड़ प्रजाति से बिल्कुल भिन्न ह। कारिख देवता के द्रविड़ बालक मान लेला का बाद उनकरा के आग्नेय संस्कृति के उद्भावक मानल कहीं से भी संगत नइखे कहल जा सकत।

अंतिम अध्याय में कारिख-अनुराग गीत में लोक बिश्वास से ओतप्रोत लोकगंधी गीत बाड़ी स। एह गीतन में परम्परा का अनुसार सारदा मैया के स्तुति बा, कारिख के जनम के वर्णन बा, उनकर बचपन के वर्णन आ उनकर देस-भ्रमण आ उनकरा लीला के वर्णन बा। कुछ पारम्परिक लोक गीतन में कुछ हेर-फेर करके कुछ गीत लिखल बुझाता, जइसे- "चकुनिया हथिया हो बाबा दरद अमरिया हो/ताही चढ़ि आवे सुरुज मेहमनवा हो/', 'कवना बनवा रहलु कोइलिया कवन फल हो खा/रने बने रहलु कोइलिया अनूप फल हो खा। 'छोटी- मोटी यमुनी हो नदिया अगम बहे हो धारवा/ताही पइसी दीनानाथ करेले हो असनानवाँ।'

एह शोधपूर्ण कृति खातिर हम विकल जी के भोजपुरी साहित्य के कोलम्बस कहे के चाहेब। 卐卐

गजल

हमरा चुप्पी के मतलब लगावल गइल
हमके मगरूर बहुते बतावल गइल

ई लकम तऽ विरासत में बाटे मिलल
कबहूँ रोआँ ना हमसे गिरावल गइल

नइखे एहसास, जज्बात, धड़कन जहाँ
जख्म उहँवाँ अनेरे देखावल गइल

दर्द अल्फाज में ढल गइल, ओसे का
गीत पत्थर के काहें सुनावल गइल

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

डॉ. प्रमोद तिवारी

भोजपुरी के पहिला कहानी संग्रह 'जेहल क सनदि'

भोजपुरी रचनाशीलता के शुरूआते में दुलर्भ ऊंचाई देबेवाला अवध बिहारी सुमन के जनम 14.1.1921 के बक्सर के मगरांव गांव में भइल रहे। स्वामी सहजानंद सरस्वती के आह्वान प स्वतंत्रता आंदोलन आ किसान आंदोलन के समर में कूद पड़ले।

सुभाष चंद्र बोस, आचार्य कृपलानी, राहुल सांकृत्यायन, लोहिया, नागार्जुन, उदय नारायण तिवारी आदि के साथे काम कइले आ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिहला के कारण आरा, भागलपुर, चाईबासा आ बक्सर के जेल में कैदी के जीवन बितवले।

भोजपुरी के पहिला कहानी संग्रह 'जेहल क सनदि' 1948 में छपल। एही साल मकरन्द नांव के काव्य संग्रह छपल आ 'कृषक' नांव से हिंदी में पत्रिका के संपादन कइले। 1954 में सुमन जी संन्यास ले लिहले आ दंड ग्रहण क के दंडिस्वामी विमलानंद सरस्वती बन गइले। शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित 10 गो सम्प्रदाय जवना के 'दशनामी संन्यासी' कहल जाला, ओही में से एगो सरस्वती कहाला जवना के अवध बिहारी जी स्वीकार कइले। सरस्वती बनला के बाद उहां के दंड धारण कइनीं, गेरुआ कपड़ा पहिननीं, सिर मुंड़वा के, रुद्राक्ष के माला पहिन के, लीलार प तीन गो क्षैतिज रेखा बना के जवन त्रिशूल के प्रतीक होला आ एगो बिन्दी लगा के जवन शिवलिंग के प्रतीक होला, अवध बिहारी जी दंडीस्वामी विमलानंद सरस्वती बन गइनीं। नीयम बा कि संन्यास के साथे नया नांव दीहल जाला, नांव के आगे स्वामी, नाम के साथे आनंद जोड़ल जाला आ अंत में संप्रदाय के नांव गिरी, पुरी, सरस्वती आदि जोड़ल जाला। उनकर ठिकाना बनल राजगुरुमठ, शिवालाघाट, वाराणसी। एही जगही प 9-7-2008 के उहां के शरीर छोड़नीं।

भोजपुरी के पहिलका कहानी संग्रह 'जेहल कऽ सनदि' 1948 में छप के आइल। साफ बा कि एह कहानियन के रचना कई साल पहिले भइल होखी।

90-95 पेज के ई संग्रह बा जवना में 10 गो कहानी बाड़ी

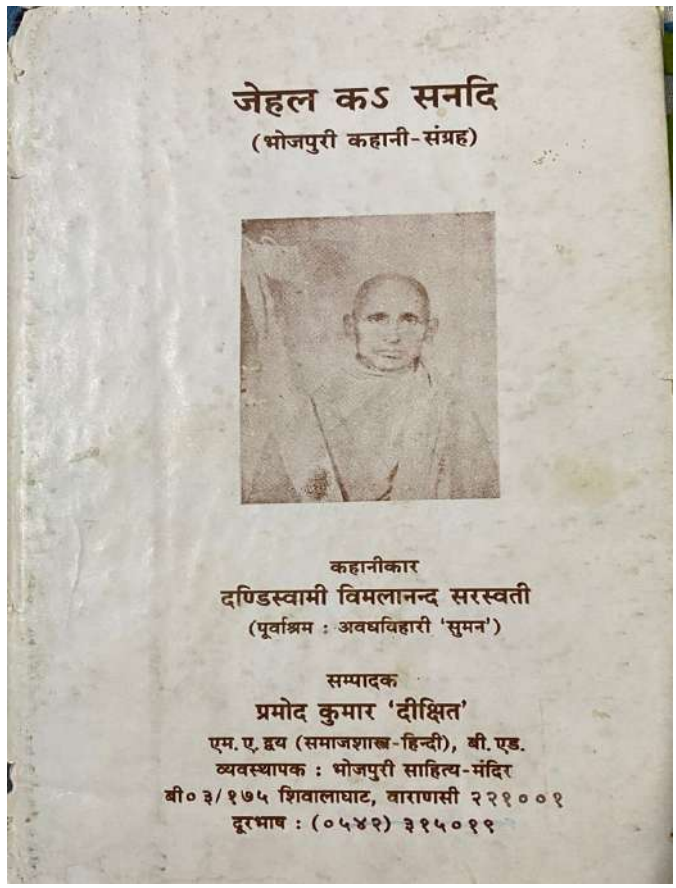

जेहल कऽ सनदि

(भोजपुरी कहानी-संग्रह)

कहानीकार

दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती

(पूर्वाश्रम : अवधविहारी 'सुमन')

सम्पादक

प्रमोद कुमार 'दीक्षित'

एम. ए. द्वय (समाजशास्त्र-हिन्दी), बी. एड.

व्यवस्थापक : भोजपुरी साहित्य-मंदिर

बी० ३/१७५ शिवालाघाट, वाराणसी २२१००१

दूरभाष : (०५४२) ३१५०१९

किताब: जेहल क सनदि
लेखक: अवध बिहारी सुमन
विधा: कहानी
प्रकाशन: भोजपुरी साहित्य मंदिर
प्रकाशन वर्ष: 2005
पृष्ठ संख्या: 96
मूल्य: 50 रुपये

सऽ बाकिर दसो कहानी जवना तेवर आ ऊंचाई पऽ खाड़ बाड़ी सऽ ऊ बेजोड़ बा। एह कहानियन में भोजपुरी के जइसन टांठ रंग बा आ लेखक जइसन साफ, खुला आ ठेठ पक्षधरता के साथे आपन बात रखले बाड़न ऊ एह संग्रह के बहुते खास बना रहल बा। भोजपुरी, किसान मजूर आ मेहनत करेवाला लोगन के भाषा हिय आ ई संग्रह एही लोग के दारूण कहानी सुना रहल बा। एह संग्रह में एक ओर मजदूरन के सम्मान आ किसान के भगवान बता के ओकर जय-जयकार कइल गइल बा तऽ दोसरा ओर खून चूसे वाला मलिकार लोगन के मजगर ढंग से खबर लीहल गइल बा। एह संग्रह में गरीबी आ भूखमरी से तड़पत, जांगर होखला के बादो बेरोजगारी के दंश झेलत अनगिनत लोग के अइसन कहानी बाड़ी सऽ जवना के पढ़ला के बाद देंह में बेचैनी लेस दिही। कान में अइसन हाहाकार आ चित्कार गूंजे लागी कि कहानी पढ़ला के बाद खाना पानी ना रुची।

जमीनदारन के अत आ जुलुम के एगो उदाहरण 'किसान-भगवान' कहानी से देखल जाव। जमींदार के बिलायती कुकुरन खातिर कुबेर अहिर के दूध पहुंचावे के आदेश दीहल गइल रहे। एक बेर कुबेर भगत के घरे चार गो पाहुन आ गइले, एह से ऊ दूध ना पहुंचा पवले। तहसीलदार साहेब अपना पियादा बसगित सिंह के भेज देले जिनका से कुबेर हथजोड़िया कइले कि 'सरकार हमरा घरे चार चार गो पाहुन जुटि गइल रहलनि हंऽ। अब काल्हि ले जाई।' बदला में जवाब मिलल-'तोहरा छोकड़ि का बांस धासों, तोहरा ई ना मालुम रहल कि कुक्कुर बेमार परल बा। ओकर दवाई होति बा, तूं बेमारी में दूध बंद कई दिहले हऽ। हीत-पाहुन आइलि रहलनि हंऽ सऽ त अपना लड़कियन के काहे ना दुहले हऽ? ऊहो तऽ बियाइले बाड़ी सऽ।' एह बात से गुस्साइल कुबेर जब बाबू साहेब के जवाब दे दीहलन आ जबान संभारे के कह दीहलन तऽ आफत आ गइल। आठ गो जवान लाठी भाला के साथे भेजल गइले सऽ, ऊ पहिले कुबेर के भर हीक पीटले सऽ आ मुसुक बांध के तहसीलदार देवनाथ सिंह के सोझा चहुंपा देहलन सऽ। पीपर में बान्हल कुबेर पर तहसीलदार टूट पड़लन-'का रे साला, माधड़चोद, सोरहों आना सनकि गइल बाड़े, तोरा ई पता बा कि ना, जे जेकरा सनक चढ़े ला ओह असामी के टेकुवा नियर सोझ करेवाला हमहीं हईऽ। अबे जमींदारी उठलि नंइखे। तोहरी जे काहू का बांस धासों जमींदारी त देरि से उठी एकरा ले पहिलहीं हम तोहन लोग के एह दुनियां से उठाई देब।'(पन्ना- 55)

एतने ना तहसीलदार नमक मीर्च लगा के रसिक जमींदार के कुबेर के नाफरमानी बतवला के साथहीं इहो बतवलस कि एकरा दूई गो बड़ा सुघर लइकी बाड़ी सऽ। उन्हन का रूप का आगा पतुरिया झूठ बाड़ी सऽ। परिणाम ई भइल कि ओही राती लइकिन के मुंह में लुगा कोंचि के भाला से जान मारि देबे कऽ धमकी देत उनुका आगा पहुंचा दीहल गइल।

ई चित्रण आ भाषा भोजपुरी के पहिलका कहानी संग्रह के ह। किसानन के बारे में लेखक के विचार एकदम साफ बा- 'किसान मजूर पिरिथिमी कऽ सेसनाग ठहरलन। इनहीं का पीठि पर दुनियां ठहरलि बा। जहिया ई सेसनाग करवट बदलिहन ओह दिन दुनियां में परलय हो जाई। किसान दुनिया के बासमीत- मलाई खियाई के अपने भूखे-लंगटे रहत बाड़न। तोहन लोग एगो दधीचि का बारे में सुनि के अचरज करत बाडऽ जा, एइजा तऽ देस कऽ करोड़ों किसान मजूर दधीचि ले बढ़ि के बाड़न।'

अइसन अनेकन उद्धरण से ई किताब भरल बिया। जवना यथारथवाद के हिंदी में खूब चर्चा होला ओकर साफ रूप एह संग्रह में लउकत बा। दफा 302, आतमघात, मंवनी बाबा जइसन कहानियन में समाज के कुरुप चेहरा साफ लउकत बा। मंवनी बाबा कहानी में साधु आ पुजारी के ढोंग के बेनकाब कइल गइल बा तऽ 'कतवारू दादा' में तीन गो मेहरारू लोग के घर में होखला के बादो पइसा के बल पऽ एगो बारह बरिस के लइकी के जिनगी खराब करेवाला धनपशु के वर्णन बा। 'मलिकार' कहानी अपनहीं दयाद के धोखाबाजी आ आंख के शरम के मरे के कहानी हऽ। 'चउर कऽ पूजा' कहानी दू गो प्रेमी के आत्मीय लगाव के कहानी हऽ जवन समाज के रूढ़िवाद के भेंट चढ़ गइलन सऽ। झूठा इज्जत के नांव पऽ लइका के पइसा दे के सुंदर बंसुरी बजावेवाला अकलू के गर्दन कटवा दीहल जात बा आ जइसहीं ई खबर उनुका प्रेमिका देवकली के मिलत बा उहो नदी में कूद के आपन जान दे देत बाड़ी। बाद में उनुकर जान लेबेवाला इहे समाज अकलू बाबा आ देवकालो सती के नांव पऽ चउर बांधत बा, पूजा करत बा आ उहां मेला लगावत बा।

जेहल कऽ सनदि में गरीबी, बेकारी के जइसन भयावह चित्रण कइल गइल बा ऊ बहुत कम देखे के मिलल बा। ऊ कवन सोच रहे जवन अवधबिहारी जी के करेजा में अइसन टीस भर देले रहे कि गरीब, मजदूर आ मजबूर के अलावा उनुका के कुछ अउर लउकते ना रहे। आजादी के सूरज जवना घरी उगे के तइयारी करत रहे, जब लाली झलकत रहे ओह घरी अइसन घनघोर अन्हार के चित्रण करे के जरूरत काहें पड़ल? कांग्रेसी लोग के एतना कठोर बात लेखक काहें सुनावत बाड़न। जवन मोहभंग हिन्दीयो के साहित्यकार लोग के 1960-70 में लउकत बा ओकर वर्णन अवध बिहारी जी आजादी से पहिलहीं क के रख देत बाड़न।

संग्रह के जादातर कहानी अन्हार आ निराशा के कथा सुना रहल बाड़ी सऽ, खाली एगो कहानी 'जेहल कऽ सनदि' में लेखक, कांग्रेस के उमेदवार सोभा तिवारी के किसान सभा के उमेदवार बनवारी सिंह से हारत देखवले बाड़े आ आखिर में कहले बाड़े कि 'जेहल कऽ सनदि बेकार हो गइलि। अब जनता सजग हो चुकलि रहे।' साहित्यकार कबहूं आस ना छोड़े, एही बात के पहचान हऽ ई कहानी। 卐卐

पुस्तक समीक्षा

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

सुरता के पथार: एगो यादगार संस्मरण

भोजपुरी में गद्य के अपेक्षा कविता बहुते लिखाइल बा आ परम्परागत गीत, दोहा, रुबाई, हाइकु आ सॉनेट तक के किताबन के लगातार प्रकाशन हो रहल बा। एने गद्य में कहानी, लघुकथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी आदि लिखे खातिर भोजपुरी के साहित्यकार लोग जीव जान से लागल बा, बाकिर आत्मकथा माने आत्म-संस्मरण लिखे के ओर भोजपुरी के गद्यकार लोग के ध्यान लगभग नइखे गइल। अइसे कवनो दिवंगत भा जीयत भोजपुरी साहित्यकार पर लिखे के क्रम में ओकरा से जुड़ल संस्मरण आ जाला, जवना के आंशिक रूप में आत्म-संस्मरण मानल जा सकेला। एने हाल में डॉ० रंजन विकास के 'फेर ना भेंटाई ऊ पचरुखिया' आ डॉ० चंद्रेश्वर के 'हमार गाँव' आत्म-संस्मरण के पुस्तक का प्रकाशन के बारे में जान के एह दिशा में बढ़त डेग के पता चलत बा आ आगे खातिर कुछ उमेदो जागत बा। "एही उमेद के जगआवत एही साल कनक किशोर का संपादन में 41गो आत्मकथाकारन के 327 पृष्ठन के एगो दमदार संकलन "राम कहानी आपन-आपन" प्रकाश में आइल ह, जवन अपना ढंग के अनूठा आ ऐतिहासिक अवदान बा।"

भोजपुरी साहित्य में आत्म-संस्मरण का पुस्तक के रूप में पहिलका प्रकाशन ह शारदानन्द प्रसाद जी के 'सुरता के पथार', जवन सन 2002 में भोजपुरी संस्थान, पटना से प्रकाशित भइल। एह पुस्तक में चालीस गो आत्म-संस्मरणात्मक निबंध संगृहीत बाड़े सन, जवना में शारदा बाबू के लइकाई के दिल दहलावे वाली करुण कथा, छात्र-जीवन के कष्टमय समय, अनेक विघ्न-बाधा पार करत बी०कॉम, डिप-ईन-एड० तक के पढ़ाई आ अपना हित-नात, शिक्षक साथी, पास-पड़ोस से जुड़ल तमाम घटनन के बहुत मार्मिक आ मनोहारी चित्रण एह पुस्तक में देखे के मिलत बा।

एह पुस्तक के बारे में पाण्डेय कपिल जी 'भूमिका' में लिखले बानी– प्रस्तुत ग्रंथ 'सुरता के पथार' शारदानन्द प्रसाद के आत्म-संस्मरण ह। भोजपुरी में आत्म-संस्मरण बहुते कम लिखाइल बा, आ जे भी लिखाइल बा, छोट-मोट लेखे के रूप में लिखाइल बा। हमरा जानते 'सुरता के पथार' पुस्तक रूप में भोजपुरी में लिखाइल आत्म-संस्मरण भा आत्मकथा के पहिलका संग्रह ह। निश्चित रूप से एह किताब के प्रणयन-प्रकाशन से, भोजपुरी साहित्य के ऊ कोना उजागर हो रहल बा, जहाँ आज ले अन्हार रहे"। कपिल जी एह पुस्तक के बारे में इहो लिखले बानी –"सामान्य जन के आत्मकथा केतना हृदयग्राही, रोचक आ संवेदना भरल हो सकत बा, एकर नमूना 'सुरता के पत्थर' बा। लेखक के निजी करुण-

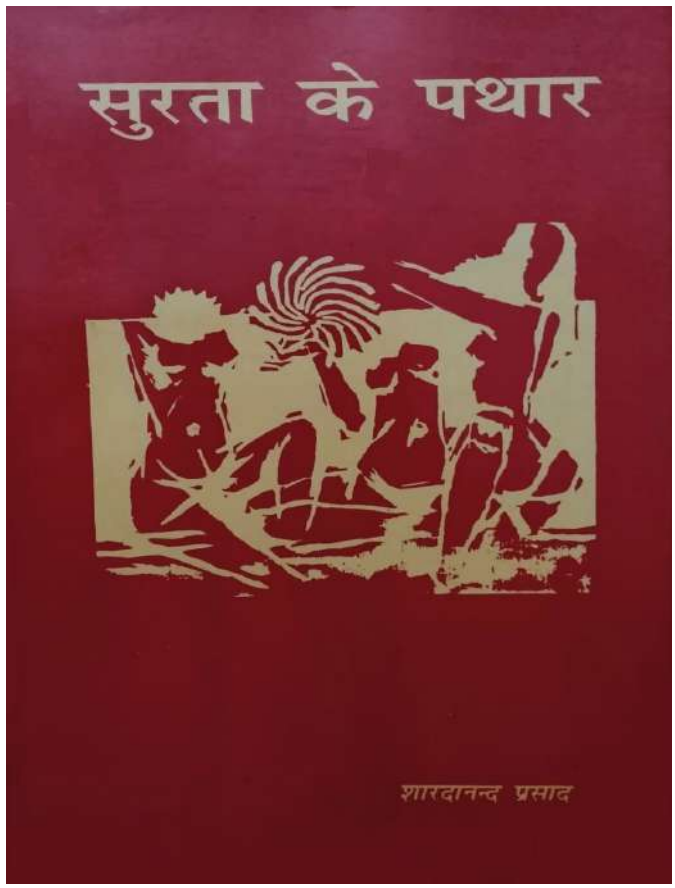

किताब : सुरता के पथार
लेखक : शारदानन्द प्रसाद
विधा : आत्म-संस्मरण
प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान, पटना
प्रकाशन वर्ष : 2002
कुल पृष्ठ : 80
किताब के मूल्य: : 50/ रु

कथा का साथे-साथ 'सुरता के पथार' में प्रसंगतः अइसन-अइसन रेखाचित्र उभरल बा, जवना में दूर देहात के तत्कालीन जीवन के जीवंत तस्वीर खड़ा हो जाता''।

पुस्तक के आरंभ 'हमार जनम' शीर्षक आलेख से होता, जवन बहुते कारुणिक आ मर्मभेदी घटनन से जुड़ल बा। निराला जी 'सरोज-स्मृति' कविता में एक जगह लिखले बानी–'दुख ही जीवन की कथा रही', ठीक ओसही शारदा बाबू का लइकाई के कथा दुख से भरल बा। उनके लिखल कुछ पाँतियन के देखल जाय–'अभी धरती पर गोड़ ठीक से रोपलहूँ ना रहनी, टुअर हो गइनी। माई राते से मुअल पड़ल रहे। ..... छाती मुँह में धके दूध पियत रहनी। लोग-बाग हमके हटावल। बाबूजी छव महिना पहिले गुजर चुकल रहनी। घर में पाले-पोसे वाला केहू ना रहे। एह से नानी के घरे पहुँचावल गइनी'।

लइकाइये में माई-बाप के सरग सिधार गइला के बाद बूढ़ नानी के लगे पलाये-पोसाये वाला लइका कवना-कवना परिस्थितियन से गुजरत आठ किलोमीटर दूर दरौली मिडिल स्कूल में पैदल जाके पढ़ाई कइलस आ फेर हुसेनगंज का बाद मैरवा के हरिराम हाई स्कूल से मैट्रिक, डी०ए०वी० कॉलेज सीवान से इन्टर आ राजेन्द्र कॉलेज, छपरा से बी०कॉम० तक के पढ़ाई करत बेर कवना-कवना तरह के शारीरिक आ आर्थिक कठिनाइयन के सामना करत जइसे-तइसे आगे के राह बनावत गाँधी स्मारक विद्या मंदिर उच्च विद्यालय, पचरुखी में अध्यापक के पद तक पहुँचल एह सब घटनन के मार्मिकता के साथ बिना कवनो लुकाव-छुपाव के चित्रण भइल बा, जवना से शारदा बाबू के संघर्षमय जीवन आ ओह से साहस का साथ सामना करे वाला जीवट व्यक्तित्व के पता चलत बा।

पचरुखी के साहित्यिक संस्था 'साहित्यायन' शीर्षक से लिखल आत्म-संस्मरण में शारदा बाबू के ओह संस्था से जुड़ाव आ साहित्यिक गतिविधियन में सक्रिय भागीदारी के चित्र उभर के आइल बा। शारदा बाबू 'साहित्यायन' के सचिव रहीं। एह से संस्था के सभ गतिविधियन पर निगरानी आ सहयोग मिलत रहल। सन 1973 में आचार्य महेन्द्र शास्त्री का प्रेरणा से आयोजित सीवान जिला प्रथम हिन्दी-भोजपुरी-संस्कृत साहित्य सम्मलेन के पचरुखी चीनी मील का हाता में आयोजित भइला के चरचा बा, जवना में रात में आयोजित कवि-सम्मलेन में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री, डॉ० शंभू नाथ सिंह, पाण्डेय कपिल, गोपीवल्लभ सहाय, रामगोपाल शर्मा 'रूद्र' जइसन दिग्गज साहित्यकार भाग लेहले। ओह आयोजन में शारदा बाबू अपना सक्रियता के परिचय देहनीं।

'पचरुखी बाजार आ गाँव शीर्षक से लिखल संस्मरण में पचरुखी बाजार के चहल-पहल आ देहाती लोग के साँझ के बेरा दूकान पर आके घुघुनी-पियाजी खाइल आ चायो पियला के चरचा के साथे फगुआ के बेरा सभ से पहिले शिव मंदिर पर गावल जाये वाला फगुआ गीतो के नमूना संस्मरण के रुचिगर-रसगर बना देता –'लाल धजा फहराला शिव रउरी मंदिरवा'। फुगुआ गावला का बाद चइतो गावे के शुरूआत हो जाता–'रोज त बोले कोइली / होत भिनसरवा / आज बोलेली आधि रतिया हो रामा .....'।

शारदा बाबू कुछ आत्म-संस्मरण अपना छात्र-जीवन का घटनन पर बहुत मनोरंजक ढंग से परोसले बानी, जवन छात्रन के शैतानी आ गुरु जी लोग के सीधापन से जुड़ल बा। 'श्यामबिहारी गुरु जी' आ 'मंगला गुरु जी' एह नजरिया से नीक लिखाइल बा। आखिर में एह पुस्तक के बारे में ई कहल जा सकत बा जे एह में लेखक के जीवन के कारुणिक घटना, उतार-चढ़ाव, संघर्ष आदि का साथे समाज, घर-परिवार, साथी-संबंधी, शिक्षक, शिक्षा आदि सभ से जुड़ल संस्मरण आ गइल बा। कतहूँ रोचकता के कवनो कमी नइखे। आत्म-संस्मरण पर एह तरह के पुस्तक लिखात रहे के चाहीं, ताकि एह विधा के भंडार भरत रहे। 卐卐

गजल

दिल चुरावे ना आवेला उनका
गुल खिलावे ना आवेला उनका

बात के त लगा लेलें दिल से
दिल लगावे ना आवेला उनका

जान से जादा चाहेलें हमके
ई बतावे ना आवेला उनका

साध लागेला हमरो कि रूसीं
पर मनावे ना आवेला उनका

बाड़े गजबे छलक जालें कतहूं
गम छुपावे ना आवेला उनका

सब पे विश्वास कर लेलें 'भावुक'
आजमावे ना आवेला उनका

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़'

भोजपुरी के चरितात्मक उपन्यास: "बाते बात में"

उपन्यास के नांव ह-- "बाते बात मे"। पहिलका पन्ना सादा, दोसरिका के दुनो ओरि लेखक के बासठ गो छपल किताबन के सूची, आ एकरा बाद दू पन्ना में लेखक आ किताब के परिचय-भूमिका। एकरा बाद सुरु होता उपन्यास-बाते बात में। निछान कुल्हि दू सौ दू पेज के एह भोजपुरिया उपन्यास के लिखनिहार बानी रेलवे डाक सेवा से रिटायर आरा के रहवईया साहित्याचार्य श्री हीरा प्रसाद ठाकुर जी। ऊहे हीरा प्रसाद ठाकुर जेकर "वीर कुंवर सिंह" नांव के महाकाव्य एम. ए. में पढ़ल-पढ़ावल जाता।

कविता, कहानी, गीत, नाटक, चम्पू, खंडकाव्य से लेके महाकाव्य तक के लिखवइया ठाकुरजी के ई पांचवां उपन्यास ह। कलम के छुरा नियन चलावेवाला रचनाकार ठाकुरजी के ई उपन्यास अपना रचनाविधान आ भाव भासा के विचार से बड़ा दमदार कहे लायक बा। एकरा कथानक के जड़ में बाड़ी उनुकर सरगवासी मेहरारू धनेश्वरी देवी उर्फ धनेसरा। समूचा उपन्यास बस उनके इयाद में लिखाइल बा। अइसन ज्ञानी मेहरारू पर भला काहे ना केहू गुमान से लिखी! "...धनेसरा लिख लोढ़ा, पढ़ पत्थर रही जरूर, बाकिर दिमाग के धनी, दिल के रानी, परमारथ सेवा में लीन रहेवाली रही। पता ना उनका में बात पचावे के कतना गुन कइसे भरल रहे। एने के बात ओने कहे के हाल ना जानत रही।" धनेसरा देवी के जीवन-अनुभव साबित कर देता कि जीवन में खाली किताबिये ज्ञान काम ना आवे। आ अपना पर विश्वास अतना कि एक बेर कह देली कि बेटा होई, त उनका बेटे भइल!"

साँच कहल जाए त "बाते बात में" एगो चरितात्मक उपन्यास ह, जवना में लिखनिहार हीरा प्रसाद ठाकुर जी अपना जीवन संगिनी के इयाद में उनका कथनी-करनी के बिरतान्त से भोजपुरिया समाज आ संस्कृति के उजागिर करत, देशदुनिया के रहन-चाल पर सवाल उठवले बानी। सउँसे उपन्यास में धनेसरा के चरित्र छपिलल बा। बेटी-बहिन, सखी-सलेहर से लेके मेहरारू, महतारी, पतोह, नानी आ पड़ोसिन, कवनो तरह से विचारल जाव त धनेसरा भोजपुरिया समाज के नारी जीवन के आदर्श बन के उभरल बाड़ी। उनका मलाल बा त बस अतने कि भगवानजी उनका के एगो देवर ना दिहलन, नाहीं त ऊ अपना मरद से चिकारी काहे करती बेचारो!

खीसा ह जे भर घर देवर आ सवांग से चिकारी! एकर मरम ऊ का जानी जे भोजपुरिया समाज से बहरी बा! धनेसरा आ कविजी के बीच जवन चिहुल-चिकारी चलता, तवना के बरनन कइला के मान के नइखे। बात के रसघस्सी अइसन कि सिंगारो रस लजा

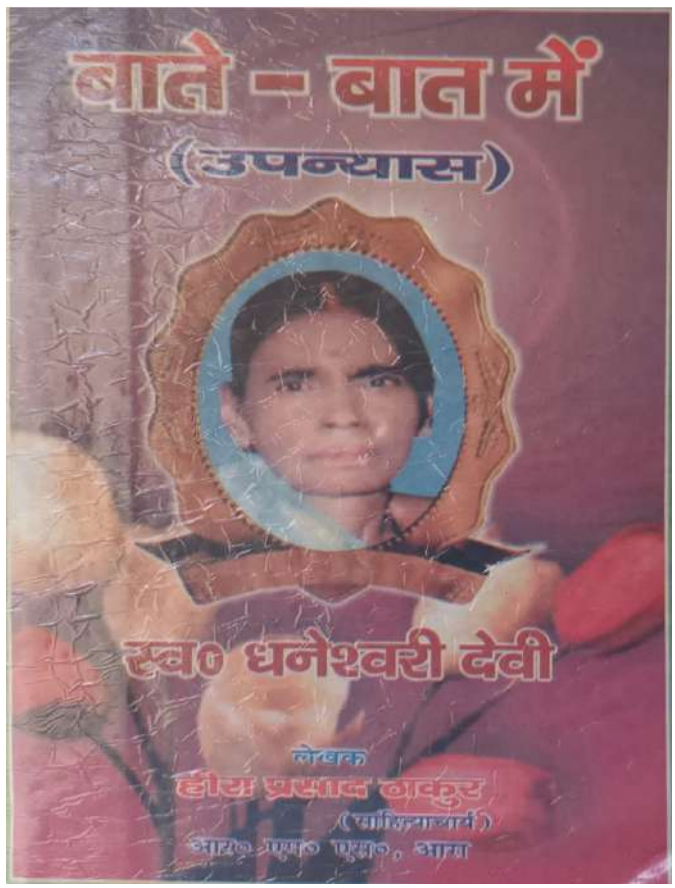

किताब: बाते बात में
लेखक: हीरा प्रसाद ठाकुर
विधा: उपन्यास
प्रकाशक: श्री दुर्गा प्रिंटर्स प्रेस, आरा, बिहार
प्रकाशन वर्ष : 2009

जाई। विश्वास ना त तनि देख लिहल जाव--''धनेसरा मुसुका के रह गइली, आ कहली कि हम तोहरा संगे दस गो दोकान में पैदल चलनी, गरम घाम में घुमनी, एकर कुछो होला कि ना?''

कविजी कहलन-''एकर दंड जवन होला तवन हम दे देबि। तब धनेसरा कहली-हमहुँ जवन कहब तवन दे देबि।''

अतने ना, तनि कविजी आ उनका भौजाई के बीच के भोजपुरिया प्रेम देखल जाव--''भौजाई अइली बरघारा में जहाँ हम अकेले पढ़त रहीं। ओह घरी दालान में केहू ना रहे। भौजाई कहली-खाली पढ़ी के का होई? का पढाई में मरद-मेहरारू के कहानी नइखे देले? ई कवन पढाई ह कि खाना परोसल बा आ खाये के लूरे नइखे? आरे तनि जुठीआइबो त करे ला, अपने सवाद मिले लागी। त तूं सुत गोड़तारी, त तूं सुत मुड़तारी। से ए बबुआ! चल, दालान में केहू नइखे, हम तोहरा के लूर सीखा देत बानी। आ जसहीं केंवाड़ी बन करे लगली तसहिं कविजी भाग गइले।''

कहल बा कि आधा कहे से मरद बूझे, पूरा कहे तब त गधो बूझे! मरद, मेहरारू भा देवर भौजाई के ओइसन साफ सुथरा बात-विचार अब कहाँ केहू के देखे-सुने के मिलता, जइसन कविजी एह उपन्यास में अपना मेहरारू आ भौजाई से करत बाड़न। धनेसरा उमिर में कविजी से बड़ रही आ दुनियादारी जानत रही। कविजी गँवारू पढ़गित लइका, बिचारु छव-पांच ना जानत रहन। धनेसरा के जब मौका मिले, दुनियादारी पढ़ावे के कोशिश करे लागस। आखिर एक दिन पढ़ाइये देली--''टप देना बाल्टी धके केंवारी लगा देली। अउर कहली कि सुनतानी कि पढ़े में बड़ी तेज बानी, जेकरा तनिको लूरे नइखे खाएपिये के, से कवन पढाई पढता! से आव हेने घर में खाटी पर हम बता देतानी। कविजी जान गइले कि धनेसरा आज पाठ पढईहन, अउर खूब पढ़वली। कविजी भी पढ़े में मन लगावे लगले। अउर क से कबूतर कैसे उड़ी, बूझे लगले।---कविजी कहले--ए धनेसरा, चल, हम फेर से बताई कि हमरा पढ़े आइल कि ना। धनेसरा तैयार रही, कविजी अबकी बेर अपने से बतावे लगले अउर पूछे लगले कि ए धनेसरा अब बताव कि हमरा पढ़े आवता कि ना।''

उपन्यास के भूमिका बतावता कि ठाकुरजी असमंजस में बानी कि एह किताब के कवना विधा के नांव देसु। हर-दांव देके उपन्यास कह देले बाड़न। एह किताब के बारे में हम कहब कि जइसे-- ''कवीनां करोति काव्यानि, रसं जानन्ति पण्डिताः'' के उक्ति जगजाहिर बा ओसहीं एह उपन्यास के बारे में कहल जा सकेला। लोग जानते होई कि फणीश्वरनाथ रेनू जी के ''मैला आँचल'' के बहुते दिन तक लोग उपन्यास ना मानल, त का फरक परल/ ओसहीं एकरा बारे में ढेर विचारे के काम नइखे। ई किताब उपन्यास तत्वन के आधार पर भी कथानक, चरित्र, देशकाल, वातावरण, भाषा-शैली आ उद्देश्य के विचार से निमन उतरल बा।

उपन्यास के उत्तरार्ध में धनेसरा देश-दुनिया में हो रहल अनेत से बहुते दुखी बाड़ी। चोरी-बटमारी, लूटपाट-धोखाघड़ी, बेरोजगारी, भुखमरी आ सरकारी बेईमानी से ऊ अतना बेआकुल बाड़ी कि उनका बुझाते नइखे कि ई देश आजाद भइल बा। आतंकवादिअन के छोड़ावे खातिर जब एगो मंत्री के बेटी के अपहरण होता आ सरकार लचार होके ओहनी के छोड़े खातिर तैयार हो जातीया, तब धनेसरा नियन उपन्यास लिखवइया के करेजा हिल जाता। सरकार के एह निर्णय से धनेसरा के मन सरकारी नीयत से उचट जाता।

उपन्यास के कथानक भोजपुरी समाज में नारी के प्रति पुरुष समाज के सोच में आ रहल नया बदलाव के बता रहल बा। एकरा के अच्छा लच्छन माने के चाही। एह समाज में मेहरारू खातिर रोवे-पीटेवाला बहुते कमे लोग मिलेला। पहिले अइसन मरद के मेहरमऊगा कहल जात रहे। लोकलाज से लोग अपना मन के बात मने में राख के कुहुँक लेत रहे। अपने मेहरारू खातिर सभका सोझा रोवे के हिम्मत ना करे हर कोई। बाकिर भोजपुरी साहित्य में हमरा दू अदिमी अइसन लउकल जे अपना मेहरारू के वियोग में डहंकत-डहंकत उपन्यास लिख के बता दिहल कि विधुर जीवन कतना दुखद आ संत्रास से भरल होला। जवाहरलाल बेकस के उपन्यास ''अग्नि समाधि'' आ हीरा प्रसाद ठाकुर के ई उपन्यास-''बाते बात में'' दुनो एके तरह के कहल जाई।

एक बात अउरी, अगर एह चरितात्मक उपन्यास के नांव ''धनेसरा'' राख दियाव त कवनो हरज के बात नइखे। अगिला संस्करण में ठाकुर जी के विचार करे के चाही। 卐卐

गजल

जिगर बेताब, दिल बेचैन बा, अंखिया लोराइल बा
चिहुक जातानी रह-रह के, कि उनकर याद आइल बा

पढ़त बानी पुरनका खत, हंसत बानी समझ के ई
कि लिखते-लिखते कुछ खाली जगह काहे छोड़ाइल बा

सफर में साथ रहलर तर हवा में भी रहे खुशबू
बिछड़ला पर लगल मधुमास में पतझड़ समाइल बा

सितारा, चांद, सूरज, दीप कुछुओ काम ना आई
अंधेरा ही अंधेरा जो अगर मन में समाइल बा

अलग होखे के मन केहू के घर में ना रहे, लेकिन
तनी सा जिद, तनी सा बात पर अंगना बंटाइल बा

बताई चीख के 'भावुक' कि एकर स्वाद कइसन बा
ई हमरा दिल के कोल्हू में गजल ताजा पेराइल बा

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

चंद्रेश्वर

हरिराम द्विवेदी : गँवई लोक आ किसान चेतना के कवि

'हे देखा हो!' के कुलजमा 32 गो कवितवन में कहन के भाव-भंगिमा में भोजपुरी के ठेठ मीरजापुरी आ बनारसी ठाट देखल जा सकता बा। हमार अंचल में पुराना भोजपुर के आसपास आरा, बलिया, छपरा, सीवान में बहुते व्यंग्यात्मक लहजा में कहल जाला कि 'हई देख हो' भा 'हई देख रे मरदे!' एकरा में शामिल 'हो' के संबोधने अन्य पुरुष खातिर प्रयोग में ले आवल गइल बा जेवन आपन लघुता भा संक्षिप्ततो में मये समाज के शामिल कइ लेत बा। असल में भोजपुरी ना खलिसा गेय-लयात्मक भा संगीतात्मक भाषा ह; बलुक गहन रूप से संवाद आ बात-विमर्श के भषो ह। एहिजा व्यंग्य में विस्मय, करुणा में हलुकाहे आक्रोश त छुपल रूदन में हास्य शामिल बा। एकरा में शामिल आलोचना भा शिकवा-शिकायत के तीखा तेवरो से इन्कार ना कइल जा सकेला।

पंडित हरिराम द्विवेदी के भोजपुरी काव्य कृति 'हे देखा हो !' से गुजरला पर एगो सचेत आ जागरूक पाठक के बराबर ई एहसास होत रहेला कि एकर एगो बरियार रिश्ता काशी के कबीर के 'आँखिन देखी' से बनत बा। ई एगो महज संजोगे भर नइखे कि कबीर आ हरि भइया के जमीन एकही बा आ ऊ ह काशी के जमीन। पंडित हरिराम द्विवेदी जेकरा के लोग प्यार से 'हरि भइया' कहेला ऊ मूलतः ग्रामीण संवेदना आ किसान-चेतना के कवि हँवें। ऊ एगो सजग-सचेत सामाजिक यथार्थ के चितेरा कवियो हँवें। ऊ गँवई समाज आ लोक पर आपन बारीक निगाह राखेलन, जेहवाँ बहुत कुछ अइसन घटित हो रहल बा भा परिवर्तित हो रहल बा जेवन ना होखे के चाहीं। उन्हुकर निगाह ओह विडंबना भा विसंगतियो पर बा जेवन आजादी के बाद निरंतर बढ़ते गइल बा। ऊ जेवन कुछ कहेलन ऊ कबीर लेखा 'अनभै साँचा' ह --- 'अनुभव के सच' भा भयमुक्त सच ! ऊ देश में लोकतंत्रात्मक प्रणाली, आज के भ्रष्ट आ सड़ल-गलल व्यवस्थो पर आपन कविताई के जरिए सीधा प्रहार करेलन। ऊ ऊपर से नीचे तक व्याप्त भ्रष्टाचार पर खुलि के,बेलौस आ बेबाक तरीका से बात करेलन। ऊ आपन कविता में एगो धारदार व्यंग्यकार के रूपो में सामने आवेलन। उन्हुकर कविता समाज में व्याप्त पाखंड, छद्म, रूढ़ियन भा कुप्रथन पर सीधे कटाक्ष करेली सन। एह संदर्भ में उन्हुकर एगो कविता 'पितरपख' पढ़ल जा सकेले जेवना में ऊ बहुते महीन ढंग से पितृपक्ष में दान लेबे भा भोजन ग्रहण करे वाला बाभनो लोग के मजाक उडवले बाड़न। ऊ खुद पर भा आपन कवियो होखे पर व्यंग्य कइले बाड़न। ई आत्म व्यंग्य के भाव कम कवियन में पावल जाला। ऊ 'केहू का कै लेही' कविता में लिखत बाड़े ---- **"जबरी कविता लिखब सुनाइब केहू का कै लेही / हम अपने के कवि कहवाइब केहू का कै लेही /"**

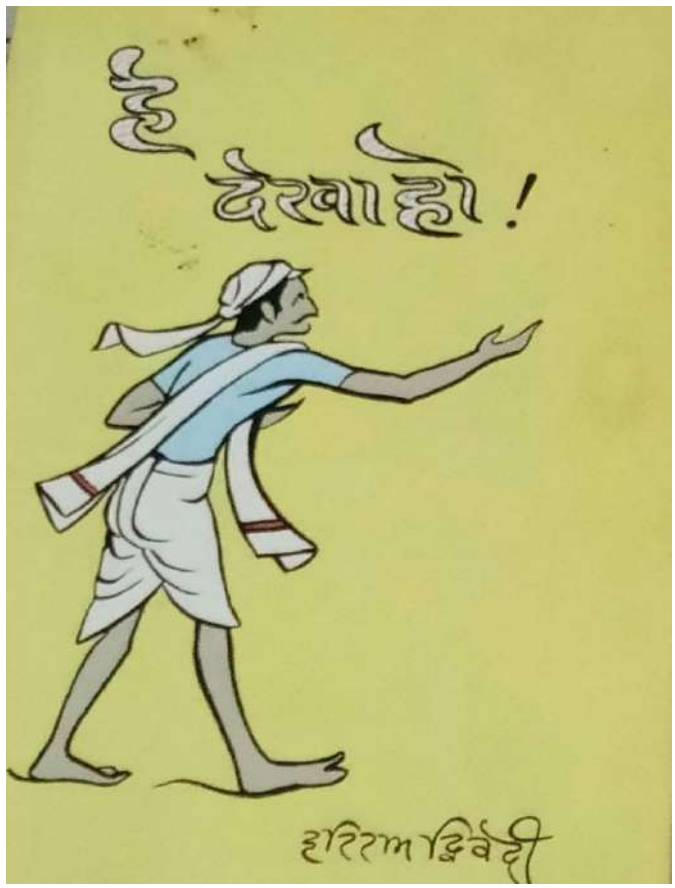

किताबः हे देखा हो
लेखकः हरिराम द्विवेदी
विधाः कविता
प्रकाशकः पिल्ग्रिम्स पब्लिंशिंग, वाराणसी
प्रकाशन वर्षः2013
पृष्ठ संख्याः 90
किताब के मूल्यः 125 रु

ऊ एह लमहर कविता में कवि सम्मेलन-मुशायरा के नाम पर जेवन एगो छद्म काव्य संस्कृति विकसित भइल बा, ओकर सीधे भंडाफोड़ करत बाड़न। उन्हुकर एगो कविता 'अधी रात के' में पुअरउटी में आग लागे के घटना आ ओकरा बाद के लोक कार्रवाई के बहुते रोचक दृश्य प्रस्तुत कइल गइल बा। एह में गँवई लोक के समग्र जीवंत चित्र खींचल गइल बा। ऊ 'जिन पूछा' कविता में कहत बाड़न---**"घिरल सवालन से जे अगबै/पूछ रहल ऊहो सवाल हौ!"**

ऊ एगो कविता 'गजरदम्म गजरदम्म' में लिखत बाड़े-- **"एम.पी. से पी.एम. तक/एम्मेले से सी.एम.तक/बाबू से जी.एम. तक/जिल्ला में डी.एम. तक/केहू ना लउकैला केहू से कम/गजरदम्म गजरदम्म!"** अब एह कविता में साफ कहल जा रहल बा कि आजादी के एतना दशक बादो हमार लोकतंत्र बेराम बा ! एह कविता के कहन के सब सौन्दर्य ओकरा एह टेक में बा कि 'गजरदम्म गजरदम्म !'

हरिराम द्विवेदी के कविता के असल ताकत ओकरा भीतर समाइल 'वाग्वैदग्ध्य', 'विट' भा 'वक्रोक्ति' में बा। उन्हुकर वक्रोक्ति में आ विट में एगो किसान के सरलता-सादगी आ चतुराई छुपल बा। एही से ऊ सीधे दिल में उतरि के जगह बना लेत बिया। एहिजा पंडिताई के बोध भा धाक जमावे वाली कुटिलता-जटिलता ना मिली; बलुक गँवई लोक के सहजता भा माधुर्य मिली! ऊ एक जगह लिखत बाड़े--- **"पत रखले पानी रखलै के होला इहै नतीजा,आपन छाता ओन्हैं ओढ़ा के खुद बरखा में भीजा।"** भा फेरू लिखत बाड़े -- **"पोरसा भर उप्पर से जिन कूदा जहवाँ ठेहुना भर पानी।"**

हरिराम द्विवेदी के कवितन में जेवन काव्य विवेक दिखायी परेला ऊ परंपरा अवरू आधुनिकता के बीच द्वंद्व भा घात-प्रतिघात से; गाँव अवरू शहर में नित हो रहल नयका-नयका परिवर्तनों से निर्मित होला। कवि के काव्य विवेक ओह चलनी भा सूप लेखा प्रतीत होला जेवन खलिसा पुष्ट धान आ गेहुँम के दाने के एकत्र करेला अवरू 'पइया भा थोथा' के बाहर कइ देबेला। ऊ आपन जातीय छंद में दोहा, बरवै, कवित्तो से नीक से परिचित बाड़न त गजल आ मुक्तको से। उन्हुकर कविता में शब्द वोइसही आवेलन स जइसे झरना से पानी गिरत होखे।

'हे देखा हो' के एगो लाम-चाकर भूमिका प्रकाश उदय लिखले बाड़न। प्रकाश उदय स्वयं भोजपुरी के एगो लोकसिद्ध आ प्रसिद्ध कवि हँवें। ऊ एह भूमिका के अंत में लिखत बाड़े--"कहला के, सुनला के, सुनवला के, बतियवला के, बाताबाती के, बोलबाजी के, बतरस के, ओरहन के, उघटन के, तोपला के, उघरला के, खीस के, खुन्नस के, झरला के, झरहेटला के, झटकला के, पटकला के, पलटला के, बहकला के, डहकला के, डहइला के आदि-इत्यादि वगैरह के तुक में, ताल में जो होखे लहावे के, त 'हे देखा हो' ।"

卐卐

गजल

सबसे बड़का शाप गरीबी
सबसे बड़का पाप गरीबी

डँसे उम्र भर, डेग-डेग पर
बन के करइत साँप गरीबी

हीत-मीत के दर्शन दुर्लभ
जब से लेलस छाप गरीबी

साधू के भी चोर बनावे
हरे पुन्य-प्रताप गरीबी

जन्म कर्ज में, मृत्यु कर्ज में
अइसन चँपलस चाँप गरीबी

सुन्दर, स्वस्थ, सपूत अमीरी
जर्जर बूढ़ा बाप गरीबी

जे अलाय बा ओकरा घर में
पहुँचे अपने आप गरीबी

सूप पटकला से ना भागी
रोग, दलिद्दर, पाप, गरीबी

ज्ञान भरल श्रम के लाठी से
भागी अपने आप गरीबी

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

बलभद्र

गलमोंछ आ तेग के शान आ चमक

सुरेश कांटक हिंदी आ भोजपुरी के एगो वरिष्ठ कवि आ लेखक हवें। हिंदी के साथे साथ भोजपुरी में भी इनकर अनेक किताब छपल बा। हर विधा में लेखन के बावजूद कांटक जी के मूल पहचान कथाकार आ नाटककार के बा। कहानी त ऊ हिंदी आ भोजपुरी दूनो भाषा में लिखले बाड़न। बाकी उनकर नाटक के भाषा भोजपुरी बा। दर्जन भर के करीब उनकर नाटक भोजपुरिए में बा। एकर एगो खास मतलब होला। एह के खाली मातृभाषा प्रेम के फ्रेम में देखल ठीक ना होई। बलुक एह अर्थ में देखल जादे ठीक होई कि भोजपुरिए उनकर रचनात्मक अभिव्यक्ति के सहज सोभाविक भाषा ह। कहानी के बाद उनकर मन नाटक में जादे रमल बा। एगो कारण इहो बा कि नाटक भी कथा आधारित विधा ह।

बाबू कुँवर सिंह नाटक में 1857 के विद्रोह के नायक बाबू कुँवर सिंह के हिम्मत, बहादुरी, दिलेरी, संगठन शक्ति, लोकप्रियता आ उनकर रण कौशल के रोचक वर्णन बा। नाटककार के दिलचस्पी उनका जीवन के समूचा पन्ना पलटे में नइखे। बस उनका जीवन के संग्रामी पक्ष में बा जेके चलते बाबू कुँवर सिंह इतिहास पुरुष बनलें। संग्राम छिड़े से लेके बांह गंगा में अर्पित करे आ जगदीशपुर के आजाद करे तक के दास्तान नाटक में मिली। नाटक के अंत लोकप्रसिद्ध फगुआ गीत से होत बा-बाबू कुँवर सिंह तेगवा बहादुर।

कुँवर सिंह प भोजपुरी में गीत, प्रबंधकाव्य, कविता, नाटक आ कहानी कम नइखे लिखाइल। रमता जी के कविता, नीरज सिंह के कहानी 'थाती', सर्वदेव तिवारी 'राकेश' के 'कालजयी कुँवर सिंह', चंद्रशेखर मिश्र के 'कुंअर सिंह' सबके साथे एह नाटक के पाठ होखे त जादे अच्छा रही। तोफा राय आ दुगार्शंकर प्रसाद सिंह के लिखल काव्य के भी लिहल जाए त ठीक रही। विधागत भिन्नता के बावजूद।

इतिहास के विषय प कहानी, उपन्यास भा नाटक कम नइखे लिखाइल। वृन्दावनलाल वर्मा झांसी के रानी लक्ष्मीबाई प उपन्यास लिखले बाड़न। लक्ष्मीबाई भी 1857 के ही महान योद्धा रहली। कांटक जी के एह नाटक में उनको जिक्र बा। अइसन विषय के साहित्य के विषय बनावल आसान ना होला। लेखक के इतिहास में जाए के होला। इतिहास के पन्ना पलटे के होला। उपलब्ध दस्तावेजन के देखल जरूरी होला। उपलब्ध ग्रंथ पढ़े के होला। जइसे तुलसीदास नानापुराण निगमाग आ रामायण के साथे साथ लोक में प्रचलित रामकथा के भी अध्ययन-मनन कइलें। आ सब के बाद ओह के रचा-पचा के ओह से बहरी भी निकलल जरूरी होला। ना त नकल भा दोहराव के खतरा रहेला। कांटक जी के ध्यान बेशक एह देने गइल बा। ऐतिहासिक तथ्यन

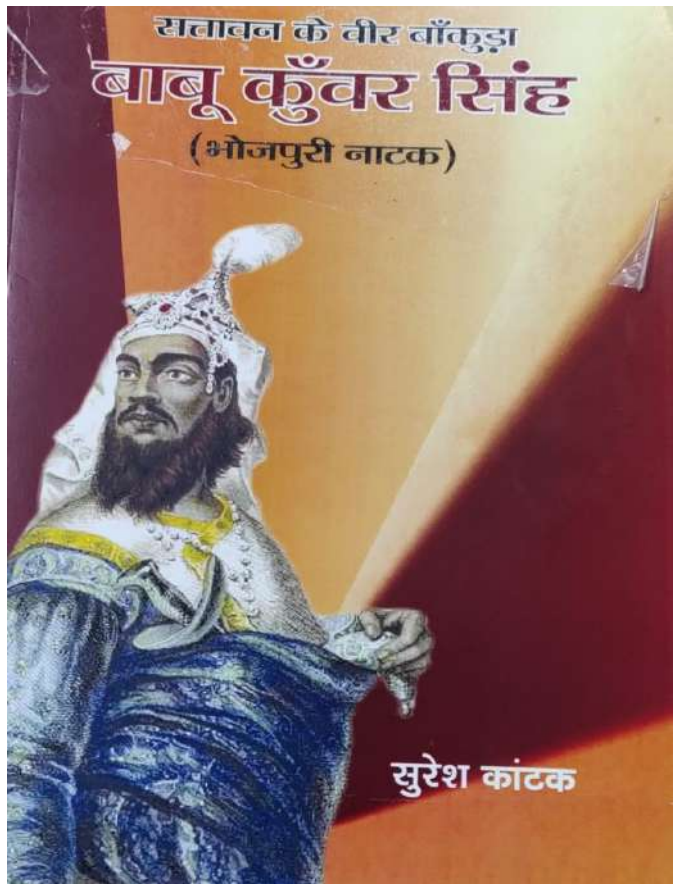

पुस्तकः बाबू कुँवर सिंह (भोजपुरी नाटक)
लेखकः सुरेश कांटक
प्रकाशकः प्रतिश्रुति प्रकाशन
पहला संस्करणः 2014
मूल्यः रु 200/
पृष्ठः 127

के अध्ययन भी कइले बाड़न। बाकी का कि कुंअर सिंह के लेके उनका मन में जवन श्रद्धा आ प्रेम रहल बा, वीरता के बखान के जवन धुन बा, ओह से ऊ उबर नइखन पावल।

कांटक जी के एह नाटक में एगो मुख्य पात्र बाड़न संन्यासी जी। सर्वदेव तिवारी 'राकेश' के काव्यकृति में एगो बंसुरिया बाबा बाड़न। लागत बा कि ऊ बंसुरिए बाबा एह नाटक में संन्यासी जी के रूप में बाड़न। संन्यासी जी के प्रेरणा से ही कुंअर सिंह विद्रोह खातिर तेयार होत बाड़न। एह पात्र के ऐतिहासिकता पर प्रश्नचिन्ह जरूर बा, बाकी नाटक में ऊ बारंबार आवत बाड़न।

नाटक में कुलि छव अंक आ अठाईस गो दृश्य आ चालीस गो से बेसी पात्र बाड़न। कुंअर सिंह, अमर सिंह, हरिकिसुन सिंह, धरमन बीबी, करमन बीबी, रिपुभंजन सिंह, गुमानभंजन सिंह, शेख गुलाम, कप्तान आयर, ब्रिगेडियर डगलस, कर्नल ली ग्रांड सब इतिहाससम्मत पात्र बाड़न। जवना जवना युद्ध के वर्णन बा,सब इतिहाससम्मत बा। नाटक में युद्ध के ब्योरा, कुंअर सिंह के रणनीति, अंग्रेजी सेना के बेचैनी, देसी जमींदारन के अंग्रेजपरस्ती के जगह-जगह पर उल्लेख बा। 1857 के एह विद्रोह में कुंअर सिंह के साथे लड़ेवाला लोग के नाम एह नाटक से बहुत कायदे से जानल जा सकेला। पुरनका शाहाबाद के अनेक गांव के बागी लोग के नांव के साथे साथ गहमर, जमानिया, आजमगढ़, सहतवार आदि अनेक जगह के सहयोगी आ बागी लोग के सूची एह में उपलब्ध बा। बाकी इहो ध्यान देवे के बात बा कि इतिहास सम्मत कुछ महत्वपूर्ण पात्र आ घटना के तरफ लेखक के ध्यान नइखे गइल। लागत बा कि नाटककार के ध्यान चरित्र सृष्टि से बेसी घटना के जिकिर के तरफ बा।

संन्यासी बाबा एह नाटक के अइसन पात्र बाड़न जेकरा विद्रोह के पूरा जानकारी रहत बा। कवन राजा विद्रोह में बाड़न, कवन अंग्रेजन के साथ दे रहल बाड़न, सब जानत बाड़न। ऊ अंग्रेजन के शक्ति आ चालबाजी से भी वाकिफ बाड़न। नाटक के आरंभ में कुंअर सिंह आ बाबा के जवन बतकही बा, ओह के आधार पर लागत बा कि कुंअर सिंह अपना आसपास के राजनीतिक भा अन्य गतिविधियन के जानकारी से बिलकुल शून्य बाड़न। शुरू के कई मोड़ पर एह बाबा के उपस्थिति आ सलाह के इंतजार देखल जा सकेला। उनकर कहनाम आखिरी फैसला जस होत बा।

नाटक बहुत तीव्र गति से आगे बढ़त बा आ बढ़ते जाता। कतो ठहराव नइखे। युद्ध के स्थिति में भागमभाग रहबे करेला। ऊ परिस्थिति आ जिंदगी के भागमभाग होला। ओह के साहित्य के विषय जब बनावल जाला त तनी ठहरे के परेला। स्थिति आ चरित्र के तनाव तब्बे ठीक से पकड़ में आवेला। तब्बे ठीक से उद्घाटित हो पावेला।

नाटक में कुंअर सिंह के बहुत बढ़िया छवि उभरत बा। हिंदू आ मुस्लिम उनकर मददगार बाड़न। उनकर सहयोद्धा बाड़न। समाज के हर जाति के लोग उनका साथे बाड़न। बार बार राजा भोज के वंशज भइला के गुमान के संगे-संगे एगो जन हितचिंतक छवि भी उभरत बा। कुंअर सिंह के जवन लोकप्रचलित छवि बा, नाटककार ओकर खूब ख्याल रखले बा। नाटक पढ़े जोग बा। संगे संग मंचन के जोग भी। खूब रोचक बा।

नाटक के भूमिका के रूप में कुंअर सिंह के संघर्ष के ब्योरा बा। नाटक के बारे में ब्रज कुमार पांडेय के विचार नाटक के कवर पेज चार प छपल बा। 卐卐

गजल

कटा के सर जे आपन देश के इज्जत बचवले बा
नमन वो पूत के जे दूध के कर्जा सधवले बा

बेकारी, भूख आ एह डिग्रियन के लाश के बोझा
जवानी में ही केतना लोग के बूढ़ा बनवले बा

कहीं तू भूल मत जइहऽ शहर के रंग में हमके
चले का बेर घर से ई केहू किरिया खियवले बा

सँभल के तू तनी केहू से करिहऽ प्यार ए 'भावुक'
जरतुआ लोग इहँवों हाथ में पत्थर उठवले बा

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

विष्णुदेव तिवारी

नारी-जीवन के बिथा के मर्मांतक चित्र ह "कान्ही ना लागब सजनी"

लोक परंपरा से सुनल-सुनावल बात अउरी समाज के अपना अनुभव के सहजात से, सहज शास्त्रीय विधान के अगुअई में, जवन कहानी बनिहें, उहे कहानी 'कान्हीं ना लागब सजनी' के कहानी हई स, जेमे आधा संसार कहाए वाली नारी के अकथ बिथा भरल परल बा। बिम्मी कुँवर सिंह रचल एह संग्रह के चउदह कहानियन में नारी के ऊपर होत अत्याचार वाली कहानियन के तीन वर्ग बा। पहिला वर्ग में ऊ कहानी बाड़ी स, जेमें नारी पर अत्याचार पुरुष का ओर से होत बा, जइसे 'कान्हीं ना लागब सजनी' आ 'अनेत के अंत'। दूसरा वर्ग में अइसन कहानी बाड़ी स, जहाँ नारिए नारी के दुश्मन बिया। अइसन कहानी अनुपात में बेसी बाड़ी स, जइसे- 'पचरुखिया वाली', 'गलती केकर, सजा केकरा के', 'ईआ', 'दही चिउरा' आ' अपसगुनी'। तिसरका वर्ग में 'बबनी' जइसन कहानी बा, जहाँ प्रगट भा गुपुत रूप से सउँसे समाज, नारी के प्रताड़ित करत बा आ साँसत में डाल के मुआ घालत बा।

कुछ कहानियन में परतिय गमन खुलके आवत बा बाकिर कथ्य भा परोस से कतहूँ मरजादा पर खरोंच नइखे परत। बरनन के शुचिता करुना उपजावत बा। 'बबनी' कहानी में बबनी के मरद आ 'ईआ' कहानी में ईआ के मरद परतियगामी बा लोग। बबनी के मरद कुसुम नाँव के एगो विजातीय बालविधवा के प्रेम में आन्हर बाड़े आ एक दिन अपना प्रेमिका से मिल के बबनी के नरेटी जाँत के मुआ घालत बाड़े। डॉक्टरो साफा पाप पी घालत बाड़े आ हाला करवा दिहल जाता कि बबनी के मृतु हार्ट अटैक से हो गइल हा।

बाकिर 'ईआ' के इआ बहुते बोल्ड बाड़ी आ अपना मरद से जम के बदला लेत बाड़ी। उनकर मरद सरकारी कम्पाउन्डर बा आ फउज में नोकरी करे वाला अपना छोट भाई के मेहरारू से फँसल बा। ऊ इआ से बोलत तक नइखे। इआ, एक दिन रात में उठत बाड़ी आ अस्पताल में जाके अपना सुतला मरद के फूँक आवत बाड़ी। घरे आके ऊ अपना छोटकी गोतिनियो के तकिया से जाँत के मुआ घालत बाड़ी। लोग इहे बूझत बा कि कम्पाउन्डर साहेब खुदे अपना भवह के मुआ के अपने आग लगा लिहले हा।

'दही चिऊरा' कहानी के रूपकुमारी भी बहुते बोल्ड बाड़ी बाकिर एहिजा संदर्भ दोसर बा। रूपकुमारी अपना आजी के मनसोखई आ लइकन के तुलना में लइकिन के हीन बूझे के रवैया के एके दिन में लंका लगा देत बाड़ी। ऊ दही के कहँतरी उठा के आजी के नहवा देत बाड़ी आ उनकर बाँह मरोरि के भुइँया पटक देत बाड़ी। कहानी-लेखिका के शब्दन में- "ओकरा बाद के जतना खिचड़ी आइल, केहू के छाल्ही मिले भा ना मिले, रूपकुमारी बुची के थरिया में सबसे पहिले चिउरा प सजावल दही आ सोगहग भेली आजी रख देत रही।"

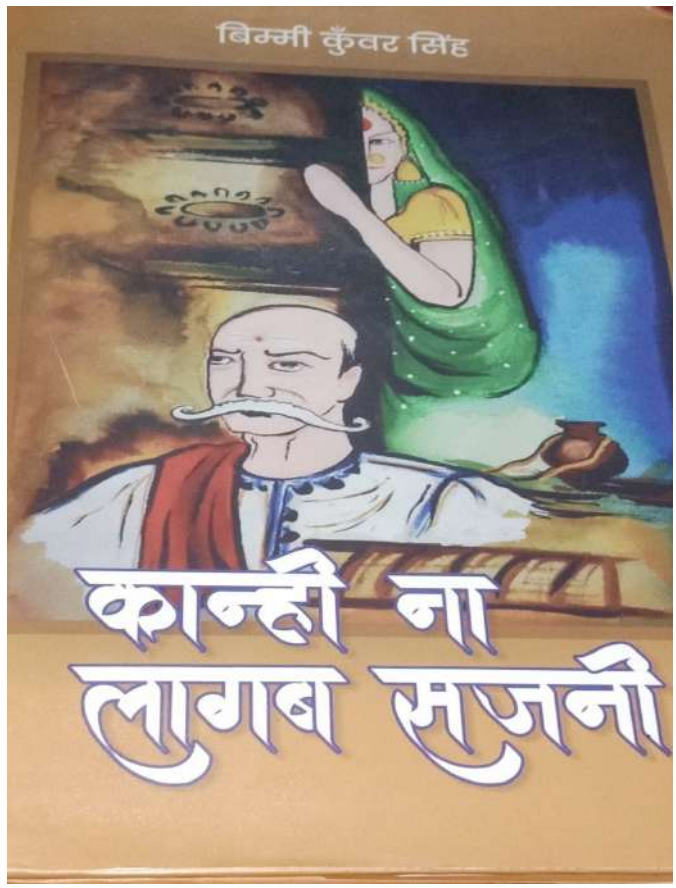

किताब: कान्ही ना लागब सजनी
लेखक: बिम्मी कुँवर सिंह
विधा: कहानी संग्रह
प्रकाशक: सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
प्रकाशन वर्ष: 2021
पृष्ठ संख्या: 104
किताब के मूल्य: 200 रु

संग्रह के शीर्षक कहानी 'कान्ही ना लागब सजनी' सामंती संस्कार में पलल-बढ़ल अइसन दम्पत्ति के कहानी ह, जे अपना-अपना जिद आ मूर्खता से आपन, अपना कुल-परिवार आ संस्कार के भंटाधार कर के रख देत बा आ बूझत बा कि प्रतिज्ञा भा वचन निभा के यश पावत बानीं। सवत के लरिकन के प्रति डाह आ घृणा मानव जीवन के एगो मनोवैज्ञानिक सत्य ह। ई मनोरोग तब अउर बढ़ जाला जब एगो सवत के कवनो संतान ना रहेला चाहे रहबो करेला त' खाली लरिकी। इहे मनोरोग एह कहानी में जीतन राय के पहिली मेहरारू के धइले बा, जेकरा खाली एगो लरिकी बाड़ी। ईर्ष्या के आग में जरत, ऊ कबो नइहर, कबो ममहर त' कबो कवनो सखी के घरे खोभसन खात, दिन ढोवत आखिर अपने दुआरी आके मर जात बाड़ी। जीतन राय उनका रंथी के कान्ह त' नइखन देत बाकिर बहुत कहला-सुनला पर मुँहे आगी दे देत बाड़े। एह कहानी में जीतन राय के बड़की पतोह केसा देवी के सहृदय चरित्र आदर्श स्थापित करत बा। अइसहीं तुलना में एगो छोट कहानी 'अपसगुनी' में सवत के बेटी आदर्श स्थापित करति अपना बाप आ अपना सवतेली महतारी (जे उनकर मउसी ह) के अपना किहाँ रखे आ इलाज करवावे के बात करति बा। 'पचरूखिया वाली' कहानी में सासु आ 'गलती केकर, सजा केकरा में' आपन सहोदरा बहिन, स्त्री-कष्ट के कारक बा लोग। 'पचरूखिया वाली' में त' पचरूखिया वाली के सासु उनके दरनापा देत मुआइए घालत बाड़ी।

एक तरह से देखल जाउ त' बिम्मी कुँवर सिंह के कहानियन में नारी विमर्श बा, बाकिर नारा वाला ना। खाँचा आ खाना में बँटाइल मानव से जबरजस्ती अलगा कइल ओकरे कवनो सम्बन्ध विशेष के लँगटे-उघारे क' के मुक्ति के नारा लगवावे में लेखिका के कवनो दिलचस्पी नइखे। ऊ शरीर के मुक्त-विलास के ना, प्रेम, समर्पण आ भक्ति के पैरोकार बाड़ी जे उनकरा एगो दोसर सुंदर कहानी 'प्रीत के कोहबर' में लउकत बा, जहाँ एगो विधवा नारी तमाम कष्ट उठावत, अपना पति के सोचल सामाजिक हित के कार्यन के सफल अंजाम तक चहुँपावति बा।

संग्रह में 'साँस के बोझा', 'बड़ा बेआबरू भइनी ए गोरिया तोहरा खातिर', 'गुड़ कि गुलाब, 'घूँघट' आ 'दिया ले ल' जइसन कहानी सुखांतक बाड़ी स यद्यपि 'साँस के बोझा' आ 'दिया ले ल' में दुख-दरद के कुछ गहिर रेखा जरूर लउकत बाड़ी स।

कहानीकारा के पासे अनुभव बा, भाषा के ताकत के समझ आ ओकरा अनुप्रयोग के अकिल बा, एह से कहानी सरल, सहज आ सरस बन परल बाड़ी स। कहानी के शीर्षकन के नाँव रखे में जरूर ध्यान देबे के जरूरत रहे। कथ्य प्रधान भा भाव प्रधान कथा के शीर्षक चरित्र प्रधान ना राखल चाहत रहे। विरोधाभाषी कथनन से भी बचे के चाहत रहे, जइसे, 'कान्ही ना लागब सजनी' कहानी के क्रमागते पैराग्राफन में ई भूल भइल बा जहाँ कथा-नायक जीतन राय के व्यक्तित्व के वर्णन करत कहानीकारा कहत बाड़ी-

"जीतन राय जी बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के मरदाना रहुअन। मास-मदिरा के कबो हाथ ना लगावत रहुअन।" - (पृ. 20/पैरा नं 4)

"जब दूनो बेटा कुस्ती सीखे लागल लोग त जीतन राय जी उ दूनो लोग खातिर बढ़िया पुस्टई भोजन के बेवस्था करे लगले। उ अपने हाथे मीट-मछरी बना के दूनो जना के खियावस।" - (पृ. 20/पैरा नं 5)

भोजपुरी कहानियन के अपना पहिल संग्रह से बिम्मी कुँवर बहुते आशा जगा रहल बाड़ी। सबसे बड़ बात बा, ऊ कहानी के कहानी अस कहत चलत बाड़ी, बौद्धिक आग्रह भा पूर्वाग्रह से ओकरा सहज प्रवाह में खलल नइखी डालत। कहानी कला के मूल इहे ह। एह से 'कान्हीं ना लागब सजनी' के अधिकांश कहानी सफल बाड़ी स। 卐卐

गजल

हादसा कुछ एह तरे के हो गइल
लोग दुश्मन अब घरे के हो गइल

रोप गइलें बीज बाबा बैर के
सात पुश्तन तक लड़े के हो गइल

अब गिलहरी ना रही एह गाँछ पर
वक्त पतइन के झरे के हो गइल

जब से लाठी गाँव के मुखिया बनल
साँढ़ के छुट्टा चरे के हो गइल

आँख में कुछ फिर उठल बा लालसा
आँख में कुछ फिर मरे के हो गइल

प्यार के अब जुर्म चाहे जे करे
नाम 'भावुक' के धरे के हो गइल

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

डॉ. संध्या सिन्हा

भोजपुरी कथा-साहित्य के समृद्ध करत गाँव के मोह

भोजपुरी कथा साहित्य अपना विकास के एगो लमहर दूरी तय कइले बा। एह यात्रा में कई गो मील के पत्थर कहानी अइली सं। भोजपुरी कहानी साहित्य के भंडार भरे, गुणवत्ता आ आधुनिकता से सजावे के चौतरफा प्रयास लगातार हो रहल बा। एही प्रयास के क्रम में जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद से प्रकाशित भोजपुरी कहानी संग्रह "गांव के मोह" के विशिष्ट स्थान रहल बा। सन 2005 में कन्हैया सिंह 'सदय' के संपादन में प्रकाशित 'गांव के मोह' में कुल नौ गो कहानीकार के अठारह गो कहानियन के (सभे के दू-दू गो) के संग्रह कइल गइल बा। संपादकीय में वरिष्ठ कथा-मर्मज्ञ श्री सदय जी भोजपुरी कहानी के विकास यात्रा के सुसंगत चर्चा करत संग्रह में संकलित कहानियन के हल्का सा परिचय देत बहुत सरल सहज अभिव्यक्ति रख ले बानी।

संग्रह के पहलकी कहानीकार डॉ. संध्या सिन्हा के दूगो कहानी बा। दुनूं कहानी में कहानीकारा नारी-मन के परत खोलत आज के युग में मेहरारून के बदलत प्रगतिशील विचारधारा आ अदम्य जीवनी शक्ति के सुंदर सहज चित्रण कइले बाड़ी। 'जीये के चाह' कहानी में जीवन के भीषण विडंबना आ विपरीत परिस्थिति में मेहरारू आपन युग स्वयं रहल बाड़ी। संपादक एकरा के सक्रिय कहानी के कोटि में रखले बाड़े। 'आग' एगो मनोवैज्ञानिक कहानी बा, जेमे स्त्री मन के अवचेतन इच्छा के अभिव्यक्ति बा। शिल्प बहुते आधुनिक आ संवादपूर्ण बा। कहानी में नारी के जिजीविषा आ संघर्ष के ताना बाना बुनल बा।

कथा संग्रह में अगिला कथाकार सुरेश कंटक के 'बबुआ' आ 'नेताजी के बैल' बा, जवना मे कांटक जी आज के युग के सच्चाई आ मूल्यक्षरण के साथे परिवार विघटन के समस्या प चोट करतारन। 'नेताजी के बैल' कहानी में मशीनीकरण के युग मे आदमी के घटत मूल्यन,राजनीति के विद्रूप रूप आ नवीन चेतना के झलक आ रहल बा। शहर व ग्रामीण परिवेश के सुसंगत सुंदर प्रस्तुति बा। भोजपुरी के पुरोधा रसिक बिहारी ओझा जी के कहानी 'बाबा के हुक' में गांव आ कृषि संस्कृति के छिझत दशा के वर्णन एगो संस्मरण आत्मकथा के रूप में बा जे में टूट रहल मूल्य के प्रति चिंता व्यक्त कर रहल बिया। एही से सम्पादक एह के 'अकहानी' कह रहल बाडन। 'ऊ दिन' भी सुन्दर संस्मरणात्मक शिल्प से सजल कहानी बा, जेमें गांव आ कृषि संस्कृति के चित्रण बा। एह कहानी के पढला से परिवर्तन के अंदाजा लाग रहल बा। अगिला कहानीकार ब्रजमोहन राय 'देहाती' जी बानी जे एगो पुरहर व्यंग्यकार के रूप में भी चर्चित बाड़न। मानवीय चेतना से ओत प्रोत पहिलकी कहानी 'भेदिया' में निजी स्वार्थ के अमानवीयता के सजीव चित्रण बा आ मानवता के प्रतीक नायक 'भेदी' के साहस के सुन्दर चित्रण बा। दुसरकी कहानी 'डोली' में समाज में व्याप्त कुरितियन के साथै पियक्कड़ गरीब पिता के बेटी के दुरावस्था के मार्मिक चित्रण बा। भाषा के भोजपुरियत आ खांटीपन इहाँ के कहानियन के विशेषता

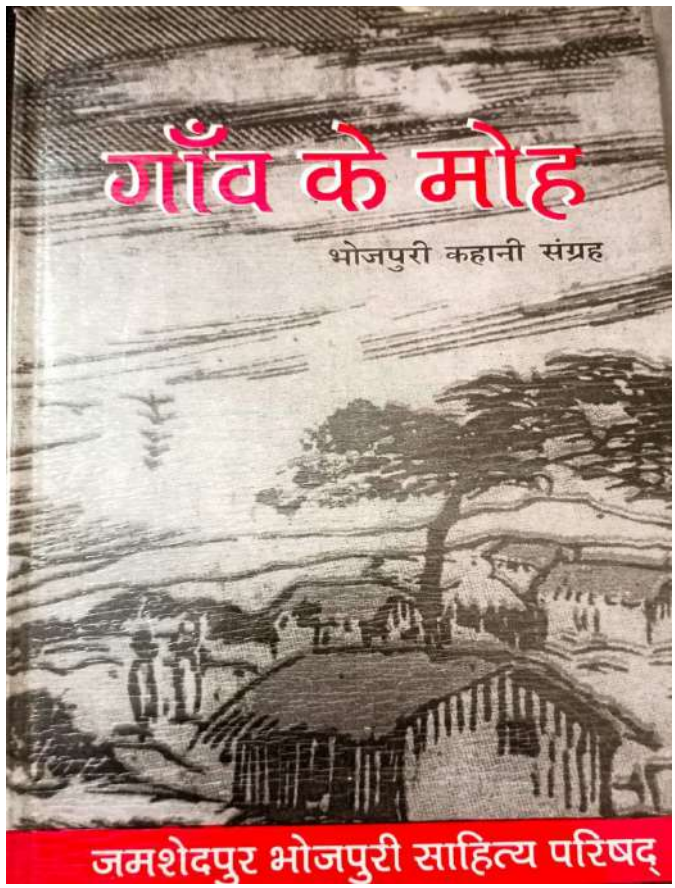

किताब: गाँव के मोह
सम्पादक: कन्हैया सिंह 'सदय'
विधा: भोजपुरी कहानी संग्रह
प्रकाशक: जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्
प्रकाशन वर्ष : 2005
मूल्य : 80 रुपये

बा। जय बहादुर सिंह जी अगला कहानीकार बानी जिनकर कहानी 'बांझ के बेटा' एगो लइकी के अविवेकी प्रेमवियाह के निर्णय के कुपरिणाम के चित्र बा। कहानी 'गुरुजी' में देश के बदलत सामाजिक संस्कार के प्रति चिंता के सजीव चित्रण बा। भाषा सहज, सरल बा। अगला रचनाकार कन्हैया सिंह सदय भोजपुरी कहानी के सशक्त हस्ताक्षर बानी जिनकर कहानी 'माटी के मोह' में पीढ़ी के टकराव मनोवैज्ञानिक उहापोह के सुंदर चित्रण बा आ दुसरकी 'के आपन' कहानी के बुनावट में सामाजिक मूल्यन के गिरावट के प्रश्न से कथाकार जूझ रहल बाड़े। शिल्प के दृष्टि से कहानी आधुनिक आ सामायिक बा।

अगिला कहानीकार अरुण अलबेला जी के कहानी 'समधी' रेखाचित्र शैली मे बा जेमे संवाद शैली से दहेज प्रथा प चोट कइल गइल बा। सामाजिक कुरीतियन आ नशाखोरी प चोट करत दुसरकी कहानी 'भइल भिनुसार' में सकारात्मक अंत कहानी के सार्थक बना रहल बा। कहानीकार अभय ओझा के कहानी 'सही श्रद्धांजलि' आ 'घुन' दूनूं समाज मे व्याप्त भ्रष्टाचार के पोल खोलत बिया। जहाँ पहिलकी संपत्ति के बंटवारा आ वरिष्ठ नागरिक के प्रति चिंता के प्रश्न से जूझ रहल बा उहईं दुसरकी कहानी राजनीतिक व्यवसायिक भ्रष्टाचार के प्रति मार्मिक आक्रोश के अभिव्यक्ति कर रहल बा। दूनूं कहानी आज के परिवेश के जटिल प्रश्नन से जूझ रहल बा आ दूनूं कहानी सुखांत होखे से अंत होते-होते आशा के जोत जगा रहल बा।

अगिला आ संग्रह के अंतिम कहानीकार अजय कुमार ओझा के दुगो कहानी 'दांपत्य' में वर्तमान दौर के दउरत भागत जिनगी में दांपत्य प्रेम के बचावे के जुगत देखाई दे रहल बाटे। 'आसिरबाद' में स्त्री के उदारता के मार्मिक चित्रण बा जे युग-युग से भारतीय समाज के ज्वलंत प्रश्न बनल रहल बा। कहानी मेहरारून के पक्ष मे सामाजिक कुरितियन, मूल्य-क्षरण आदि प चोट कर रहल बिया।

कुल मिलाके 18 गो कहानियन के संकलन में कथ्य मुख्यतः सामाजिक कुरीति, मूल्य क्षरण, स्त्री के दुर्दशा, नशाखोरी से उपजत समस्या, बेरोजगारी, वृद्ध-विमर्श,अवसरवादिता आदि के अनावरण प अवलंबित बा। भाषा सहज सरल बा। कई गो कहानियन मे भाषा खांटी भोजपुरी बा जबकि कई गो मे शहरी आ आधुनिक संस्कृति से लिहल गइल शब्दन के समुचित प्रयोग बा। कहानी के शिल्प कई गो में रेखाचित्र आ संस्मरण के सीमा के स्पर्श कर रहल बा त कई गो मे संवाद के सुन्दर योजना बा। कहल जाला कि कहानी उहे सार्थक होले जे अपना समय आ समाज के समस्या से जूझत ओकर समाधान प्रस्तुत करेले। 'गाँव के मोह' के सभ कहानी एह कसौटी प खरा उतरत बा। भोजपुरी के कथा साहित्य के समृद्ध करे में 'गाँव के मोह' के सार्थक योगदान बा। 卐卐

गजल

हमरा विश्वास बाटे कि हम एक दिन
अपना सपना के साकार करबे करब
लाख घेरो घटा आ कुहासा मगर
बन के सूरज कबो त निकलबे करब

हर डगर बा नया, हर गली बा नया,
लोग अनजान बा, हर शहर बा नया
हौसला बा अउर, पास में बा जिगर
जहवाँ जाये के बाटे, पहुँचबे करब

पेट से सीख के केहू ना आवे कुछ,
एगो अपवाद अभिमन्यु के छोड़ दीं
सीखते-सीखते लोग सीखे इहाँ,
ठान लीं जो सीखे के तऽ सीखबे करब

पहिले मंजिल चुनीं सोच के दूर ले
राह फिर तय करीं योजना के तहत
लेके भगवान के नाम चलते रहीं
सोचते ई कि हम कर गुजरबे करब

बीच दरियाव में आके लौटे के का,
पीछे मुड़-मुड़ के देखे के, सोचे के का
जे भइल से भइल, जे गइल से गइल
पार उतरे के बा तऽ उतरबे करब

मौत मंदिर में, मस्जिद में, बाजार में,
मौत संसद में, घर में आ बस-कार में
तब भला मौत से डर के काहें रुकीं
मौत आई तऽ कतहूँ त मरबे करब

ई अलग बात बा आज ले सीप में
हमरा हर बेर 'भावुक' हो बालू मिलल
पर इहे सोच के अभियो डूबल हईं
एक दिन हम त मोती निकलबे करब

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

गँवई जिनगी का शब्द चित्र - काठ के रिश्ता

जब कवनों उठत अंगुरी के जबाव बनिके किताब सभका सोझा आवेलीं सन, त ओकरा से सहज में नेह-छोह जुड़िये जाला। मन-बेमन से कुछ लोग सोवागत करेला, ढेर लोग ओहसे दूरी बनावे के कोसिसो करत भेंटाला। भोजपुरी भाषा के किताबन के संगे घटे वाली अइसन घटना के सामान्य घटना मानल जाला। अंगुरी उठावे वाला लोग अफनाये लागेलन। उनुकर उठलकी अंगुरिया ढेर-थोर पीसात बुझाये लागेले। भोजपुरी में गद्य लेखकन के कमी त बा बाकि सुखाड़ नइखे। 'काठ के रिश्ता' के रिस्तन के अइसने कुछ सवालन के जबाव लेके सोझा आइल बाटे। भोजपुरी भाषा में कहानी लेखन पहिलहूँ होत रहल बा आ अजुवो हो रहल बा। बलुक ई कहल जेयादा ठीक रही कि पहिले से बेसी हो रहल बाटे। नवहा आ इलीट लोग अपना माई भाषा के संगे जुड़ के ओकर समरिध करे में आपन जोगदान दे रहल बा। जवन सराहे जोग बा।

भोजपुरी भाषा खातिर आजु के समय गंवे-गंवे सही,सुखद हो रहल बाटे। कहानी संग्रह 'काठ के रिश्ता' में पाँच गो लेखक लोगन के 24 गो कहानियन के संकलित कइल गइल बाटे। एह कहानी संग्रह के भूमिका भोजपुरी के नामचीन साहित्यकार डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव जी लिखले बानी। संग्रह के कुल्हि कहानियन का कहानीकार लोगन पर श्रीवास्तव जी बहुते बारीक दीठि डलले बानी, जवन उहाँ के लिखल भूमिका 'एगो दृष्टि' के पढ़ते दृष्टि गोचर होखे लागत बा आगु बढि के किताब में संकलित कहानियन के पढ़े खातिर पढ़निहार के मन में ललक जगा रहल बाड़न। ई संकलन भोजपुरी भाषा में भोजपुरिया माटी के सोन्ह महक लेके आइल बाटे, जवन सोवागत करे जोग बाटे। कुछ लोगन के लागेला कि भोजपुरी के बात भोजपुरी में ना, बलुक दोसर भाषा में करे के चाही। अइसन लोग भोजपुरी भाषा के सम्प्रेषण के तागत पर बरियाई अंगुरी उठावत, अपने जग-हँसाई करावेला। ई अइसन भाषा बिया जवन कवनों आफत-बीपत के लांघत हरमेसा फरत-फूलत रहेले,एकरा ला केकरो से प्रमाण पत्र के जरूरत नइखे। 'काठ के रिस्ता' अपना संगे कई गो चिजुइयन के जबाबो लेके आइल बा, जवन ढेर लोग के कवनो ना कवनो तरे दियरी जरूर देखाई।

'काठ के रिस्ता' जहवाँ अपने में जनक देव 'जनक' आ मृत्युंजय 'अश्रुज' जइसन अनुभवी कहानीकारन के समेटले बाटे, उहवें लवकान्त सिंह 'लव', प्रभाष मिश्रा आ दिलीप कुमार पाण्डेय जइसन युवा जोशो कुलाँच मारि रहल बाटे। संकलन के नाँव बरबस

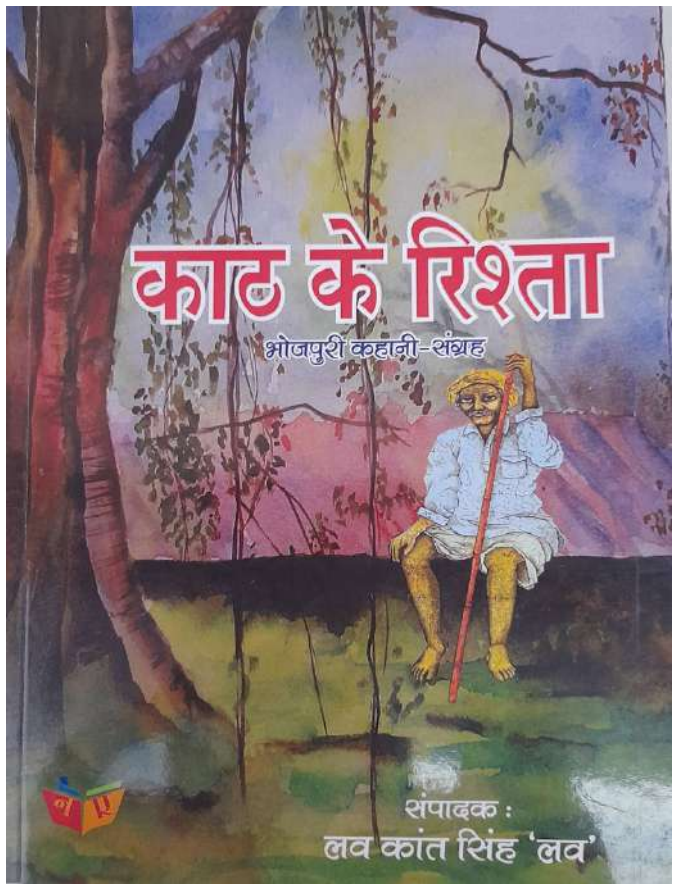

किताब- काठ के रिस्ता
संपादक- लवकान्त सिंह 'लव'
विधा: कहानी
प्रकाशक: नव जागरण प्रकाशन, नई दिल्ली-75
प्रकाशन वर्ष : 2019
किताब के मूल्य: रु 250/- मात्र

सबका के अपना ओरी घींच रहल बाटे। जवना घरी में आजु के समाज रिस्ता-नाता आ नेह-छोह से अपना के अलगावत देखात बाटे, अपनही में लोग केन्द्रित हो रहल बाटे। माई-बाबूजी का संगे घर के पुरनियन से दूर हो रहल बाटे। आजु देश आ समाज में रिस्तन खाति पसरल बेरुखी केकरो से छिपल नइखे, सभे के एकरा ला सोचे के मजबूर कर रहल बाटे। जवना के परिणाम देस में लगातार बढ़ रहल वृद्ध आश्रम सभे के सोझा बा।

मृत्युंजय 'अश्रुज' जी जहवाँ अपने कहानियन का माध्यम से समाज के कुरीतियन पर आघात करत देखात बाड़ें, उहवें उ समाज के अइसन चिजुइयन से बहरा निकसे के उचित समाधानो देत ताड़ें। समाज में पसरल कुरीतियन पर दू-टूक कहल आजु के समय में ढेर दुरूह बाटे। बाकिर कहानीकार बेझिझक ओह पर चोट कर रहल बाड़ें। मृत्युंजय 'अश्रुज' जी मझल कहानीकार बाड़न, उनुका कहानियन में पढ़वइया लोगन के बान्ह के राखे जोग सब कुछ बाटे। कतों-कतों त पढ़वइया लोगन के लोर पोंछे खातिर मजबूर कर देत बाड़न।

युवा लेखक, कहानीकार आ रंगमंच के मझल कलाकार लवकान्त सिंह 'लव', जे एह कहानी संग्रह के संपादनों कइले बानी,उनुका हर कहानी के कथानक जोरदार बाटे। लवकान्त सिंह अपने कहानियन में कतों-कतों काल्पनिक जरूर भइल बाड़ें,बाकि तबो उनुका कहानी पढ़वइया लोगन के अंत तक बान्ह के राखे में सक्षम बाड़ी सन। वर्तनी आ प्रूफ के असुद्धि जरूर खटकत बाटे, तबों कहानी संग्रह 'काठ के रिश्ता' अपने नाम के सार्थक करत देखाता।

जनक देव 'जनक' के कहानियन में अनुभव के रंग साफे लउकत बाटे। जिनगी के अलग-अलग रंगत के दुनियादारी के सीसा में सजावल गइल बाटे। कुल्हिए कहानी अपने-अपने तरह के बरियार कहानी बाड़ी स।

भोजपुरी परिवेश से बरियार जुड़ाव अपना में समेटले प्रभाष मिश्रा अपने सगरी कहानियन के गँवई रंगत में सराबोर करत देखात बाड़ें। अइसन जीवंतता उहवें भेंटाले जहवाँ गँवई जिनगी जियला के अनुभव होखे। बाल परदेशी, हरजाना, कनिया एही रंगत के कहानी बाड़ी सन।

युवा कहानीकार दिलीप कुमार पाण्डेय 'मनियाडर' से सभका धियान अपना ओर घींच रहल बाड़ें। एक बेर फेर भोजपुरिया कहानीकार लोग आपन सजगता आ जीवंतता से भोजपुरी के भंडार भर रहल बाड़ें। समय आ समाज दूनों पर आपन सजग नजर रखले बाड़ें। एकरा के शुभ संकेत मानल जाई।

प्रूफ का अनदेखी का कारने भइल गलतियन के अनदेखी करत आगु बढ़े के ताक बाटे। कहानी संग्रह पढ़निहार लोग के मन मिजाज पर आपन छाप छोड़ रहल बाटे। नवहा आ अनुभव के ई खिचड़ी बढ़िया पाकल बा आ नीमन सवादो बा। संपादक लवकान्त सिंह जी अपना जिमवारी के संगे न्याय करे के पुरजोर कोसिस कइले बानी। भोजपुरी साहित्य जगत अइसने लोगन के हरमेसा सरहले बा। अजुवो भोजपुरी साहित्य जगत अपने अइसन पहरुवन के दिल खोल के शुभकामना के संगे सोवागत कर रहल बाटे। उमेद के संगे बिसवासो बाटे कि पढ़वइया लोग एह कहानी संग्रह के अपना नेह-छोह से जरूर नवाजिहे। एही सुखद शुभकामना के संगे..... !卐卐

गजल

दुख-दरद या हँसी या खुशी, जे भी दुनिया से हमरा मिलल
ऊहे दुनिया के सँउपत हईं, आज देके गजल के सकल

जब भी उमड़ल हिया के नदी, प्यार से, चोट से, घात से
बाढ़ के पानी भरिये गइल मन के चँवरा में बनके गजल

रात के कोख में बाटे दिन, दिन के भीतर छुपल बाटे रात
गम के भीतर खुशी बा अउर हर खुशी लोर में बा सनल

बात मानऽ ना मानऽ मगर कुछ ना कुछ बात बाटे तबे
पाँव में हमरा काँटा चुभल, दर्द तहरा हिया में उठल

हम त 'भावुक', गजल-गीत में, छंद के बंध में बंद हो
बात कहलीं बहुत कुछ मगर बा बहुत कुछ अभी अनकहल

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

दिव्येन्दु त्रिपाठी

विविध विषयन के सारगर्भित चर्चा

आपन कृतित्व में व्यावहारिकता आ सर्वग्राह्यता के पुट देबेवाला, गंभीर अध्येता, विद्वान विश्लेषक स्व. नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी ख्याति अर्जित कइनी एगो कुशल आ गंभीर गद्यकार के रूप में उहाँ का लिखल निबंध आ समीक्षा भोजपुरी गद्य के इतिहास में एगो खास स्थान राखेला। उहाँ द्वारा लिखल आ संपादित कइल पुस्तकन के बहुते प्रशंसा आ स्वीकृति मिलल। ''नवरंग'' उहाँ द्वारा लिखल गइल एगो महत्वपूर्ण निबंध संग्रह ह जेकरा में कुल नौ गो निबंध संकलित बाड़े स। एकरा में चार गो निबंध आकाशवाणी,पटना के भोजपुरी कार्यक्रम 'आरती' में प्रसारित भइल आ चार गो भोजपुरी के विभिन्न पत्रिकन में समय-समय प छपल रहे।

नवरंग के आरंभिक चार गो निबंध भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विविध विषयन प केन्द्रित बा जवना में भाषा-व्याकरण, समीक्षा-पद्धति, कहानी आ अनुसंधान-प्रक्रिया प्रमुख रूप विवेचित भइल बाटे। पाँचवाँ निबंध आमुख ह जवन कि ''कालिदासकृत अभिज्ञान शाकुंतलम'' प आधारित शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी द्वारा लिखल भोजपुरी नाटक ''शकुंतला'' खातिर लिखल गइल रहे। अंतिम चार गो निबंध विभिन्न सामाजिक मुद्दन आ विषयन प केन्द्रित बा। एह प्रकार से ई संकलन विविध भावन आ विचारन के समाहार बा आ जेकरा के पढिके पाठक काफी कुछ सीख सकत बाटे।

पहिलका निबंध ''भोजपुरी अनुसंधान के प्रक्रिया'' भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति में अनुसंधान करेवाला शोधकर्मियन आ विद्वानन खातिर बडा उपयोगी बा। एकरा में अनुसंधान के वैज्ञानिक प्रणाली प गहराई से चर्चा भइल बा। दोसरका निबंध ''भोजपुरी के व्याकरण दर्शन'' में भोजपुरी भाषा के मानकीकरण खातिर जरूरी विन्दुअन आ पक्षन के चर्चा भइल बा। तीसरका निबंध भोजपुरी समीक्षा के मानदंड प केन्द्रित बा। समीक्षा के संदर्भ में श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी के दृष्टिकोण एकदम व्यावहारिक बाटे। राउर कहनाम बा जे भोजपुरी में लेखन ओह रूप में होखे के चाहीं जेकरा से गाँव के मनई भी आसानी से बूझ सके। रउवा एह बातके स्वीकार करत बानी जे जहाँ ले बनि सके भोजपुरी के आपन मौलिक आ खाँटी शब्दन के प्रयोग होखे के चाहीं। बाकिर शब्द-चयन का ममिला में रउवा अतिवाद(extremism) के समर्थक नइखीं। रउवा अनुसार हिन्दी के शब्दन चाहे ऊ तत्सम होखे भा तद्भव जरूरत का अनुसार ग्रहण कइल जा सकेला। एह विषय प विद्वान लोग

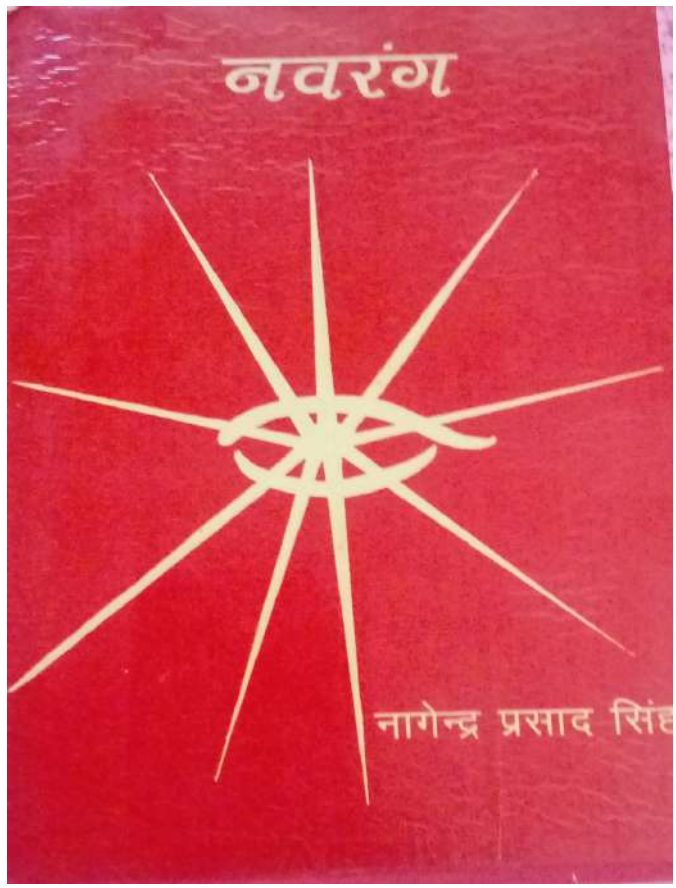

कृतिः नवरंग
लेखकः नागेन्द्र प्रसाद सिंह
विधाः निबंध संग्रह
प्रकाशकः लोग प्रकाशन
प्रकाशन वर्षः 1978
पृष्ठ संख्याः 40
मूल्यः 25 रु (1997 संस्करण)

में तनि विवाद रहेला। जे अतिशुद्धतावादी बा ऊ हर हाल में भोजपुरिए शब्दन के हिमायत करेला। कुछ लोग जरूरत के अनुसार हिन्दी भा संस्कृत शब्दन के उपयोग के बात करेला। बाकिर नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी के अनुसार कम से कम निबंध आ समीक्षा में हिन्दी आ संस्कृत के शब्द लिहल जा सकेला। भोजपुरी समीक्षा प चर्चा करत खा रउवा प्रमुख रूप से पाँच गो कसौटियन के चर्चा कइले बानी। ऊ कसौटी बाड़ी स-१) वस्तुगत दृष्टि २) परिवेश के ज्ञान, ३) तटस्थता, ४)उद्देश्य, ५) भाषा-शैली।

भोजपुरी कहानी प चर्चा करते हुए रउवा एह बात प जोर देत बानी जे कहानियन में भोजपुरी संस्कृति, भोजपुरी जनजीवन, परिवेश आ मुद्दन के रुपायित होखे के चाहीं। ग्रामीण भोजपुरिया समाज के रावा दूगो वर्ग मनले बानी। पहिलका वर्ग में खेतिहर मजदूर, छोट किसान आ बाकी साधनहीन लोग शामिल बा आ दोसरका वर्ग में बड़ किसान, जमीदार-परिवार के लोग आ व्यापारी आदि शामिल बा। कहानियन में ई वर्गन का जीवन से संबंधित विषयन आ समस्यन के उठावेके प्रयास होखेके चाहीं। एह प्रकार कहानी का विषय में राउर दृष्टि एकदम प्रगतिजीवी बाटे।

सत्तर का दशक में अरूणाचल प्रदेश के परिदृश्य, ओने के समाज-संस्कृति आ जनजीवन प बढ़ा वस्तुनिष्ठ दृष्टि से प्रकाश परल बा "भारत के पुरबी अँचरा :अरुणाचल प्रदेश" शीर्षक निबंध में। तब अरूणाचल राज्य ना बलुक एगो केन्द्र शासित प्रदेश रहे।

"गाँव के अझुरहट" शीर्षक निबंध में गाँवन में व्याप्त सामाजिक आ आर्थिक विसंगतियन प चर्चा भइल बा ।एकरा में ईहो चर्चा बाटे जे ग्रामीण लोग शादी-बियाह, छठी-बरही आ श्राद्ध आदि में आपन औकात से आगे बढ़िके खर्चा करेला आ जेकरा चलते ऊ करजा के कुचक्र में फँसत जाला। गाँव के लोग बेबजह केस-मूकदमो का फेरा में परल रहेला। सही में ई निबंध सत्तर-अस्सी के दशक के यथार्थ के बढिया वृत्तचित्र खींचत बाटे ।

आठवाँ निबंध "प्रबंध में मालिक मजूर के साझ" न्यायपूर्ण आदर्श के समाजवादी चिंतन का आलोक में लिखल गइल बा। एकरा में समाजशास्त्रीय आ अर्थशास्त्रीय चिंतन के पूरा-पूरा प्रभाव झलकत बा। ओह समय तक भारतीय संविधान के प्रस्तावना में "समाजवाद" शब्द जुड़ चुकल रहे। अंतिम निबंध "बिहार के ग्राम पंचायत चुनाव" 1978 में भइल पंचायत चुनाव का कुछ दिन पहले लिखाइल रहे। एकरा में एह बात के चिंता बा जे कइसे व्यवस्थित आ शांतिपूर्ण ढंग से चुनाव हो पाई। अवरु कइगो जानकारी ऐकरा में दीहल गइल बा । एकरा में एह बात के जिक्र बा जे ऊ चुनाव आठ-नौ बरिस के बाद भइल रहे आ तब मतदाता के उमिर 21 से घटाके 18 कइ दीहल गइल रहे। बिहार के पंचायतन के सामने उपस्थित विषयन आ समस्यनो के एमे चर्चा बा आ ईहो जिक्र बा जे कइसे चुनावन में तब छल-प्रपंच,बूथ कैप्चरिंग आ लाठी-गोली होत रहे (जवन आजो नवीन रूप में चल रहल बा)।

ई संकलन के आदरणीय नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी आपन माई के समर्पित कइले बानी। कुल मिलाके ई संकलन ऐतिहासिक आ सदासंग्रहणीय बा। एकरा में भाषा आ व्याकरण संबंधी सुझाव विशेषरूप से ग्रहण करे लायक बाटे। समीक्षा आ कहानी लेखन खातिर दीहल गइल निर्देश समीक्षक आ कथाकार खातिर हमेशा उपयोगी रही। सामाजिक विषयन प लिखाइल निबंधन के वस्तुनिष्ठता उल्लेखनीय बा जवन कई गो सामाजिक तथ्यन के समेटले बा। ई निबंध संग्रह नवका कलमकार लोग के हमेशा आलोकित करत रही। 卐卐

गजल

हर कदम जीये-मरे के बा इहाँ
साँस जबले बा लड़े के बा इहाँ

जिन्दगी जीये के मकसद खोज के
ख्वाब के मोती जड़े के बा इहाँ

स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहें
जे करे के बा, भरे के बा इहाँ

फूल में तक्षक के संशय हर घरी
अब त खुशबू से डरे के बा इहाँ

जिन्दगी तूफान में एगो दिया
टिमटिमाते ही जरे के बा इहाँ

सुख के मोती, सीप के अब खोज मे
दुख के दरिया तय करे के बा इहाँ

जिन्दगी के साँच बस बाटे इहे
एक दिन सभका मरे के बा इहाँ

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

रामदेव शुक्ल

भोजपुरी के अँजोरिया: डायरी नीक-जबून

ननदी का बोलिया में बने रसियाव रे !
सरगो से नीमन बाटे सइयाँ के गाँव रे !

जेकर लिखल आ गावल गीत हवे, उनही की डायरी के एगो झलकी–''हमनी किहाँ बरती (व्रत करेवाली) खा पी के आराम ना करेलिन, आपन मए कामो निपटावत रहेलिन। ओइसहूँ बइठियो के रहेके होखे तबो दूधवाली खीर नुकसाने पहुँचाई, भलहीं बुझाउ भा नाहीं। रसियाव खाई आ टन–टन काम करत रहीं, देंहि हलुक लागेले। लउकियो–भात का पाछा ईहे बिग्यान बा। गैस आ एसिडिटी खातिर लउकी रामबाण हटे। भात से गैस बनी आ लउकी ओकरा के फरकावत रही अउर ऊर्जो बनल रही। धन्य रहन हमार पूर्वज, बात–बात में बिग्यान। हम त आजुओ कहबि कि लजाई सभे मति कि रसियाव देखि के लोग रउआँ के गरीब आ पुरान बूझे लगिहें। लउकी–भात आ रसियाव का परंपरा के जिंदा रहे दिहल जाव। एही प लउकजाबरि, अलुमकुनी, गादा के दालि, महुआ के लाटा, बजड़ा आ जोन्हरी के चिउरी, साँवा के भाका, टाडुनि के लाई आ दरिया–दही पर बात चले लागल अउर हमार कुछ बंगाली मित्र कबो अचरज से आ कबो भकुआ के हमनी के देखे लगलन।''

विमल जी भोजपुरी बिज्जन पर एक ठो किताब लिखि देई त ई कुल्हि मल्टीनेशनल मॉल आ बिग बजार में बिकाए लागी। भूजल तीसी आ तीसी–तिल–सोंठ मिलल गुड़ बिकाते बा। बिहार के एगो कंपनी के विज्ञापन जगह–जगह भीति पर लिखाइल बा– 'सत्तू ऑन, गैस गॉन'। बिमल जी जवने–जवने चीज के बखान कइले बानी, ऊ सब जेकरे जबान पर चढ़ि जाई ओकरा पास्ता आ पिज्जा नाहीं रुची।

विमलजी कवि गीतकार हरिवंश पाठक 'गुमनाम' के गीत के एक पाँती के मुखड़ा बना के एक दिन की डायरी में लिखले बानी–'दू–तिनिए दिन के उहाँ के संग आ पितृवत स्नेह के खुशबू आजुओ मन–प्राण में ओसहीं बसल बा आ जब–जब मन के आङन गमगमाला त उहाँका बरबस इयादि आ जाईले–

मटिया क गगरी पिरितिया क उझुकुन
जोगवत जिनगी ओराई
सगरी उमिरिया दरदिया के बखरा
छतिया के अगिया धुँआई ।'' (गुमनाम)

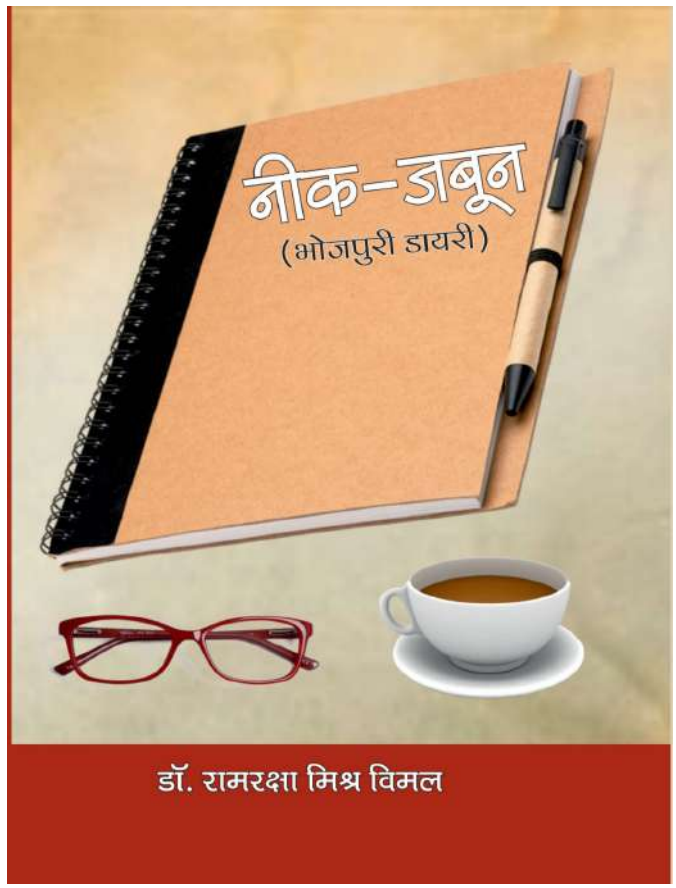

किताब: नीक-जबून
लेखक: डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल
विधा: डायरी
प्रकाशक: नमन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
प्रकाशन वर्ष: 2019
पृष्ठ संख्या: 120
मूल्य: (अजिल्द)110/-(सजिल्द)220/- रुपये

'उझुकुन' की जगहि पर राखे लायक शब्द हमके त कौनो भाषा में नइखे लउकत। 'सगरी उमरिया दरदिया के बखरा'-भाई लोगन के बँटवारा (जवने के प्रेमचंद अलग्योझा लिखले बानें) में केहू के बखरा में अन्न धन मिले आ दुसरका की बखरा में उमिरि भरि के दरद।

रीतिकाल के अजगुत कवि, जिनके आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'साक्षात रसमूर्ति' कहत रहीं, अपने विरह-वर्णन में एह बँटवारा के एह रूप में देखले हवें-"इत बाँट परी सुधि रावरे भूलनि, कैसो उराहनो दीजिए जू।" ई बखरा भगवाने के लगावल बाटें कि इत (इहाँ, हमरी भाग में) सुधि (प्रियतम के स्मरण) परलि बा आ उनके (प्रियतम के) हिस्सा में भुलाइल (विस्मृति) परल बा, तब ओरहनो कइसे दियाव आ के से दियाव ?

डायरी पढ़त जाईं त भोजपुरी समाज के संस्कृति के महक त मिलबे करी, गाँव-जवार के राजनीति शहरी समाज के नकल में केतना जहरीली हो गइल बा, लाकडाउन में नोकरिहन के कइसन दुर्दशा भइल बा, महेंदर मिसिर, भगवती प्रसाद द्विवेदी, ब्रजभूषण मिश्र, अधीर पिंडवी, महेश्वराचार्य जी, रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष' जी' अरुण मोहन भारवि अउर बहुत रचनाकारन के रचना के आत्मीय परिचय मिलि जात बा। भोजपुरी भाषा में अँगरेजी के शब्द कइसे रचि-बसि गइल बाटें- एकर सैकड़न उदाहरण मिलि रहल बा। नवका चलन के फेसबुकिया साहित्य के बधार के का पूछे के ! एह डायरी में स्मार्ट, सुन्नर आ सट-कट (शार्ट कट के बढ़िया रूपान्तर) जइसन प्रयोग अलगे मजा दे रहल बा। यूट्यूब पर भोजपुरी के जलवा देखले के आ भोजपुरी में अश्लीलता परोसले के प्रसंग आइल बा ।

भोजपुरी के लिखित रूप से जवन लोग फुहरकम बढ़ावेवाला गीतन के सुनिके चिन्तित बा, ओ सब के तनि मेहनत करे के चाहीं, तब्बे भोजपुरी के सिरजनहारन के इतिहास समुझले के अवसर मिली।卐卐

गजल

कइसन-कइसन काम नधाइल बाटे इंटरनेट पर
माउस धइले लोग धधाइल बाटे इंटरनेट पर

सर्च करीं जे चाहीं रउरा घरहीं बइठल-बइठल अब
सबके वेवसाइट छितराइल बाटे इंटरनेट पर

बेदेखल-बेजानल चेहरा से भी प्यार-मुहब्बत अब
अजबे-गजबे मंत्र मराइल बाटे इंटरनेट पर

जब-जब कैफे वाला कहलस सर्वर डाउन बा मालिक
तब-तब बहुते मन बिखियाइल बाटे इंटरनेट पर

रूस, कनाडा, चीन, जर्मनी, भारत, यू.एस या लंदन
एक सूत्र में लोग बन्हाइल बाटे इंटरनेट पर

शाली से जब पूछनी, 'काहो- दुल्हा कतहूँ सेट भइल'
कहली उ मुस्कात खोजाइल बाटे इंटरनेट पर

मन के अँगना में गूँजत बा 'भावुक' हो तोहरे बतिया
गोरिया के लव-लेटर आइल बाटे इंटरनेट पर

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

केशव मोहन पाण्डेय

बनारस के रस में पगल 'बंगड़ गुरू'

बनारस संसार के सबसे पुरनका शहरन में से एगो लोकप्रिय शहर हवे। ई हिन्दू धर्म में सबसे पवित्र नगर मानल जाला। बनारस के 'मंदिरन के शहर', 'भारत के धार्मिक राजधानी', 'भगवान शिव के नगरी', 'पंडा-पुजारियन के शहर', 'ज्ञान नगरी' आदि विशेषण से संबोधित कइल जाला। एह शहर के कण-कण में संगीत के सुर-लय-ताल बसेला त पग-पग पर विश्वनाथ बाबा के कृपा धूनी रमेला। एहिजा के धूरा भगवान भोलेनाथ के भभूत हवे त बेयार, व्यवहार के मादकता बढ़ावे वाली सगुनी बायन। एहिजा के पानी के बुन-बुन में गंगा माई के ममता बा त बानी के आखर-आखर में हिया-हिया के लगाव के मोहिनी-मंत्र। ई नगरी कबीर, बल्लभाचार्य, रविदास, रामानंद से ले के आजु ले के साहित्य के समृद्ध परंपरा के प्रेरक पूँजी हवे त पंडित रवि शंकर, गिरिजा देवी, पंडित हरि प्रसाद चैरसिया, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां आदि ले के लहरात संगीत के लहर के प्रमाण। बात ज्ञान, ध्यान चाहे पान के होखे भा अपने में मस्तमौला गुरू लोगन के अक्खड़ अंदाज के, बनारस के रस पोर-पोर से टपकेला। बाति दाँव-पेच सीखत-सीखावत कवनो अखाड़ा के होखे भा कवनो भाषा-भाव के उर्वर गाँव के, बनारस के रस केहू भुला ना सकेला।

कहे खातिर केहू कुछू कहे बाकिर भारत के समाज में महिला लोगन के योगदान कबो कम नइखे मानल गइल। बाति समाज के होखे, संस्कार के होखे भा साहित्य के होखे, हमनी के घर के नारी-शक्ति भले चउखट ना लांघ पावें त का, कलम के साधन बना के साहित्य के साधना हमेशा कइले बा लोग। बाति अपाला, लोपामुद्रा, गार्गी जइसे विदुषी के होखे भा 'बंगड़ गुरू' के रचे-सिरजे वाली विदुषी डॉ. सुमन सिंह जी के, नारी के अनुभवजनीत साहित्य सदा-सर्वदा समाज में लोकप्रिय रहल बा। आदरणीया डॉ. सुमन सिंह जी एगो अइसन जीवट साहित्यकार के नाँव ह, जे हमेशा दरियाव में सिल्लियो पड़ला पर धार के उल्टा चलि के अपना ढंग से दिशा देबे में माहिर हवे।

आजु भोजपुरी साहित्य के बारे में चुटकियो भर ज्ञान राखे वाला मनई में से शायदे केहू होई जे डॉ. सुमन सिंह जी के साहित्य से परिचित ना होई। जहवाँ ऊहाँ के सुभाव में समाज के रूढ़ि-परंपरा के अपना कलम से ठोंक-ठेठा के सोंझ करे के कूबत बा त अपना सजग आँखि से सबके आँखि में अंजोर भरे के जुगत बा। जे भोजपुरी में लिखत बेरा अपना भाषा के ठेंठ बनारसीपन वाली रवानी से कहानी के पाठक के अतल मन में आपन तल बनावत चलि जाला त भावुकता आ भाव के अइसन संसार के सिरजना करेला, जहवाँ से कवनो पाठक कबो जाए के ना चाहेलन।

भोजपुरी कथा-कहानी के माध्यम से भाषा आ भाव के सुखद, मयगर आ अपनापन वाला संसार के सिरजना करे में जवन गुन डॉ. सुमन सिंह जी के लेखनी में बसल बा, ऊ आजु के समय में बिरले कहीं मिली। बाति कहीं से शुरू होखे बाकिर ओकर रसधार पाठक के तारत-सम्हारत आपन बनाइए लेला। बाति एही कहानी-

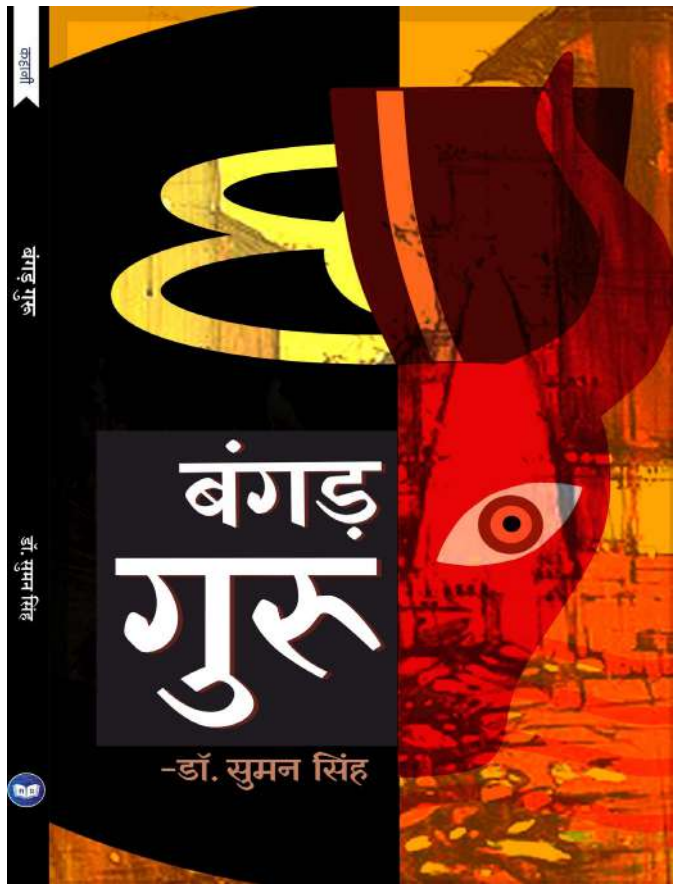

पुस्तक : बंगड़ गुरू
कथाकार : डॉ सुमन सिंह
विधाः कहानी संग्रह
प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट
मूल्य : 250 रुपया

संग्रह के कइल जाव; एहमें के कवनो कहानी उठावल जाव, लागेला कि काशी के कवनो अड़ी पर एह कहानी के कड़ी बनत होई। कवनो कुल्हड़ के चाय के चुस्की लेत कतहूँ बंगड़ गुरू अपना चेला-चपाटियन के साथे मिल जइहें। बंगड़ गुरू के अक्खड़पन होखे भा बनारसीपन, कहानी पाठक के कतहूँ छोड़े के तइयार नइखे। भोरे-भोर के घड़ी-घंटाल होखे चाहे कवनो नुक्कड़ पर के पत्ता के दोना में चाभत घुघुनी-रबड़ी-जिलेबी के सुस्वादु, कवनो घटना से व्याकुल मन में थिरता देत गुरू आ उनकर चेला-चपाटी मिलिए जइहें। भावन के भाषा में विश्वास बनवला के बाति होखे भा कोरोना महामारी के बेरा जागरूकता फइलावे के उपाय, एह किताब के कहानियन के एगो अलगे रंग बा।

'काशी, कोरोना अउर लाकडाउन' के एगो गलचाउर के दृश्य देखल जाव, "ए गुरू ! तकले से करोना नाही होई भाय। अरे दुई गाल बतिया लेबा त कवन बज्जर पड़ जाई। एक त लाकडउनवा ससुर साँसत में परान डलले ह अउर एक तू बाड़ा कि कवनों बतिये नइखा सुनत। चार दिन हो गइल, ना पूड़ी-कचौरी खाय के मिलल, ना भाँग छनाइल, ना खैनी ठोंकाइल। सबेरे-सबेर आज चैरसिया भइया क भी कुल आकी-बाकी पूरा कके अइलीं ह। एगो पान का माँगे चल गइलीं ह लगल ह कि उनकर पराने चल जाई। हमके देखते अगिया-बइताल हो गइलन हवें। कहत का हउवन कि... सुनत हउवा न गुरु? जाएदा। ना सुनबा त हम जात हईं। का एतना हमके खलिहर बुझत हउवा कि सील पर रसरी फेरत रहीं। जात हईं अब।"

एह पूरा किताब में बंगड़ के बंगड़ई पाठक के मन के मथ के बनारस के गली-गली पहुँचे के त विवश करबे करी, भोजपुरियन के अक्खड़पनो के रोचक रूप सामने ले आई। 'बाबा बोतलनाथ' के एगो दृश्य देखल जाव कि कवना भाव से कोरोना के विकराल रूप के वर्णन बा, जवना में सबके रोजी-रोजगार चउपट हो गइल रहल। देखीं,-"सबेरे-सबेरे कवन आफत-बीपत आ गइल कि धावत धमक अइले तूँ। समझावत-समझावत हम हार गइलीं बाकिर तू हउवे कि मनते ना हउवे। कहत-कहत हार गइलीं कि अब पहिले नियन बात ना रह गइल। रोजी-रोजगार करोना के भेंट चढ़ गइल। महिनन्न भइल अदिमी के दू जून ढंग से खात-पियत। तीज-त्योहार, हाट-ठाठ कुल बिला गइल। देस-बिदेस बीरान हो गइल। अदिमी जन क अपनहीं घर-दुआर कारावास हो गइल आ तोहके अब्बो सरग-सुंदरी देखात हईं। भाई हम त जानत रहलीं कि तू बुधिये क भसुर हउवा बाकी तू त! जा ए भाई...तू ना सुधरबा। हम कहत हईं कि चल जा इँहा से नाही त बोलियो-चाली बन करे के परी।"

एह किताब के सगरो कहनियन के सबसे रोचक आ सशक्त पात्र बंगड़ पाठक के हर रूप में मिल जइहें। ऊ कबो केहू के परेशान करत बाड़ें, कबो अपनहीं परेशान होत बाड़ें। कबो केहू के चिंता में गलत बाड़न त कबो केहू के चिंता के विषय बनल बाड़न।

चिंता त 'बंगड़-गुरू' के एकहक कथा रचत-सिरजत कथाकारो में बा। चिंता त ऊहाँ के एकहक शब्दन में बा। पाठक पढ़ि के भले गाल फाड़ के, दाँत चिआर के आ ताल ठोंक के हँसे, ठहाका लगावे, बाकिर लेखिका के आँखि से देखला पर ठाँवे-ठाँव लउकेला कि चिंता बनारस के सूखत रस के कारन ऊहाँ के हर पैरा में बा, हर शब्द-संवाद में बा। लेखिका चिंतित बानी कि सबहर रस के बरसात करे वाला, इतिहास-पुराण-धर्मशास्त्र आदि में मंडित बनारस में बाति-बाति में गारी के पइसार कहाँ से हो गइल? दुअर्थी शब्दन के प्रयोग के परंपरा कहवाँ से विकसित हो गइल? सामने वाला पर दाँव खेले, लंगड़ी मारे आ मन के ककोर के नून मले वाला क्रिया कब से चालू हो गइल? ई सब हमरे बनारस के कवना परिपाटी के सिरजत बाटे, कवना परंपरा के प्रारंभ करत बाटे?

अगर हम आपन बाति कहीं त स्नातक करत बेरा से बनारस जाए के बदा होखे लागल रहे। कवनो ना कवनो बहाने। बाकिर ओह बहाना में धार्मिक-पारंपरिक मौका ढेर रहे। उन्नीस सौ निनानबे में माई के ले के गइनीं। बाबूजी के ना रहला के बाद, गंगा नहान करावे। दू हजार आठ के बाद बनारस से हमार चित्त फाटि गइल। वाराणसी जंक्शन के प्लेटफार्म नं. पाँच, आरपीएफ थाना के एकदम सामने, हमरा जिनगी के एगो अइसन अध्याय के घटना घटल कि तबसे हमार दिने-दशा बदलि गइल। तबसे बनारस से डर लागे लागल। हमरा पत्नी के गहना-गुरिया से भरल अटैची पर केहू हाथ साफ क लिहल। पुलिस दू महिना ले आपन लाचारी रोअत सांत्वना देत रहल। बाकिर जब डॉ. सुमन सिंह जी से परिचय भइल त लागल कि संबंधन के एगो मजबूत धागा हमके बनारस से बान्हि दिहले बा। हम अपना पीड़ा से तड़पत भले एह शहर से आपन नाता तूरे के चहनी, बाकिर ई शहर छोड़ी ना।

'बंगड़ गुरू' के कहनियन के पढ़त बेरा मन के कवनो कोना में समय के पत्थर से दबाइल ऊ टीस फेर से हरिहर होखे लागल। बनारस के गंगा, ज्ञान, आध्यात्म, साहित्य, संगीत, स्नेह और संस्कार के सकारात्मक आ पावन वातावरण में का सचहूँ अइसन परंपरा कहीं विकसित होत बा? अइसन भइल त फेर सरकार से ले के सगरो सामाजिक सरोकार के सकारात्मक काम धइले रहि जाई ।

बनारस त देश-विदेश में सबके खातिर धर्म-संस्कार में रंगल-रचल नगरी हवे। एह कथा के रचवइया के साहस के सलाम करे के पड़ी जे अपना निसंकोची सुभाव से बनारस-कथा आ अड़ी-कथा के सिरजना कइले बा। एह कहानी-संग्रह के चउहद्दी बनारस भले होखे, बाकिर एह संग्रह के हर कथा समाज के आइना बा। लेखिका के हास्य प्रधान एह कहानियन में दबल बनारस के बिलात रस देखि के अफनाहटो बा आ अनुराग के गंगा के धारो बा। एह गुरू के चरित्र के बहाने बनारस के वैचारिक बतकुच्चन के ठाँव से ढेर लोग के परिचय हो जाई। ढेर लोग के मन-मस्तिष्क बंद पड़ल बज्जर कपट-कपाट खुली जाई आ ढेर लोग बंगड़ गुरू के बंगड़ई से साक्षात्कार करी।

पाठक लोग ई 'बंगड़-गुरू' के पढ़त बेरा बेर-बेर बंगड़ गुरू त मिलबे करिहें सथवे लगावे-बझावे वाला पिंकूओ मिली जे बंगड़ के हर बोली के खटका-मीठका गोली जइसन चुभलावेला। देश-दुनिया, सभा-समाज के चिंता के साथे भाषा-सुभाव पर आपन चिंता व्यक्त करे वाला, कुकुरझाँव से झँवाइल, लूह से तँवाइल कहीं खटपटिया गुरू मिलिहें त कहीं चैबिस घंटा चिंता में डूबल झगड़ू मास्टर मिल जइहें। तब हमरे लेखाँ ढेर लोग के अष्टभुजा शुक्ल जी के कविता ईयाद पड़ि जाई कि –

गुरु से संबोधन करके
किसी गाली पर ले जाकर पटकने वाले
बनारस में सब सबके गुरु हैं
रिक्शेवाला गुरु है
पानवाला गुरु है
पंडे, मल्लाह, मुल्ला, माली और डोम गुरु हैं
नाई गुरु है, कसाई गुरु है, भाई गुरु है
कॉमरेड गुरु हैं शिष्य गुरु हैं और गुरु तो गुरु हैं ही

कुल मिला के ऊहे हाल ई 'बंगड़-गुरू' के बा। एह में सबके सब गुरु बाटे। एहमें बनारस के बहाने देश-समाज के चिंता हवे त हास-परिहास करत अनेक सामयिक विषय पर चर्चा के गोलमेज हवे। ई आजु के समाज के दिशाबोध बा त बदलत बेयार आ व्यवहार पर लेखिका के अनुभवी कलम से कमाल रचत शोध बा। निश्चित रूप से भोजपुरी कथा-संसार में एगो सुन्नर कहानी-संग्रह के पइसार भइल बा। अइसन सर्जना बदे बेर-बेर बहिन डॉ. सुमन सिंह जी के बधाई आ ऊहाँ के कलम के बेर-बेर सलाम। 卐卐

पुस्तक समीक्षा

रवि शंकर सिंह

गाँव के माटी के खुशबू से भरल गीत

कनक किशोर जी के भोजपुरी गीत संग्रह 'गाँव गावे गीत' में रिसता-नाता, गाँव के संस्कृति, खेत-खलिहान, पर्यावरण आदि से परिचय करावत बानीं। एकरा में हर जगह प गाँव के माटी के खुशबू के मससूस कइल जा सकेला। एह संग्रह में गाँव के जीवन के विविध रूपन के कई गो विधा में लिखल गइल बा।

कवि किसान जीवन के पीड़ा आ गाँव-देहात के बारीक चीजन के पहचान रखत बानीं। तबे त लिखत बानीं -

दाँव -पेंच अब बहुत भइल
शाम दंड अब छोड़ी
हम किसान के जात ह सीधा
मुड़ी जन हमार मुरेडी

शीर्षक 'दाँव-पेंच' में किसान लोगन के तबाह करे वाला छद्म के पहचान करत चेतावनियो देत बानीं -

राउर करनी गला दबावे
अब त बूझीं बतिया
मुअब भले रुकब ना हम
सुन सेठवन के नतिया।

कवि गजल के माध्यम से समाज मे हो रहल परिवर्तन पे जोर देत बानीं। इहां के आजु के जुग में वैश्विक, बाजारवाद व्यवस्था आ सुविधा भोगी-आत्म केंद्रित जीवन-शैली से उभरल गाँव के सांस्कृतिक व्यवस्था पे चोट करत बानीं। आजु लोगिन के जीवन मे बनावटीपन साफ झलकत बा। आपन संस्कृति के छोड़के दूसरा के संस्कृति के अपनावेवाला के कवन गति होला ओकरा प करारा व्यंग्य करत कवि लिखत बानी।

गाँव-गाँव ना रहल, देख शहर सरमाला
बहुरिया भसुर संग नाचे, ई का कहाला।
....
गाँव छोड़ शहर में आ बसलीं

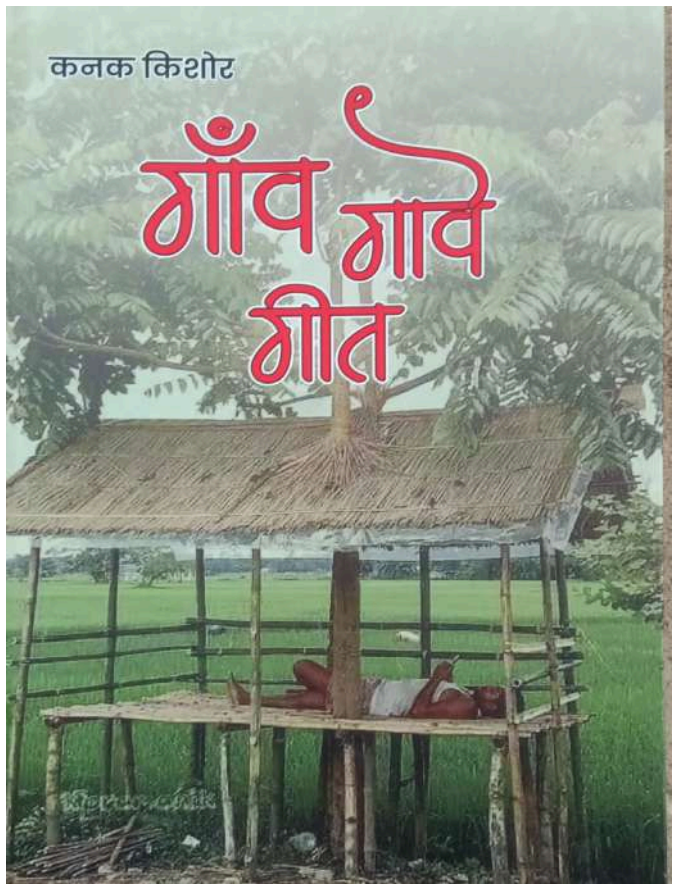

किताब: गाँव गावे गीत
लेखक: कनक किशोर
विधा: गीत संग्रह
प्रकाशक: सर्व भाषा ट्रस्ट ,नई दिल्ली
मूल्य:220 रु

नमूना बनलीं फैशन बाजार के।
.....
गाँव- गाँव अब ना रहल हम का कहीं
हर अँगना बाजार बनल हम का कहीं ।

गाँव के समाज में कतना बदलाव कवना -कवना क्षेत्र में होखे के चाहीं, ई कुछ मनई लोग के अभियो नइखे समझ मे आवत। हँ ई कहल जा सकेला थोड़िका लोगिन में बनावटी बदलाव आ गइल बा। जवना के कारण बाहरी संस्कृति के गाँवन में बढ़त पईठ बा।

गजल पढ़ला पे लागत बा कि कवि आजु के समय के परिस्थितिन के अंकित करत बानीं। करोना वैश्विक स्तर पर लोगिन के चपेट में लिहलस। ओकरा से लोगिन के जीवन अस्त-व्यस्त हो गइल रहे। जवना से आपन देस कइसे वंचित रहित। सबसे बड़ बात ई बा कि ओह समय में सत्ता आपन वास्तविक चरित्र में नजर आइल। आपन जिमेवारी से भागत लागल आ साफ शब्द में कहल जाय त अइसनो विषम हाल में सत्ता के ठेकेदार लोग आपन आदत से बाज ना आइल लोग। कवि लिखत बानीं-

कोरोना के नाम पर, लूटल ठीक ना देस के
देस माई नू हऽ जी, बूझीं एह बात के।

देस के लूटेवाला लोगिन के आपन मूल्य आ प्रतिमान के प्रति याद दिआवत कहत बानीं -

जुल्म कबले सहीं, रउवे बताईं हमरा के
इंकलाब जगावता हमके, बूझी एह बात के।

आजु मानव के जिनिगी दूई भाग में बँटल बा। गाँव के प्राकृति परम्परा आ आधुनिक शहरन के चमक धमक वाला। एह बीच लोग तकनीकी संसाधन के खिलौना बनि के रह गइल बा। कवि के फागुन के गीतन के पढ़ला पर ई लागत बा कि कतना दूर आ गइल बानीं जा हमनी के। आज गाँव में फागुन के गीत नइखे लउकत। परम्परा टूट रहल बा। ओकरा जगह पर दूसर परम्परा जन्म ले रहल बा जे गंवई गंध निगल रहल बा। हमनीं के जवन आपन माटी के भाषा बा ओकरा से भागत बानीं जा आ विदेसी अउर अंग्रेजीपन वाला भाषा मुँह में जबरन डालत बानीं जा। आपन भाषा में जवन बात कहल जा सकेला ऊ दूसरा भाषा में कबहूं सम्भव नइखे। नाता - रिसता के महीन बुनावट, हिया के छुए वाला गीत जवन गाँव के सामुहिक रूप से प्रतिनिधित्व करत बा ऊ फगुआ में बा। एक शब्द में कहीं त कवि आपन गीतन के माध्यम से गीत के नदियन में स्नान करावे में सफल बानीं। एगो बानगी देखिं -

कहँवा के हरदी, कहँवा के चुनरिया
कहँवा से रूप के निखार
बहे फगुनाहट बयार हो।

लाल फूल सेमर, लाल ही पलासवा
पीयर सरसों से शोभेला बधार
बहे फगुनाहट बयार
फागुन ...।

कवि लोकगीतन के माध्यम से किसान के जीवन के सभ पहलू के रेखांकित कइले बानीं। कवि के समृद्ध शब्द संसार, जीवन अनुभव आ प्रकृति के आत्मसात कइल रूप गीतन के सम्प्रेषणीय बनावत बा। गाँव के माटी से जुड़ल कवि आपन गीतन में संवेदना से भर देले बानीं। ई सब गुन गीतन के एगो अलग ऊँचाई पे ले जात बा। चइता में ई सब देखे में मिलल, चाहे पति पत्नी के प्रेम होखे, आंतरिक छटपटाहट होखे भा चाहे किसान लोगन के वर्तमान दशा होखे। आपन अनुभव से बनल चदरी के खाली ओढ़त नइखी, ओकरा के मुखर हो के आवाजो देत नजर आवत बानीं। लिखत बानीं -

बड़-बड़ बात करी हमरा के ठगलस
करी देल हमके किनार
बेच ताड़ हमनी के सेठवा के हाथे तू
कइल ना कवनो बिचार ।

ई कहल जा सकेला कि कविता,गीत,गजल एगो रचनाकार के हृदय के आईना होला। कवि के रचल चइता के गीत किसानी स्वभाव के अनुरूप लागत बा। कवि के गाँव के संस्कृति से केतना प्रेम बा,खेत-खरिहान से केतना प्रेम बा ऊ एह संग्रह में साफ देखल जा सकेला। गाँव कवि के नस-नस में बसेरा बनवले बा। गीतन के पढ़ला पे कवि के भावुक हृदय के साथ बहत चलल जात बा पाठक। लिखत बानीं -

खेत में परान बसे करी हम मंजूरी हो
जुड़े नाही भर पेट अन्न हो
करज में डूबी हम रोटिया खियवनी हो
करज में मुअला किसान हो
ए रामा ...।

रचनन के भाषा काफी प्रभावशाली बा। गीत सब कवि के किसान मन होखे आ गाँव से जुड़ाव के परिचित करा रहल बा। रचना अभिव्यक्ति में अंलकार के प्रयोग कइल गइल बा। कुछ कमी के देखल जाव त पहिला प्रकाशन के कमी नजर आवत बा। जवन कुछ पन्ना के खाली छोड़ देले बाड़े आ किताब के विषय सूची गायब बा। दूसरा रचना में कहीं-कहीं बिम्बन में दोहराव देखे के मिलत बा। कुल्ह मिला के कहल जा सकेला कि एह संग्रह के अधिकांश रचना रोचक आ पठनीय बा जे पाठक के अंत तक अपना से जोड़ले रखत बा। 卐卐

पुस्तक समीक्षा

किरण सिंह

जइसे आमवां के मोजरा से रस चूवेला

जब लिखत-लिखत मन उबीया गइल त सोचनी कि लिखल छोड़ के कुछ पढ़ लिहल जाऊ। खैर कुछे दिन पहिले विश्व पुस्तक मेला से कई गो किताब मंगवा लेले रहनी काहे कि बड़ बुजुर्ग गणमान्य लेखक लोगन के कहनाम बा कि लेखको लोग के पढ़ेके चाहीं काहे कि पढ़ला से आइडिया मिलेला। ई बात सहियो बा, बाकिर का पढ़ल जाऊ आजकल कुछ बुझाते नइखे। काहे की आज-काल्ह भाई-भतीजावाद जोर पर बा। समीक्षक लोग आपन दोस्तन -मित्रन के किताब के बढ़ा-चढ़ा के बड़ाई करत बाड़े आ दोसरा के एगो त पढ़त नइखन, अगर पढ़ियो ले तारे त ओकरा बारे में कुछ बोले-कहे में कोताही क दे तारे।

खैर असली बात पर आइल जाव। जे लोग भोजपुरी साहित्य के अश्लील गीत खातिर जानत रहे उनका के जवाब देवे खातिर एगो भोजपुरी साहित्य के खजाना हमरा हाथ लाग गइल बा। जेकर लेखक बानी हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य के जानल-मानल हस्ती माननीय भगवती प्रसाद द्विवेदी जी आ ओ किताब के नाव ह - "जइसे अमवा के मोजरा से रस चुवेला"

242 पन्ना के ए किताब में 57 गो आलेख बा जेमे-पहिलके आलेख- "भोजपुरिया लोक जीवन" में अइसन-अइसन ठेठ भोजपुरी के कहावत के जरिये भोजपुरी के महातम बतावल गइल बा कि जे इ किताब के पढ़ ली ऊ भोजपुरी के दिवाना हो जाई। परतोख खातिर कुछ लाइन देखल जाव –

धन्य भोजपुर ई हमार
आ धन्य इहां के माटी,
कवनो गुन में एसे केहू
ना आंटल, ना आंटी।

इ त रहे भोजपुरी के बखान। अब भोजपुरीया मरद के बखान देखल जाव –

आन पर लड़ावे जान, जान के न जान जाने,
चले के उतान जाने, तान के लउरिया,
बात मरदानी जाने, चाल मस्तानी "भानु"

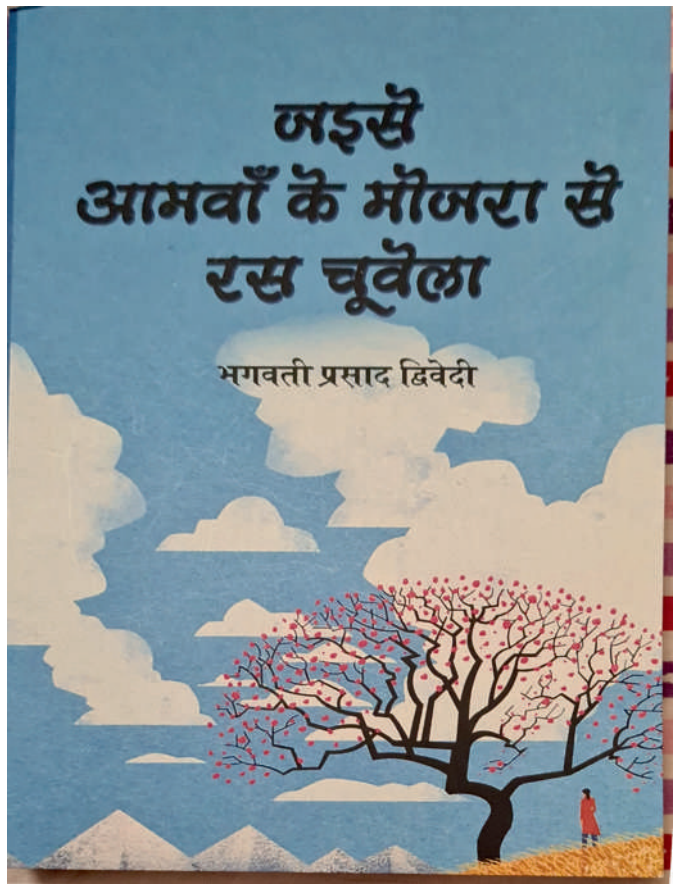

किताबः जइसे अमवा के मोजरा से रस चूवेला (निबन्ध-संग्रह)
लेखकः डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी
प्रकाशकः सर्व भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्यः 350 रुपये

होला एक पानी के मरद भोजपुरिया।

लेखक लोक कथा के भारतीय संस्कृति के जियतार थाती बतावत बानी आ लरिकाई में लोगन के मुंह से सुनल बात के दोहरावत खा कहत बानी –

जे लउके से लोका। माने खुलल आँख से जे कुछ लउकत होखे उहे लोक ह।

लोक साहित्य मौखिक, वाचिक रह गइल ओ से लेखक के दुख भइल आ उहाँ के लोक साहित्य के भी लिपिबद्ध करे पर जोर देके अपने शुरूआत करत बानी। एसे कि लोक से उपजल लोगे जब आपन जरि के भुलाये लागी त दोसर के मन पारी। उहाँ के कह तानी कि लोक कथा ओतने पुरान बा जतना मनई के इतिहास। एसे आज एह बात के आपन ए लोक संस्कृति के जियतार थाती लोक संस्कृति के सभसे सेंसर विधा के लिपिबद्ध कइ के विशाल पाठक वर्ग ले पहुंचावे के हर सम्भव प्रयास कइल जाव।

आइल चइत उतपतिया हो रामा!..... जइसने इ शीर्षक बा ओही तरी ए आलेख में चइत महीना के बखान कइल गइल बा। परतोख खातिर दू लाइन उधारी ले तानी –

चइत के उत्पाती महीना मस्ती के आलम ले ले आ धमकल बा..... कोइलर के कूक माहौल में एगो मोहक रस घोरत बा। अपना परदेशी पिया के बाट जोहत विरहिन प्रियतमा गाव तारी –

नाहिं भेजे पतिया,
आइल चइत उतपतिया हो रामा

एही तरी चइत में गावे वाला चइता गीत के सुन्दर ढंग से प्रस्तुत कई के ओकर बखान कइल गइल बा ।

"गमछा बा त का गम बा" ए शीर्षक के आलेख में गमछा के बखान हे तरी कइल गइल बा –
अगर सांच कहल जाउ त भोजपुरियन के जान गमछिये में बसेला। ए से गिरधर कवि से माफी मांगत हम एगो कुण्डलिया रचल जरूरी समझत बानी –

गमछा में हरदम बसे, भोजपुरियन के जान,
पगरी बन्हले खेत में, मेहनत करसु किसान,
मेहनत करसु किसान, गमछिये सातू सानसु
बरखा, घाम, सीत में, छाता जइसन तानसु
धोती आ गंजी के संग, इ लागे चमचा
नवहीं किसन अगर कान्ह ना सोभे गमछा।।

आज स्त्री विमर्श के दौर में अपने पुरुष होते हुए भी लेखक भोजपुरी लोकोक्ति में नारी के बारे में लिखल नइखी भुलाइल, देखल जाव –

घर के हिफाजते घरनी करेली, एसे कहल गइल बा –

बिनु घरनी घर भूत के डेरा
भा
घरनी से घर सोभेला
बिना घरनी के घर रोवेला

बिनु बैलन खेती करे, बिनु भैयन के रार।
बिनु मेहरारू घर करे, चौदह साख लबार।

तिरिया तेल, हठीर हठ
चढ़े न दूजो बार।

एह तरी बड़ी नीमन-नीमन कहावत कह के मेहरारू के बड़ाइयो कइल गइल बा आ शिकाइतो कइल गइल बा ।

ए पुस्तक के शीर्षक "जइसे अमवा के मोजरा से रस चुवेला" के बानगी देखल जाव –

कतना अजगुत बात बा कि आजु हँसहूँ खातिर टरेनिंग लेवे के पड़त बा। केहू रावन, कुम्भकरन के भा गब्बर सिंह के बिभत्स डेरवावेवाली हँसी हँसे के प्रेक्टिस करत बा, त उहंवे कवनो मॉडल भा फिल्मी हिरोइन ई प्रशिक्षण लेत बाड़ी कि कब, कइसे आ कातना ओठ खोलिके मीठ मुसुकी छोड़े के बा।

लाले-लाले ओठवा से, बरिसे ला ललइया हो कि रस चुवेला, जइसे अमवा के मोजरा से रस चुवेला ।

ए आलेख के माध्यम से लेखक जिनगी के खुशगवार बनावे खातिर हँसे-मुस्काये के नसीहत देले बानी।

एही तरी ए किताब में भोजपुरिया लोक जीवन से ले के भोजपुरिया गीत, काथा-कहावत, तौर-तरीका, रहन-सहन, बोलचाल, कला-संस्कृति, लालित्य, आचार-विचार के आताना महीनी से बयान कइल गइल बा कि लिखे लगला पर ए किताब पर एगो किताब लिखा जाई बाकिर शब्द के सीमा में हम बान्हाइल बानी एसे हम अतने कहब कि इ किताब एगो भोजपुरी साहित्य के धरोहर ह एसे इ घर-घर में होखे के चाहीं आ हमनी के भोजपुरिया समाज के लोगन के त रामायण जइसन ग्रंथ लेखा सम्हार के राखेके चाहीं। काहे कि अपना भाषा के हमहीं ना इज्जत करब त आन केहू का करी।

सर्व भाषा प्रकाशन नई दिल्ली से छपल ए किताब के पन्ना आ छपाई दूनो बढ़िया बा। आ आताना नीमन किताब के दामों 350 रुपिया कवनो ढेर नइखे। काहे कि अतना रुपिया त भुजा-भरी, टीका-फाना आ पान खइनी में खरच हो जाला। अइसन किताब के उपहार रूप में हमनी के भोजपुरिया समाज के देवे खातिर किताब के लेखक माननीय भगवती प्रसाद द्विवेदी जी साधुवाद के पात्र बानी। हम उहां के शत-शत प्रणाम करत बानी आ बधाई देत बानी। 卐卐

पुस्तक समीक्षा

अखिलेश कुमार पाण्डेय

राजेश कुमार "मांझी" के नून-तेल

साहित्य समाज के दर्पण होला। साहित्यकार के समाज के अभिभावक के दर्जा दिहल बा। गाँव, समाज के कुरीतियन के ओकरा सोझा रख के ओकर आँख खोलेके काम एगो नाटककार के दायित्व होला। जेकरा के ईमानदारी से निर्वहन कइले बानी डॉ. राजेश कुमार "मांझी" आपन एह भोजपुरी नाट्य संग्रह "नून तेल" में। एह भोजपुरी नाट्य संग्रह में चारगो नाटक बा। जहां "मजूरी", सतरह दृशयन में, "गिरमिटिया भारतवंशी", पंद्रह दृशयन, "कसूरवार", तीन दृशयन में आ "माटी के बर्तन", सात दृशयन में निबद्ध बा।

एह नाट्य संग्रह के पहिला नाटक "मजूरी" बा। जवन एगो अनपढ़ मजूर, माणिकचंद आ ओकरा परिवार के कहानी बा जे जमींदार के अत्याचार सहियो के ओकर काम करे पर मजबूर बा। आपन वाजिब मजूरी समय से ना मिललो पर ऊ जमींदार के खिलाफ आवाज उठावे के हिम्मत नइखे कर पावत। ओकर बड़का बेटा, दीनानाथ पढ़ल रहता आ आपन हक खातिर आवाज उठावता बाकिर सतेन्द्र सिंह जे जमींदार के लइका रहता ओकरा के मार के भगा देता। फेर कइसे दीनानाथ पढ़ के आपन घर आ गाँव के दासा बदल देत बा। एह नाटक के आकर्षण इहे बा।

दुसरका नाटक "गिरमिटिया भारतवंशी" में हमरो, साल 2013 में, पंडित, जे एगो मात्र पढ़ल मजदूरन के साथी रहले, के भूमिका निभावे के मौका भेटल। एह नाटक में औपनिवेशिक काल के दौरान मुख्य रूप से भारत के उत्तर आ मध्य भागन से जेकरा के अब बिहार, झारखंड, उतर प्रदेश, उड़ीसा आ आंध्रप्रदेश के रूप में जानल जाला। ओहिजा के अनपढ़ गरीब मजदूरन, किसानन के ब्रिटिश आ फ्रांसीसीयन एगो एग्रीमेंट के तहत अंजान देश, धरती के यात्रा पर ले गइल, जहां उनकरा लोगिन पर अंग्रेजन द्वारा तरह तरह के शोषण भइल। हर साल दस से पन्द्रह हजार मजदूरन के गिरमिटिया बनाके भेजल जात रहे। हालांकि, एग्रीमेन्ट पाँच साल के होत रहे बाकिर जे गइल आज तक वापस लवटि के ना आइल। ढ़ेर लोग त गुलामी करत-करत ओहिजे माटी में मिल गइल, जे जिन्दा बाचल उ एक-एक पइसा के मोहताज रहे। जिन्दा रहे खातिर रोटी-कपड़ा के अलावे कुछु ना मिलत रहे। इहे गिरमिटिया के दरद के गाथा बा "गिरमिटिया भारतवंशी" नाटक में।

गिरमिटियान के माई बहिन के इज्जत तार तार कइल गइल।

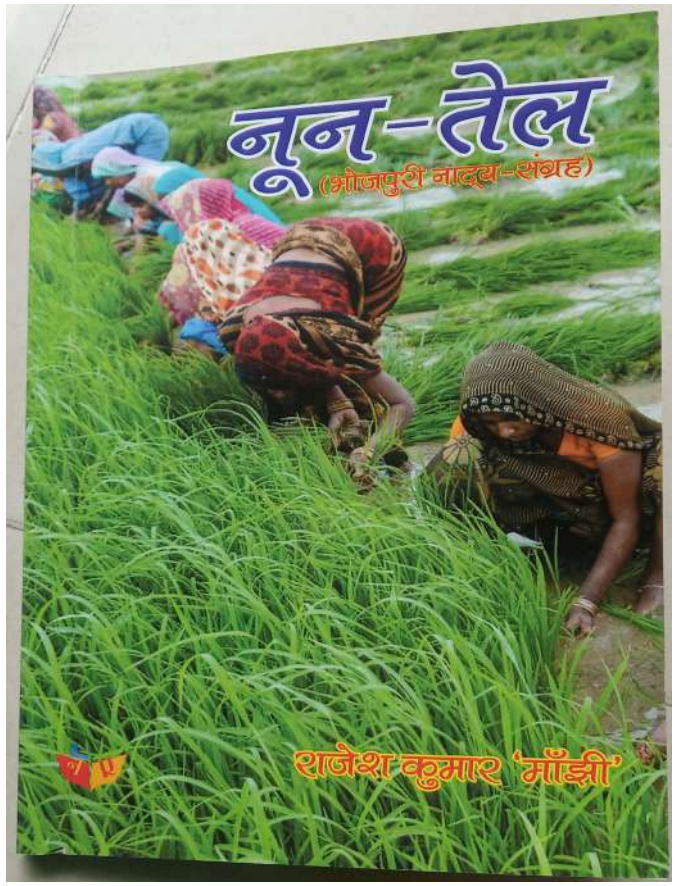

किताब: नून तेल
लेखक: राजेश कुमार "मांझी"
विधा: भोजपुरी नाट्य संग्रह
प्रकाशक: नवजागरण प्रकाशन, नई दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2017
पृष्ठ संख्या: 128
किताब के मूल्य: 250 रु.

तब उ लोग के खाली आपन भगवान के सहारा रहे। सांझी के थक हार के हनुमान भजन, राम भजन गाके आपन मन बहलवात रहन। आपन मेहनत, पसीना आ कठिन श्रम के बल पर ओहिजा के बंजर धरती के उपजाऊ बना देहलन आ आपन सभ्यता आ संस्कृति के स्थापित कइलस।

तिसरका नाटक, ''कसूरवार'' एह नाटक में पतोह आ ससुर के एगो वर्जित/ अनैतिक संबंध के उजागर कइल बा। आ सवाल उठावत बा कि कसूरवार के बा? एकर सबसे बड़ कारण बा हेमंत के महतारी अइसन लोगन के सोच। जे ई सोच के कि लोग जान जाई त का होई एही लाज लेहाज में अइसन अनैतिक देखियो के अनदेखा करदेली। जेकर नतीजा बहुते भयानक होला जे हंसत खेलत परिवार के लील जाला। अगर ऊ तनिका साहस बटोर के समय पर विरोध कइले रहती त साइत सभे बाँच जाइत।

चौथा आ अंतिम नाटक बा, ''माटी के बर्तन'' जेकर मंचन पूनम सिंह द्वारा 2 बेर भइल बा आ हमरा एह नाटक के देखे के सौभाग्य प्राप्त भइल बा। एह नाटक में जमींदार द्वारा मजदूर के शोषण देखवाल बा। जमींदार जब लक्ष्मी के अकेला देख के इज्जत लूट लेला तब प्रतिशोध के आग में जलत लक्ष्मी, जमींदार के खून कर देवेले। आपन बेटा गणेश के पुछला पर कहेले, ''ऊ एह से बेटा कि हमनी के समाज में अब अइसन गंदा लोग के जरूरत नइखे जे केहु के चैन-अमन से ना रहे देबे। अगर हम ओकर खून ना करतीं त आवे वाला सई जन्म तक जमींदार अइसन इंसानियत के दुश्मन लोग हमनी अइसन गरीब-दुखिया के दामन पर दाग लागवे के कोशिश करतें आ हमनी के एही तरह माटी के बर्तन जइसन टूटत-फूटत रहतीं सन।

एह तरह से नाटककार एक ओर त करवट ले रहल भारत के गांवन का ओर इसारा कइले बाड़न कि गाँव के गरीब-गुरबा लोग आपन अधिकार आ हक के लड़ाई लड़ रहल बाड़न त दोसरका ओर नारी सशक्तिकरण के बात सोझा ले आवत बाड़न।

एह चारों नाटक के माध्यम से नाटककार, नारी शोषण पर एकदम गंभीर लऊकत बाड़न। काहें कि कूल्ही नाटकन में स्त्री पात्रन के दुर्दशा के सजीव चित्रण देखे के मिलत बा। कुल्हि नाटकन के पढ़ला से ई साफ हो जाता कि नाटककार, नाटक के कथानक समाज से लेले बाड़न आ आपन पात्रन के माध्यम से ओकरा के दर्शक-पाठकन का सोझा रखले बाड़न। नाटक देखला के बाद भटकल भा पथभ्रष्ट लोग गलत रास्ता छोड़ के सही रास्ता पर चले खातिर सोचतों बाड़न त लेखक के उदेश्य सफल कहाई। नाटक के भाषा-प्रवाह, मनोवैज्ञानिक संवाद आ रुचिकर लेखन कौशल सराहनीय बा। आपन भाषा-शिल्प, संवाद आ विधागत कौशल का चलते ''नून तेल'' नाट्य संग्रह, भोजपुरी नाट्य साहित्य के समृद्ध करे में आपन भरपूर योगदान दिही।卐卐

गजल

वक्त रउओ के गिरवले आ उठवले होई
छोट से बड़ आ बड़ से छोट बनवले होई

अइसे मत देखीं हिकारत से एह चिथड़ा के
काल्ह तक ई केहू के लाज बचवले होई

धूर के भी कबो मरले जो होखब ठोकर तर
माथ पर चढ़ के ऊ रउआ के बतवले होई

जे भी देखियो के निगलले होई जीयत माछी
अपना अरमान के ऊ केतना मुअवले होई

काश! अपराध के पहिले तनी सुनले रहितीं
आत्मा चीख के आवाज लगवले होई

जिंदगी कर्म के खेला ह कि ग्रह-गोचर के
वक्त रउओ से त ई प्रश्न उठवले होई

जब मेहरबान खुदा, गदहा पहलवान भइळ
अनुभवी लोग ई लोकोक्ति बनवले होई

अइसहीं ना नू गजल-गीत लिखेलें 'भावुक'
वक्त इनको के बहुत नाच नचवले होई

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

शिब्बू गाजीपुरी

'इन्द्रधनुसी रंग में भोजपुरी

"रतिया क लगल पहरा, दुर्गति बा भोर के।
अन्हियार चाँपि दिहलस नटई 'अँजोर' के॥"

भोजपुरी काव्य-संग्रह "इन्द्र धनुसी रंग में भोजपुरी" में संग्रहित ई पंक्ति, अनेकनगो काव्य-संग्रह, खण्ड-काव्य, प्रबंध-काव्य अउर महा-काव्यन के रचनाकार, "गाजीपुर गौरव" से सम्मानित कविवर श्री राम बचन शास्त्री 'अँजोर' जी कऽ लेखनी से निकलल बा जवन देस क राजनैतिक समाज में हो रहल नैतिक पतन क स्थिति के उजागर कऽरहल बा। इहाँ क लेखनी से भइल रचना अतना समृद्ध बा जवन अजुओ प्रासंगिक बा अउर समय क साथ आगे भी प्रासंगिक रही। इहाँ क रचना ऊ समूचा दृश्य के देखा रहल बा कि पहिले क रहन-सहन कइसन रहे, जेके पढ़ के, सुन के, आज क बदलाव के समझल जा सकेला। जइसे आज-काल हमनी क केहू के अपना घरे बोलावल चाहत बानीं जा त अपना घर क पता बतावे खातिर अपनी घर क लोकेशन व्हाट्सप पर शेयर कऽदेत बानीं जा लेकिन अँजोर जी अपना मीत के अपना घरे बोलावे खातिर उनके अपना घर क पता कइसे बता रहल बानीं ओकर एगो बानगी इहाँ के रचना में एह प्रकार से बा कि-

जटहा बरवा तरवा घरवा, एक दिन अइतऽमितवा।
घर पछियारी कमल से लथरलि बाटे एक तलइया
पंजरे उत्तर घन बंसवारी, गज्झिन बा अमरइया
पुरुबारी मंदिर में टेरत बंसी किसुन कन्हइया
दखिने पसरल बा पहरवा, एक दिन अइतऽ मितवा॥

एह तरह से घर क इर्द-गिर्द क नक्सा के उकेर रहल बानीं। एही रचना में आज क दौर में स्वागत में खान-पान क ढंग केतना बदल गइल बा, एह बात के जानकारी अउरी एकर काव्य-रस क स्वाद रउवां सभे के एह पंक्तियन में मिली कि –

चाय-समोसा बिस्कुट भूलिजा उहवां दाना-चिउरा
ढूँढा-ढूँढी, मेथी-भेली, लैनू मिली सोंठउरा

काव्य-संग्रह 'इंद्रधनुषी रंग में भोजपुरी' में संग्रहीत एह रचना में जवना क शीर्षक 'मीत से निहोरा' बा, एमे पहिले क खान-पान कइसन रहे, सूते-बइठे क व्यवस्था कइसन रहे, ऊ कुल्हिये बात कह दिहल गइल बा जवन अपना आप में जुग-परिवर्तन क ज्वलंत उदाहरन बा जवन आज क समय में गाँव-समाज में

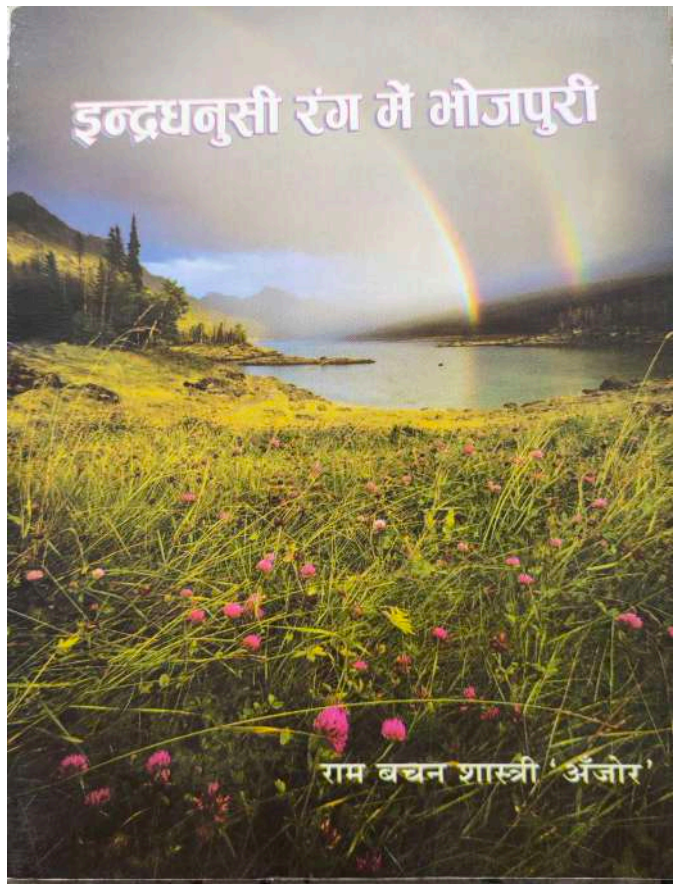

किताब: इन्द्र धनुसी रंग में भोजपुरी
लेखक: श्री राम बचन शास्त्री 'अँजोर'
विधा:काव्य संग्रह
प्रकाशक: कृष्णन वन्दे जगद्गुरूम संस्थान
प्रकाशन वर्ष: 2022
पृष्ठ संख्या: 120
पेपरबैक किताब के मूल्य: 275/- रुपये

दूर-दूर तक देखे के नइखे मिलत, एही गीत क लाइन बा कि –

'पतई-पुअरा मिली बिछावन, ओढ़ना करिया कमरा'

ई समय क बदलाव यानी जुग-परिवर्तन-प्रसंग में इहाँ हम एगो अउर बात क उटकार कइल चाहब कि पहिले क समय में भोजपुरी-बोली में प्रयोग हो रहल बहुत शब्द जवन आज क समय में बहुत कम प्रयोग हो रहल बा भा एकदम्मे खतम हो गइल बा अइसन शब्दन क भंडार अँजोर जी क रचना में भरपूर मात्रा में मिल जाई, एह प्रकार से वर्तमान में भा भविष्यो में इहाँ क साहित्य भोजपुरी-शब्दकोश के समृद्ध बनावे में सहायक सिद्ध होई।

'अँजोर' जी काव्य क छंद-विधान के भी महत्व दिहले बानीं, वर्णिक-छंद होखे भा मात्रिक छंद, रउवा बहुतेरे छंदन क विधा के अपना रचना क अंग बनवले बानीं। 'अकाल कुंडलिया' शीर्षक से इहाँ क कुछ कुंडलिया-छंद में सूखा क बरनन कइले बानीं, नछत्तरो क जिकिर बा अउर संगहीं खेती-किसानी अउर मौसम-बिज्ञान क अनुभवी कवि घाघ अउर कवि भंडरी के लपेटा में लेले बानीं साथे-साथ मौसम क जानकारी देवे वाली मीडियो पर तिख्खर व्यंग कर रहल बानीं।

सूखा पर कलम क धार कुछ अइसे बा कि –

गइलि पुनरबस सूखले, हाथ झारि के पूख।
माल-जाल, चिरई-चुरुंग, मिलल किसानन दूख॥

जब छंद-विधान क चर्चा चलिये रहल बा त इहाँ क काव्य-संग्रह "इंद्रधनुसी रंग में भोजपुरी" में सवैया-छंद क स्वाद देबे खातिर 'कृष्ण-कृष्णा संवाद' शीर्षक क अंतर्गत मत्तगयंद-सवैया में भक्ति-भाव भरल बिजन परोसले बानीं, एकर उदाहरन देखल जाव–

निरधन के धन, निरबल के बल-धाम ऊ स्याम सुदरसनधारी।
दीन-बेदीन के बन्धु महाप्रभु, कीरति तीनहु लोक में न्यारी।
जालन लोर पिये बहिनी के, जहाँ 'बन' द्रुपद-सुता दुखियारी॥

वर्णिक छंद क राहि चलके 'जवानी आ बुढ़ापा' शीर्षक क अंतर्गत 'अँजोर' जी जवानी क उमंग, जोश अउरी बुढ़ापा क बिना जाँगर-पाँजर के जिनगी क बहुत मार्मिक व्याख्या कइले बानीं अउर एह छंद-विधान क सौंदर्य ई बा की एकरा समतुल्य लोक-विधा में 'खड़ी-बिरहा' क पद्धति पर लोकगायक लोग काफी कुछ गवले बा पहिले 'जवानी' क भाव कुछ एह प्रकार से बा की –

एक बार आवेले जवनियाँ जीनिगीया में, हुमुचत चलेले उतान ।
धरती प डेग नाहीं पड़त उड़त जात,मथवा चुमेला असमान ॥

काव्य-संग्रह "इंद्रधनुसी रंग में भोजपुरी" भोजपुरी साहित्य क ओह भरल-पुरल थाती अइसन बा की जवना में हर रंग विद्यमान बा, इहाँ कवित्त-विधा क एगो 'मनहरन-घनाक्षरी' कवित्त क आनंद देखीं संगहीं सावन क महीना में बरिखा ना होखे अउर चारों-ओरी सुरुज के तपन बढ़त जाय त कवि क का भाव होखी ओहू के देखल जाव कि –

दुख दे सवनवाँ पता ना जा छिपल कहाँ ?
नाहीं बा सिवनवाँ में कतहीं सवनई ।
मिलत न बाटे चैन, लागे ना छनों भ नैन,
मनवाँ बेचैन, नाहीं भावेला भवन ई ॥
ताकीं जे सुरुज ओरी, लागे देई आँखिफोरी,
खोरनी से खोर जारे देहियाँ पवन ई ।
नीक नाहीं लागेला परब-तिहुआर एक,
तनिको न भावे हई गितिया-गवनई ॥

काव्य-संग्रह 'इंद्रधनुसी रंग में भोजपुरी' में गीत, गजल, मुक्तक, कवित्त, सवैया-छंद, कुंडलियाँ-छंद क साथ-साथ विषय-वस्तु क बात कइल जाय तऽसमाज क अधिक से अधिक विषयन पर 'अँजोर' जी क लेखनी सरपट चलल बा जवना के इहाँ संपूर्णता क साथ व्याख्या कइल आसान नइखे, प्राकृतिक सौन्दर्य क व्याख्या, खेती-गिरहत्ती क बात, राजनीति क चर्चा, सामाजिक-विषय, देस-भक्ति क गीत भा धार्मिक-विषय यानी विषयन क हर रंग इहाँ बा जवना से निःसन्देह अपना नाँव के चरितार्थ कऽरहल बा ई काव्य-संग्रह 'इंद्रधनुसी रंग में भोजपुरी'।

ई अनमोल संग्रह खातिर श्री "अँजोर" जी के अनघा बधाई।卐卐

गजल

लाख रोकीं निगाह चल जाता
का करीं मन मचल-मचल जाता

राह में बिछलहर बा, काई बा
गोड़ रह-रह फिसल-फिसल जाता

रूप के आँच मन के लागत हीं
साँस लहकत बा, तन पिघल जाता

के तरे गीत गाईं जिनिगी के
हर घड़ी लय बदल-बदल जाता

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

विश्वजीत शेखर राय

अरथ अमित अति आखर थोरे

हाल के सालन में कोरोना वायरस के वैश्विक महामारी के चलते हमनी सभे के सामने एगो अइसन समय आइल जवन अभूतपूर्व आ अकल्पनीय रहे। महामारी के भयावह दृश्यन के बीच जब मानव जाति हतासा से अपना घर में बंद हो गइल त साहित्य मानवता के सहारा देबे के काम कइलसि। एह दौर में साहित्य से आम जनता के जुड़ाव बढ़ल एह में कवनो संदेह नइखे। खास तौर पर भोजपुरी भाषा के साहित्यिक गतिविधियन के देखल जाव त पता चली कि एह समय बहुते संख्या में लाइव कार्यक्रमन के आयोजन आ सोशल मीडिया क माध्यम से प्रसारण भइल। एह कार्यक्रमन के योगदान खाली अपना दर्शक लोगन के मनोरंजन ले ना रहे बलुक एह कार्यक्रमन का माध्यम से बहुते प्रतिभाशाली रचनाकारन के दर्शक लोगन से परिचयो हो गइल। गाजीपुर जिला से आवे वाला आ जालौन जिला में सहायक शिक्षक के रूप में काम करे वाला संजीव कुमार त्यागी भी एह कार्यक्रमन के माध्यम से साहित्य सृजन के सीढ़ी चढ़त रहले। संजीव जब अपना बुलंद आवाज में छन्दबद्ध भोजपुरी कविता के माध्यम से समाज के अलगा-अलगा वर्ग के भावना अउरी पीड़ा के प्रस्तुत कइले त दर्शक उनकर तारीफ करे से अपना के रोक ना पवलें। संजीव के कविता में अतना रस बा कि श्रोता मुरीद बन जाला आ कविता के विषय-वस्तु अतना बिरहद बा कि ओमे जइसे सब कुछ समाहित हो गइल होखे।

"ए सरकार! किसान हईं हम" के पहिला संस्करण एकइस गो कविता के संग्रह बा। किताब के कुल कविता बहुते सारगर्भित, सरस एवं रोचक बाड़ी। ई किताब 'अरथ अमित अति आखर थोरे' कहाउत पर एकदम खरा उतरत बिया। कुछ आलोचक लोग के कहनाम बा कि एह किताब में खाली एकइस गो कविता बा आ एह आधार पर एह किताब पर सवालो उठल बा। एह विषय पर चर्चा करत घरी इहो बतावल जरूरी बा कि संजीव कुमार त्यागी के कविता अक्सर बड़हन होला। कविता के शिल्प आ विषय के व्याख्या के सोझा कविता आ पन्ना के संख्या के महत्व कम मानल जाला। कई हाली देखे के मिलेला कि शिल्प आ विषय-वस्तु के हिसाब से कमजोर सैकड़न कविता के संग्रह भी फीका लागेला अउरी कउनो सिद्ध साहित्यकार के सारगर्भित, सरस आ रोचक कविता कम संख्या में रहला के बादो सहृदय पाठक के मोहित कर देला।

एह किताब में शामिल कवितन के विषय व्यापक बा, जेकर फइलाव पारिवार के आंतरिक संबंध से लेके सामाजिक दसा तक अउरी भोजपुरी के स्वाभिमान से लेके देशभक्ति तक ले बा। कवि के भाषा आम बोलचाल के भोजपुरी ह, जवना के कवनो भोजपुरी भाषी पाठक आसानी से समझ सकेला। कविता के परिभाषा देत मुक्तिबोध जी

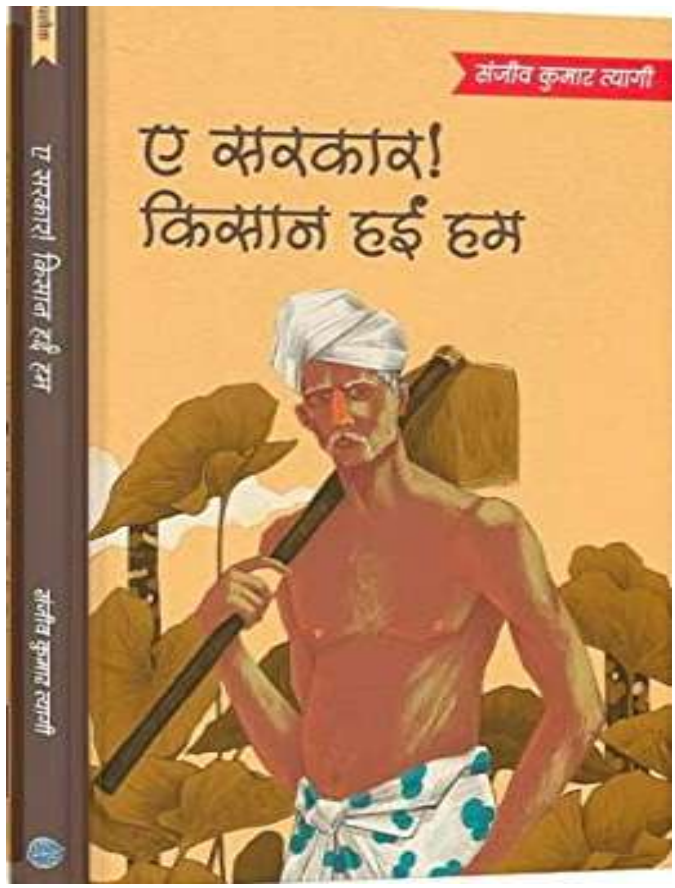

पुस्तकः ए सरकार! किसान हईं हम
लेखकः संजीव कुमार त्यागी
विधाः कविता संग्रह
प्रकाशकः सर्व भाषा ट्रस्ट प्रकाशन
प्रकाशन वर्षः 2021
मूल्य (पेपर बैक): 200 रुपए

लिखले बानी कि "वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की संवेदनापूर्ण अभिव्यक्ति ही कविता है"। ई विशेषता कवि संजीव के एह सब रचनन पर शब्दशः साँच होता। ई किताब एकइस गो फूलन के ना बलुक इक्कीस गो अलग अलग बगइचा के फूलन के गुलदस्ता ह। संजीव के विविधता खाली विषय तक सीमित नइखे, उहाँ के कविता के शिल्प आ पद्य विन्यास में भी बहुत विविधता बा। इहाँ इहो स्पष्ट करे लायक बा कि विभिन्न छंद के प्रयोग से कविता में कवनो बाधा नइखे आइल, एगो सिद्ध रचनाकार के रूप में संजीव विषय आ शिल्प में सामंजस्य रखले बानी जवना से छंद के भाव के जीवंतता पर कवनो असर नइखे पड़ल।

एह किताब में 'महाराजा फतेह बहादुर साही' कविता में तमकुहीराज के संस्थापक आ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहिला नायक महाराज फतेह बहादुर साही के बारे में पाठक के ऐतिहासिक जानकारी मिलत बा। बनारस पर कई गो कविता लिखल गइल बा बाकिर संजीव जी के कविता 'बनारस' के दायरा व्यापक बा आ ई एगो बहुते रोचक प्रस्तुति बा। 'ए सोना परधानी लड़', 'ब्यूटी पार्लर', 'बबुआ पियले खइले बाड़न' कविता पाठक के हास्य-रस से गुदगुदा देली बाकिर एकर उद्देश्य खाली पाठक के हँसावले भर ना बलुक सामाजिक समस्या के रोचक तरीका से उजागरो कइल बा। जहाँ 'ए सोना परधानी लड़' कविता चुनावी व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार के साथे बेरोजगारी के समस्या पर व्यंग्य बा उहवें 'ब्यूटी पार्लर' कविता दिखावटी आ कृत्रिम रवैया पर हमला बा आ प्राकृतिक सुघराई के सहारा लेके बनावट से दूर रहे के संदेश देत बा। 'बबुआ पियले खइले बाड़न' में नशा के चंगुल में नाश होखत नवहन के कहानी बा आ हास्य के साथे एह सामाजिक कुरीति से होखे वाली नुकसान के पाठक के देखावे के प्रयास कइल गइल बा। 'लिट्टी चोखा', 'सतुआ', 'दही-चिउरा' जइसन घर-घर में खाये-पिए आला चीजन के मानवीकरण क के कवि संजीव एक-दोसरा के प्रति समाज में प्रचलित हीनता के रेखांकित करत दोसरा के संघर्ष आ त्याग के सम्मान करे के संदेश देवे के प्रयास कइले बाड़न।

'माई त बस माई हिय', 'पापा' आ 'बिरिछ अउर भाई के नाता' कविता में पारिवारिक संबंधन के एगो सुन्दर आ मार्मिक वर्णन बा। 'बबुआ हो छठ में आ जइत' कविता में महापर्व छठ में घर से दूर रहेवाला बाहरवासु के माई-बाबूजी के मनोदशा के वर्णन कइल गइल बा जवन पढ़वइया के भावुक क देला। 'बबुआ हमार आइल बाड़न, घर आज तिरंगा ओढ़ के' में एगो शहीद परिवार के पीड़ा के चित्रण बा आ 'कबले ई ध्वज बेचल जाई' में भारत के गौरवशाली इतिहास के साथे वर्तमान भारत में प्रचलित भ्रष्टाचार के चित्रण बा। कविता 'बढ़ी भोजपुरी तब्बे बढ़ी भोजपुरिया' आ 'खाँटी भोजपुरिया' भोजपुरी भाषा के संघर्ष के गीत ह, भोजपुरी भाषी लोगन में उत्साह आ ऊर्जा भरे के प्रयास ह। आखिर में कहल जा सकेला कि ई किताब पढ़त घरी कवि संजीव पाठक क सोझा एगो लोकदर्शी दृष्टि वाला कवि के रूप में उपस्थित होलन। संजीव जनसाधारण क भाखा भोजपुरी में जिनगी के रहस्य आ गांव के माहौल के बीच में जिनगी के साँच के एगो असाधारण आ अलौकिक बाकिर हृदयग्राही छवि बनावे में सफल भइल बाड़न।卐卐

गजल

ना रहित झाँझर मड़इया फूस के
घर में आइत घाम कइसे पूस के

के कइल चोरी, पता कइसे लगी
चोर जब भाई रही जासूस के

आज ऊ लँगड़ो दरोगा हो गइल
देख लीं, सरकार जादू घूस के

ख्वाब में भलही रहे एगो परी
सामने चेहरा रहे मनहूस के

जे भी बा, बाटे बनल बरगद इहाँ
पास के सब पेड़ के रस चूस के

तूहीं ना तऽ जिन्दगी में का रही
छोड़ के मत जा ए 'भावुक' रूस के

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

अभिषेक भोजपुरिया

वंचित बहुजन के विचार के आँच पर खउलत अदहन

कहल जाला कि साहित्य समाज के दर्पण होला। बाकि सही में साहित्य जदि समाज के दर्पण होला त ओह दर्पण में समाज के वंचित वर्ग के दुख, दर्द आ चेहरा काहे धुंधला देखाई देला भा स्थापित साहित्यकार लो के दर्पण में देखाइये ना देला? ई एगो कहे भर के वाक्य बा कि साहित्य समाज के दर्पण ह। सही कहल जाव त साहित्य समाज के दर्पण ओह लो खातिर बा जेकरा दर्पण में खाली ओकरे दुख, दरद, खुशी, उल्लास भा आउर कवनो परिस्थिति देखाई देला जवन ओकरा समाज भा वर्ग के होला। समाज के वंचित वर्ग जेकर संख्या लगभग 85 प्रतिशत बा, ओकरा खातिर दर्पण के धुरा साफ करे बदे ओही में से लोग के निकल के अपना बीच के बात रखे के पड़ी आ दर्पण के जगह मय धरती के शब्द के समुंदर बनावे के पड़ी, जवना के परछाहीं में बहुजन के बात भा स्थिति मय दुनिया खाली पढे ना बल्कि देखबो करे।

एह दशा में आपन बात राखे खातिर शोषित समाज के अनगिनत सजग सिपाही साहित्य के सागर में समा रहल बा लो। एह सागर में कविता कुमुदनी बन के एगो कवि खिल रहल बारें जेकर नाम बा संतोष पटेल।

एह संग्रह के पहिला कविता बा 'अदहन' जवना में संतोष पटेल समाज के ओह लोगन के बात राखत बारन जे रोज सामंतवाद, जातिवाद, धार्मिक उत्पीड़न, अवहेलना आउर गरीबी के पीड़ा से भीतरे भीतर लड़ रहल बा। ओकरा सरकार होखे भा संभ्रांत समाज, सबका ओरी से मिलत बा खाली आजादी दियावे के आश्वासन –

> 'अदहन जब खउली / खदकी
> त झुलसा दी बदगुमानी के मुँह
> फफोला हो जाई
> अन्याय के चेहरा पर, बस'

बाकि ओकरा भीतर बदला के अदहन भाप मारत बा। जवना दिन कवनो मजबूत लकड़ी के तेज आँच हवा दी, ओह दिन ऊ अदहन बन के जरा घाली पाखंडियन के घर, तूड़ डाली शोषक लो के अकड़ आ हिला डाली सत्ता के सिंहासन।

आजादी के बाद हिंदु, मुसलमान, सिक्ख होखे भा इसाई, सब एक दुसरा के हो के रहत आइल बा। बाकि वर्तमान में माहौल कुछ अइसन बदलल कि गाँव के डोमा काका, कब डोमा मियाँ बन जात बारन पते नइखे चलत। संतोष पटेल के लिखल एह किताब के दुसर कविता 'हमार डोमा काका अब डोमा मियाँ काहे?' हिन्दु मुस्लिम एकता के टूटत डोरी के एगो धागा बारन। कविता में लिखले बानी कि डोमा मियाँ धरम से मुसलमान बारन बाकि कबो लागहीं ना देलें कि धरमो कवनो चीज ह।

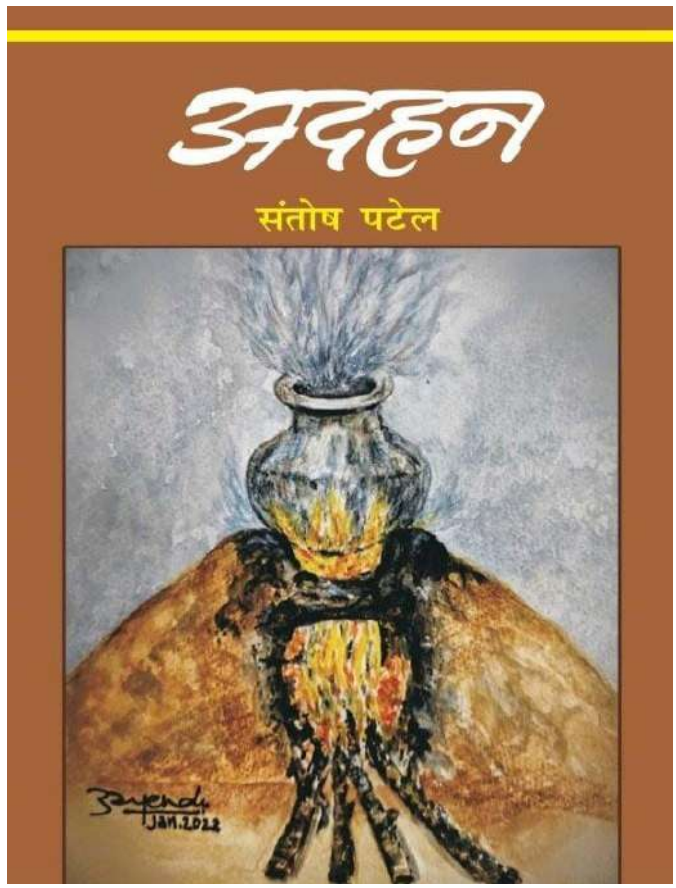

पुस्तक- अदहन
लेखक- डॉ.संतोष पटेल
विधा- कविता
प्रकाशक- कलमकार पब्लिसर्स प्रा. लि., नई दिल्ली
प्रकाशन वर्ष- 2022
पृष्ठ संख्या- 120
पेपर बैक, मूल्य- 175/-

कवि अपना किताब के हरेक कविता में समाज के हरेक पहलू के खाली छूअत नइखे बल्कि ओकरा मरम के वैश्विक पटल पर ले आवे के काम कइले बा। एगो कविता 'किसान' जवन कि वर्तमान परिवेश में किसानन के दसा के देखावत बा। कवि कहत बा कि किसाने एगो अइसन जाति बा जवन सबकर हो जाला। ओकरा से राजनीति अपना हिसाब से खेती करावेला त सिनेमा अपना हिसाब से। उहंवे मीडिया अपना टीआरपी खातिर अपना हिसाब से खेती करावेला।

उहाँ के प्यार पर भी बहुत अच्छा लिखले बानी। ताजमहल प्यार के निशानी ह, ई दुनिया मानेला। बाकि संतोष पटेल के नजर में प्यार के असली नायक दशरथ मांझी बारन, जे पहाड़ काट के सड़क बना देहल। संतोष पटेल सतजुग के दशरथ से कहीं बहुत आगे कलजुग के दशरथ के बतावत बारन, जे रंक होके कबो खत्म ना होखे वाला निशानी आ कहानी दे गइल।

पाखंड कयेक रुप में हमनी के समाज में मवजूद बा। एह पाखंड के जाल में सबसे अधिक केहू फंसेला त ऊ बा बहुजन समाज। रोजे कहीं ना कहीं सुने के मिलेला कि दलित के मन्दिर में घुसे खातिर पीटल गइल। बावजूद ओह मन्दिर के घंटी के बजा के मोक्ष पावे के चाहत में मन्दिर के दुआरी तक लोग पहुंचेला। लेकिन संतोष पटेल के एह मन्दिर के घंटी पसंद नइखे। उहां के कविता 'घंटी जवन हमरा पसन पड़ेला' में स्कूल के घंटी पसंद आवत बा जवन शिक्षित बनावेला।

समाज के हर आदमी के पियास लागे के चाहीं। जदि ऊ पियास अगर पानी के होखे त लोग जात धरम से ऊपर उठ के आदर सत्कार के साथ पियावेला। संतोष पटेल अपना कविता 'पियास' में समाज के तानाबान के विकृत रुप के उजागर करत बारन। जब आदमी के आंख के पानी मर जाला त ऊ इज्जत के पियास भूल जाला। पइसा के पियास मेटावे खातिर आज आदमी नीचता के हद तक गीरत बा।

संतोष पटेल के कविता 'गाँव' गंवई जिनगी के विहंगम दृश्य देखावत बा। गाँव के सोन्ह खुशबू के गमकावत बा त उहंवे गाँव से हो रहल पलायनो के कारण बतावत बारन। गाँव से शहर आके बसल लोग के गाँव के तरे इयाद आवत बा, ओकरो पीड़ा कवि बखूबी दशार्वे में सफल बारन।

एकरा अलावे 'अदहन' किताब के पलायन, जिनगी, बचपन, पसेना, परिवार आदि समेत तमाम कविता बारी स जवन समाज के हर पहलू पर बात रखत बा।

कुल मिला के ई कहल जा सकत बा कि साहित्य साधना में समाहित साहित्यकार संतोष पटेल समाज के तानाबाना के बहुत बढिया से समझत बहुजन के बात अपना पुस्तक 'अदहन' के कविता में राखे में सफल बानीं।

卐卐

गजल

मन के चउकठ पर धइल बाटे दिया उम्मीद के
भुकभुकाते बा बरत अबले दिया उम्मीद के

रोशनी के राह देखत रात पागल हो गइल
लफलफाते रह गइल, यारे, दिया उम्मीद के

सब उजाला खात बाटे बीच राहे में महल
ना जरी लागत बा मड़ई के दिया उम्मीद के

लोग कइसे ओह जगह पर जी रहल बाटे, जहाँ
भोर के नइखे किरन, नइखे दिया उम्मीद के

मन बहुत लरियाह हऽ, सोचे ना कवनो बात के
ई त बाते-बात पर बारे दिया उम्मीद के

जिन्दगी के हर लड़ाई शान से लड़ते रहब
प्राण में जबले जरत बाटे दिया उम्मीद के

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

डॉ. रजनी रंजन

दोहमच: संशय के उद्बोधन

भोजपुरी साहित्य में झारखंड के माटी में भोजपुरिया गंध से देश के भोजपुरिया रंग में रंगेवाली लेखिका डॉ. सन्ध्या सिन्हा, राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त कवयित्री बानी। अइसे त इहां के सहायक प्राध्यापक के पद पर जमशेदपुर में करीम सिटी कॉलेज में बानी बाकिर साहित्यिक पटल पर इहाँ के संगे-संगे बराबर लेखनी चलत बा। डॉ. संध्या सिन्हा जी के जन्मभूमि त पटना बा किन्तु कर्मभूमि जमशेदपुर। शैक्षिक पृष्ठभूमि यदि देखल जाव त तीन विषय भूगोल, हिंदी आ संस्कृत साथहीं शिक्षा में एम. एड तथा भूगोल और हिन्दी मे पीएच. डी. हिंदी आ शिक्षा विषय में यूजीसी नेट उत्तीर्ण कइले बानी।

डॉ संध्या सिन्हा के रचना 'दोहमच' भोजपुरी के पद्य रचना बा। लेखिका के मन के भाव 16 गो कविता के रुप में बड़ी गहराई से सोचल,बूझल आ समाज के गुनला के शाब्दिक रूप के व्यंजित करत बा। पहिलका कविता 'दू अदद औरत' में दू पीढ़ी के अंतर के बूझे के स्पष्ट कारण देखावल गइल बा। वर्तमान समय के जटिलता में पिसात स्त्री आ ओकर ममत्व से यथार्थ चित्रण बा। गजल छंदमुक्त कविता आ चाहे छंद सहित सब विधा में संध्या सिन्हा जी माहिर बानी। 'बुजुर्आ पीढ़ी से' कविता में ईर्ष्या में जरे आ जरावे के बात बड़ी ही सुनर ढंग से कहल गइल बा।

'काठी' कविता पाठक लोग खातिर तनी बूझे में कठिन हो सकेला। काहें कि गूढ़ बात सहज मनई खातिर खटकन नियन होखेला। बाकिर स्त्री के वास्तविक सामाजिक स्वरुप आ स्थिति के चित्रण आ पुरूषवादी समाज के भोगल पीड़ा के रुप में स्पष्ट देखात बा। 'युवा पीढ़ी' कविता बेरोजगारी से बेचैन मन के पीड़ा के रुप में लिखाइल बा। अइसहीं मन के पीड़ा के छटपटाहट के 'हम लिख ना पाई' कविता एगो कवि के वेदना के रूप में लउकत बा जवन ऊ केकरो समक्ष कह ना पइले आ अपना के निरीह बुझ रहल बाड़ी। 'समय' बहुत बढ़िया कविता लिखाइल बा। एह में कवि समय के अइला से अनजान बाकिर गइला के पहिचान के बात कहत बानी। 'खास जिनिगी आम आदमी के' ई रचना में देखावटी जीवन के कथा-व्यथा चित्रित कइल गइल बा। 'सवाल चिरई के' में बहुत सुंदर भाव से लइकिन के अस्मत पर हाथ डालेवाला समाज के बिगड़ैल लोगन के कारण लड़की के मन पर जे प्रभाव होत बा ओकर एतना बढ़िया चित्र उकेरले बानी कि पढ़ के कंठ भर आवता। सबसे बढ़िया लागता कि एही कविता में समाज के सोझा इहो प्रश्न रख देले बानी कि का कसूर रहे चिरई के? यौन उत्पीड़न के बहुत मरमभेदी भाव के परसन बा सवाल चिरई के?'

चरैवेति 'जहाँ आगे बढ़े के प्रेरित करत बा उहईं 'शेष बा' कविता मनई के मन के बता रहल बा कि पूरा केहू ना होखेला। 'बाबा के नाम 'बूढ़

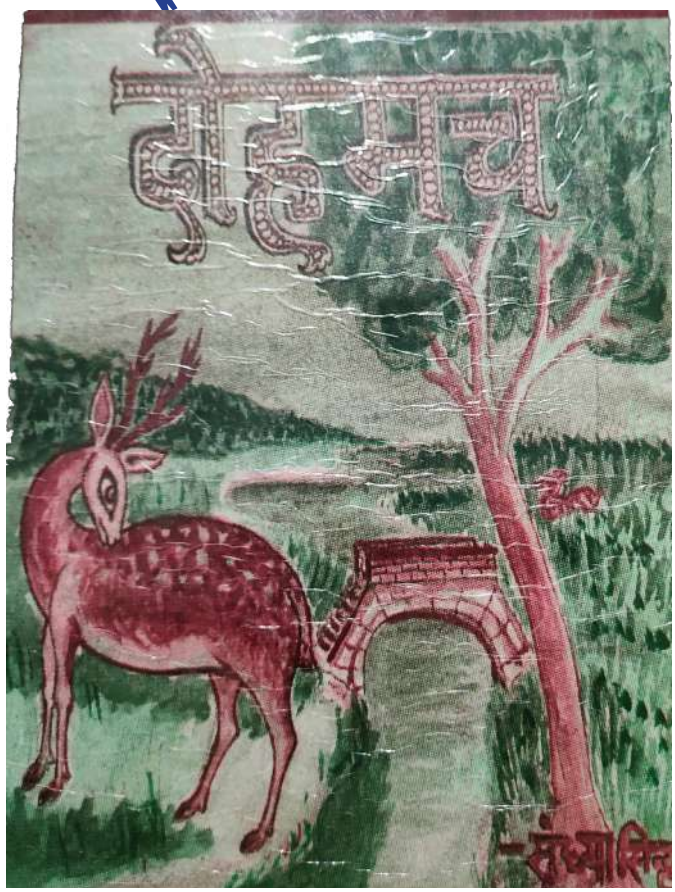

पुस्तकः दोहमच
लेखिकाः डॉ संध्या सिन्हा
विधाः पद्य-संग्रह
प्रकाशकः लोग प्रकाशन, पटना
प्रकाशन वर्षः 2001
पृष्ठ संख्याः 63
पेपर बैक, मूल्यः 51 रुपया

पुरनिया के करनी के प्रेरक के रूप में कवयित्री बखनले बाड़ी। 'लड़िकाई' कविता में कहल गइल बा कि लड़िकाई जीवन भर आदमी के मन के एगो कोना में जीयत रहेला आ समय पा के उफान मारेला। 'शब्द' कविता में शब्द में समाहित ब्रह्म सत्ता के उद्घाटिन इनकर आध्यात्मिक चेतना के परिचायक बा। 'भीतर के कुरुक्षेत्र' अन्तर्मन के द्वन्द के समाज के आगे जीये आ जूझे के कहानी के लयबद्ध कइल गइल बा।

दोहमच, ' एगो कविता के नाम बा आ इहे कवयित्री के रचना सिरिजन के शीर्षक भी। दोहमच याने कि द्वंद, दुविधा, जवन सहज मनई आ प्रबुद्ध के समझ पर भी कविता के कसौटी के झलक बा। द्वंद जीवन के सत्य हवे जवना से सृष्टि के स्फुरण होला। ई कविता अपना अभिधा आ लक्षणा के साथे सार्थक बनल बा। एक-एक कविता में लउकता कि कविता पढते आँखिन में ओकर दृश्य उतर जात बा। जहाँ एक ओर 'सोहरावत' निचुड़ल अउर मलामत जइसन अनेक ठेठ शब्द बा त बड़ी सावधानी के साथ हिन्दी-अंग्रेजी के शब्द के भी ओही में मिला के प्रस्तुत कइले बानी। ई आज के लोगन के मन में भोजपुरी भाखा के ओरी खींचे में मदद कर सकेला । कुल मिला के कविता में मनोदशा के बूझल समझल आ परखल कवि के रूप में संध्या सिन्हा जी लउकत बानी।卐卐

गजल

परेशान रहला से का फायदा बा
जरूरत बा आफत से डटके लड़े के
सफर से ना घबरा के, खुद के सम्हारत
बा तूफाँ से टकरा के आगे बढ़े के

कदम-दर-कदम डेग आगे बढ़ावत
सफलता-विफलता के माथे चढ़ावत
दिवारन प गिर-गिर चढ़त चिउँटियन के
तरह हौसला रख के ऊपर चढ़े के

जे रूकल, जे जमकल, से गड़ही के पानी
ऊ केहू के कामे ना आई जवानी
नदी के तरह प्यास सभकर बुझावत
जरूरत बा पथ पर निरंतर बहे के

पते ना चले कब चुभल काँट कहवाँ
रखे के पड़ी कुछ नशा एह तरह के
अगर कामयाबी के चाहत बा 'भावुक'
अगर बा अमावस के पूनम करे के

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

डॉ. आदित्य कुमार 'अंशु'

भोजपुरी गीत-संग्रह 'सोन चिरइया'

रमाशंकर मनहर के पहिलका पुस्तक सोन चिरइया हमरा लग्गे बा। सोन चिरइया पुस्तक के कवर पेज बड़ा नीमन लागत बा। कवर पेज पर नदी, झरना, पेड़–पौधा, पहाड़ के साथे-साथे एगो उड़त चिरई के फोटो किताब के शीर्षक के साथर्कता पूरा करत बा।

एह किताब के ताना बाना देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक भाव भूमि पर बुनल गइल बा। एह किताब के शुरूआत के दूगो पन्ना बहुत कमजोर बा बाकिर अवरी पन्ना लगभग ठीके बा। पता ना काहे प्रेसवाला अइसन कइले बाड़े।

सोन चिरइया खाली मनहर जी के दरद ना बलुक पूरा देश समाज के दरद ह। एगो सभ्य समाज के ढ़रकल लोर ह सोन चिरइया। मनहर जी के गीतन में सुर–लय–ताल के समावेश बा। उहां के जब कविता पाठ करिला त सुनेवाला झूमे लागेला। एह किताब के शुरूआती कविता लोकधुन सोहर पर लिखल गइल बा। नवकी चुनरिया शीर्षक कविता के एगो बानगी देखीं—

"ज्ञान के चुनरिया में पेवना पर पेवना सटाइल हे
सिकुरत–सिकुरत भइली ओख बदन सब उघार भइले हे।"

एह गीत में कवि विद्या के देवी सुरसती माई के गोहार करत विनवत बाड़े। हे माई हमनी के आपन आसिरवाद देईं जे से कि कुछ लिख-पढ़ी सकी जा।

सोन चिरइया शीर्षक के एगो गीत —

"सोन चिरइया वन-वन रोवे नैना नीर झारी
बचावऽ भइया ! जात बाटि लजिया हमारी।
सिर हमरे काश्मीर के देखऽ लागल खींचा तानी
वेद शास्त्र, इतिहास में तोहरे पूर्वज के निशानी।

भारत के स्थिति आ दशा के वर्णन एह गीत में भइल बा। काश्मीर पर बुरा नजर लाग गइला से ई स्वर्ग नरक हो गइल बा। हमरा देश के कवि मन आहत बा।

जाति-पांति के व्यवहार से दुखित कवि के आपन उद्गार—

"आवऽ भाई मिलके अइसन दीप जराई जा
नेह प्रेम बरसावे हर आदमी-आदमी आ घर-घर
जेमे ना अन्याय रहे ऊ नीति बनाई जा।"

ई गीत समाज के असलियत के आइना दिखा रहल बा। एह गीत के माध्यम से कवि अन्याय, जाति-धरम पर चोट करत भाव के व्यक्त कर

किताबः सोन चिरइया
लेखकः रमाशंकर 'मनहर'
विधाः गीत संग्रह
प्रकाशकः नवजागरण प्रकाशन,नई दिल्ली
प्रकाशन वर्षः 2021
पृष्ठ संख्याः 124
किताब के मूल्यः 150 रु

रहल बाटन।

देश के मालिक कुर्सी खातिर
छोड़ले नीति भलाई
कुर्सी कायम रहे बराबर भलही देश
बिकाई।

राजनेता लोग आपन कुर्सी बचावे खातिर कवनो कर्म-कुकर्म करे के तइयार बा ।

दहेज पर व्यंग करत कवि के एगो अवरी रचना के बानगी-

इरही-बिरही सुनि धिअनी के डहरी
चलल मोहाल भइल
बेटा बेचवन के आगे घिघिआतो
तीन-चार साल भइल।

समाज में फइलल अइसन कुप्रथा के कारन आज लइकी आत्महत्या के शिकार होत बाड़ी सन। सुयोग्य वर आ सुयोग्य दुलहिन दूनो के समस्या बा ।

'लायक ललनवा' शीर्षक से कविवर मनहर के एगो रचना —

'धरती के दुइएगो लायक ललनवा
फउजी जवान दूजे खेतिहर किसनवा ।।'

देश के सीमा सुरक्षित बा आ दू जून के रोटी मिलत बा एकर पूरा क पूरा श्रेय देश की सीमा पर तैनात भारतीय जवान बाड़े आ दोसरका किसान बाड़े ।

देश प्रेम के भावना से भरल कवि के एगो रचना —

ई तिरंगा हवे प्रान के आधार हमनी के
हरा भरा हउवे ई देश
हरियर रंग देला संदेश
ऊजर सद्भावना शान्ति के हऽ हथियार हमनी के ।

देश के शान तिरंगा सबके एक सूत में बान्हेवाला हार ह। एही के नीचे शान्ति, सद्भाव के संग्गे सभे भारतवासी रहेला। ई पूरा दुनिया में परचम लहरावत प्रेम के संदेश देला।

सोन चिरइया काव्य संग्रह में हर रंग-ढंग के रचना बाड़ी सन। मनहर जी के सिंगार के एगो रचना के बानगी बा —

नेहिया के रसरी में हमके फँसाइके
कहाँ चलि गइलीं रउवां जिया तड़पाइके

सोन चिरइया में कविवर मनहर अपना के एकही दिशा में बान्हि के नइखे रख पवले बाकिर हर विषय पर आपन कलम चलवले बाड़न ।

व्यंग पर बहुत चर्चित कविता के एगो बानगी

पेट नाही भरऽ ता तऽ माँगि लऽ डिठारे बाकी
ठोकि के सुता के जान मारऽ जनि मितऊ।
मटिए के तोहऊँ हमहूँ मटिए के बाकी
नजरी के फेरे जान मारऽ जनि मितऊ ।

एह संग्रह के पूरा गीत कवनो ना कवनो संदेश देत आपन प्रभाव छोड़ेला बाकिर ई गीत समाज के तथाकथित जनप्रतिनिधि पर चोट कर रहल बा।

एह संग्रह के रचना खाली गीत ना, बल्कि बिखरत समाज आ टूटल सिस्टम के जोड़े वाली एगो लमहर कड़ी बा। कविवर मनहर के भासा ठेठ भोजपुरी बोल चाल के बा, एही से एह संग्रह के गीतन के भाव समझे में आमजन के कवनो परेशानी ना होई। सोन चिरइया गीत संग्रह समाज के हर डेग पर लड़त-जूझत गाँव आ समाज के फेरु से सोना के चिरई बनावे के दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास बा। मनहर जी अपना कवि धर्म निभावे में सफल भइल बानी।

卐卐

गजल

अनजान शहर बाटे, अनजान सफर बाटे
मजबूर मुसाफिर बा, चलहीं के डहर बाटे

हर मोड़ पे आके हम गुमराह भले भइनी
पर आस मरल नइखे, मंजिल प नजर बाटे

तब गैर रहे लूटत, अब आपने लूटत बा
एह देश में सदियन से, लूटे के लहर बाटे

मतलब के निकलते ही बर्ताव बदल जाता
फइलत बा फिजा में अब कइसन दो जहर बाटे

भाई के मुसीबत में, भाई ही सटत नइखे
एह खून के रिश्ता में, कइसन ई कसर बाटे

'भावुक' हो ई जिनिगी तऽ, पतझार के पतई हऽ
ई काल्ह रही कहँवाँ, केकरा ई खबर बाटे

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

आनन्द कुमार

मन दर्शन वाली किताब 'मन पाखी'

जिनगी में सबसे बड़ अवरी सबसे जरूरी बाति होला अपना मन के अंदर झांकल। जब मनई अपनी आत्मा के भीतरी देख लेला, तब ओह के कवनो अवरी जगह देखे के जरूरत ना रहेला। सगरो सुख, दुख, भगवान, शैतान, सभकर अंश आदमी के आत्मा में बसेला। जब हम डॉ० रामसेवक विकल जी के रचना संग्रह "मनपाखी" पढलीं तब हमके अइसन आभास भइल जइसे केहू हमरी मन के भीतर के अलगा अलगा जगहि के बात कहत बा। एह किताब के नाम मनपाखी काहें बा, रउरा सभ के एकरी पहिली कविता से ही बुझा जाई। एह कविता के आखिरी छंदः-

जब अइहें बनि के बहेलिया बटोहिया हो,
नेहिया के डोलिया सजाइ।
तब ऐसी पिंजरा से छुटी करी पाखी हम
उड़ि जइबो जग के भुलाई।

ई कविता संग्रह एगो दर्शन के किताब बिया। डॉ० विकल जी प्रख्यात साहित्यकार रहलीं। उनकर पूरा जिनगी साहित्य सेवा अवरी मानव सेवा में बीतल। एह किताब में उनहींके जिनगी के निचोड़ बाटे। एहकर सीधा सरल भाषा ना सिर्फ पढ़े वाला के बलुक अगर केहू पढ़े में सक्षम नइखे, तबो ऊ सुनियो के बूझ सकेला। एह किताब के एगो निरगुन के छंद बा किः-

जिनगी के राह मन भरमावेले हो राम
आगे आगे जालS चंदा, पिछवां बदरिया छोड़ि।

आज काल्ह के स्वार्थी समाज में, रुपिया-पइसा के लालच सगरी दुनिया में फइलल बा। लोगबाग दुनिया भर में खाली आपने फायदा सोचत बा। चाहे ओकरी फायदा में कतनो आदमी, जीव के नुकसान हो जाए, ओकरा फरक नइखे पड़त। अइसने लोगन के सिखावत एगो बिरहा डॉ० विकल जी एह पुस्तक में लिखले बानी जेः-

केतने अइलन केतने गइलन
केतने जड़ चेतन भइलन
एह दुनिया के नश्वरता में
केतने वीर पुरुष गइलन

दुनिया नश्वर बा। कवनो चीज एह दुनिया के आखिरी समय तक ना जाई। एह कविता संग्रह के सब रचना के भाषा बहुते सरल बा। गंभीर से गंभीर विषय के बड़ा नीक अवरी आसान भाषा में बतावे के विकल जी पूरा मन जोग परयास कईले बानी। सिंगार, निर्वेद जईसन भावन के

कृतिः मनपाखी
रचनाकारः डॉ० रामसेवक "विकल"
विधाः कविता-संग्रह
प्रकाशकः भोजपुरी संस्थान, मार्ग-3
प्रकाशन वर्षः 2004
मूल्यः 50 (पचास रुपए मात्र)
पृष्ठः 56

जवन तरीका से उन्हां के लिखले बानी, बहुते रुचिकर बा। ईश्वर के भक्ति अवरी श्रद्धा हम सबका अपना भितरी रखे के चाहीं। एह तरे के एगो कविता बा –

देहिए में राम बिराजे लन
मूरत गढ़ला से का होई?
हर सांस सांस में सुमिरन बा
हर शब्द शब्द में मंतर बा
हरि सुमिरन तू मनहीं में कर२
हल्ला कईला से का होई?

जब एह तरे के निरगुन भक्तिवाद जब ई किताब एतना सरल भाव में बतावत बिया, तब आप सभ जान सकीला कि केतना सुंदर ई पुस्तक बीया। डॉ० विकल जी बहुते समर्थ रचनाकार रहली। उनकर रचनाकर्म आजुओ बहुते कुछ अप्रकाशित रह गइल बा। ई किताब उनका बड़हन काम के एगो बस छोट बाकिर गंभीर नमूना बा। हर तरह के काव्य, गद्य अवरी सब विधा में लिखे वाला विकल जी के कुछ रचना के संग्रह ई मन पाखी किताब एक तरीका से उहां के प्रतिनिधि संग्रह कहल जा सकेला। रउवा सभे एगो सिंगार रचना के बानगी देखीं, जेह में बड़ी सुघर तरीका से विकलजी दर्शन के निचोड़ डलले बानी –

पनिया से प्रान पराने से जोती
जोतिया में चमकेले निर्मल मोती
मोतिया में सैयां के छिपल पीरितिया

बूझे हो सखी ना तू त हउ एहवतिया
करेजवा में बा मोरे सैयां के सुरतिया

बहुत कमे साहित्यकार लोगन में ई छमता होखे ला जे अलग-अलग भाव के श्लेष में कर के कवनो एगो रचना में समा सके। एगो रचना के बानगी देखीं, जवन ऊपर ऊपर त सिंगार के रचना बीया, लेकिन ओकर मूल भाव एतना गंभीर बा जे पाठक पढ़ला के आनंद से एकदम डूब जाई –

जाके बतईह बटोहिया हो
हमरा उनहीं पर आस
एकही भरोसा बा उनही पर
उनही पर विश्वास
बहुत दिन से जिनगी पियासल
दरसन खातिर मनवा उदासल
जोहिला उनकर रहिया हो

एह कविता संग्रह में निरगुन, सगुन, कीर्तन, गीत, गजल, सोरठा, दोहा, चौपाई, बिरहा कई तरह के बिधा में रचना बाड़ी सन। अध्यात्म अवरी दर्शन के साथ, सगुन अवरी निरगुन भक्तिवाद के साथ अद्वैतवादो समाहित कइले बानी विकलजी एह में। सिंगार और व्यंग, गंभीर हर तरह और हर रस के रचना पाठक के एह में मिली। समीक्षक के झरोखा से हम ई किताब के आपन सबसे नीक लागे वाली किताब मानब। अंत में प्रकाशक, प्रायोजक के धन्यवाद देतानी जे ऊ लोग बहुत बढ़िया काम कइले बा लोग। किताब के मुख पृष्ठ नीक बा। मनपाखी के नाम के सार्थक करत बा। 卐卐

गजल

राह बाटे कठिन, मगर बाटे
चाह बाटे अगर, डहर बाटे

होखे खपरैल भा महल होखे
नेह बाटे तबे ऊ घर बाटे

तींत भा मीठ जे मिलल हक में
ऊ त भोगे के उम्र भर बाटे

दर्द खउलत बा मन के अदहन में
घात पर घात के असर बाटे

बात ऊ सब भुला दीं, जवना से
जिन्दगानी भइल जहर बाटे

आखिरी मान के जिहीं हर पल
का पता कब ले ई सफर बाटे

काल्ह होई बिहान ए 'भावुक'
ई अन्हरिया त आज भर बाटे

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

अजय साहनी

श्री मूंगालाल शास्त्री क एकलव्य

भारतीय गुरु शिष्य परंपरा में एकलव्य कवनो परिचय के मोहताज नइखन। उनकर गुरु दक्षिणा 'न भूतो न भविष्यति' के एगो अप्रतिम उदाहरण बा-जवना कारण भारतीय साहित्य में उनका गुरु भक्ति पर खूब लिखाइल बा बाकिर एह अधिकांश लेखन में एकलव्य के महिमामंडिते कइल गइल बा आ बहुत जगे त इहाँ तक तर्क दिहल गइल बा कि जदी द्रोण एकलव्य के अंगूठा दक्षिणा में ना ले ले रहतें त एकलव्य के एतना यश भा अमरता के प्राप्ति ना होइत।

एह संदर्भ में श्री श्री रविशंकर जी कहले बानीं- "जब कोई इस घटना को ज्ञानियों की नजर से देखता है तो पाता है कि यदि यह घटना न घटित होती तो कोई एकलव्य को कभी नहीं जानता "...." देखो! द्रोणाचार्य की महानता, -उन्होंने दोष अपने ऊपर ले लिया और अपने शिष्य एकलव्य का उत्थान किया।"

अइसन दृष्टिकोण सीधे सामाजिक विसंगतियन के पक्ष में हो जाता।

जदी एकलव्य के अंगूठा ना कटाईल रहीत त ऊ तत्कालीन समय के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर रहतन आ संभावित महाभारत युद्ध में जीत के भा वीरगतियो पाके अमर हो जइतें जइसे कि कर्ण ।

खुद भगवान श्रीकृष्ण सकरलें बानीं-

एकलव्यं हि साण्गुष्ठम्षक्ताः देव दानवाः।
स राक्षसोरगाःपार्थ विजेतुं युधि कर्हिचित।।

त्वहितार्थे च नैषदिरऽगुष्ठेन वियोजितः ।
द्रोणआचार्यकं कृत्वा छद्मना सत्य विक्रमः।।

त्वहितार्थे तु स मया हतः संग्राम मूर्धनी।।

बात स्पष्ट बा कि एकलव्य जइसन महान प्रतिभा के साथ छल आ अन्याय कइल गइल रहे।

एही सब छल प्रपंच आ अन्याय के प्रतिकार, साथ ही समाधान खातिर श्री मूंगालाल शास्त्री के खंडकाव्य "एकलव्य" भोजपुरी साहित्य में एगो ध्रुव तारा खानी चमकता।

मूंगालाल शास्त्री के एकलव्य में गुरु भक्ति ना--गुरु भक्ति के आड़ में निम्नवर्गीय शिष्य के साथे हो रहल जातीय भेदभाव, शैक्षणिक भेदभाव, सामाजिक भेदभाव आदि पर लमहर सवाल खड़ा कइल गइल बा।

ई सब कुरीतियन के बलिवेदी पर कोई कब तक कटाई? कोई कबले

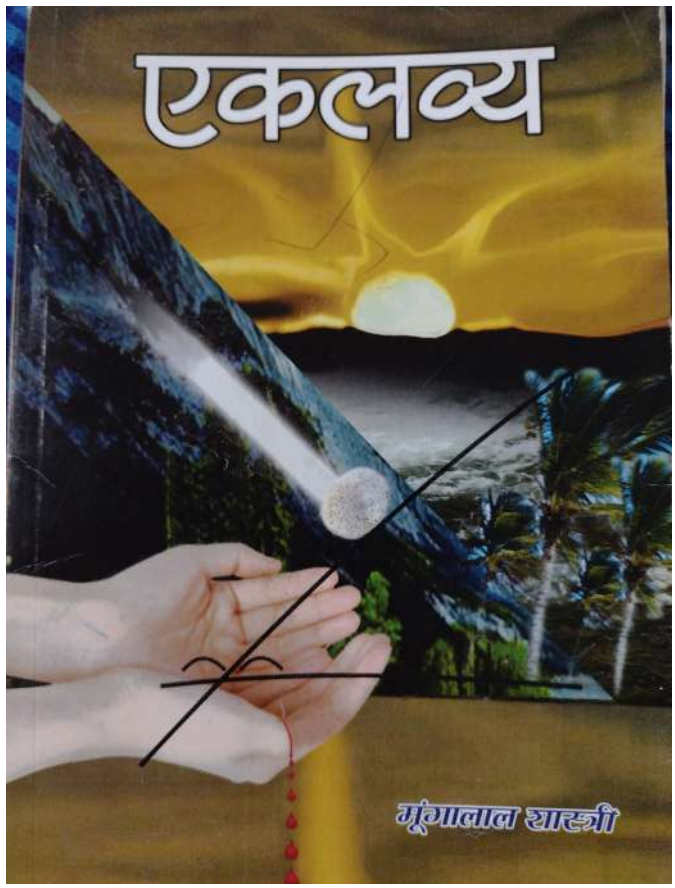

किताबः एकलव्य
लेखकः मूंगालाल शास्त्री
विधाः खंडकाव्य
प्रकाशकः भोजपुरी भारती,जनता बाजार,सारण
प्रकाशन वर्षः 2014
पृष्ठ संख्याः 152
किताब के मूल्यः 250 रु

छहनराई?

एह संदर्भ में कवि के सबसे बड़ा सवाल त इहे बा कि द्रोण का सचमुच एकलव्य के गुरु रहस?

ऊ त अपना शरण में आइल एकलव्य के अपमानित कके भगा दिहले रहस –

नभ-कुसुम के असरा छोड़ जा, तू आपन करम जगावे।
शर विद्या का बदला जा सीख, केंग नाशक इशु चलावे।।

उनका मन में त पहीलहीं से निम्न जाति के प्रति पूर्वाग्रह रहे–

गिला करे जाति वंश के,खूब ओकरा पेशा के।
हीनता हूल द जरिया हिया, उछहस नाहि अनेसा से।।

वास्तव में एकलव्य त प्रकृति के शरण में, प्रकृति के मार्गदर्शन में स्वप्रशिक्षित धनुर्धर रहस। उनकर सच्चा गुरु त प्रकृति रहे। अइसने लोग खातिर वड्र्सवर्थ कहले बारन–

Nature is the guardion(or the teacher) of My soul.

तब एह दृष्टि से द्रोणाचार्य के,एकलव्य से अंगूठा मांगे के कवनो अधिकारे ना रहे बाकिर द्रोण के मूर्ति के गुरु मान लिहल एकलव्य के लमहर भूल रहे जवना के गलत फायदा गुरु द्रोण उठवलें–

दुत्कारल के तीर तहे जा, एक छेद दूं घाव करे।
जरा तिहा का लेप मलहमे, हो निछावर आप मरे।।

अपना सच्चा शिष्य के साथे छल देख प्रकृति के हृदय में हाहाकार मच गइल–

हाहाकार मचल अंबर में, धरती थर थर काँपे।
दिनकर दीन घुंघट घटा मुख, तुरुते लांगल झाँपे।।
दरक गईल दिल दसों दिशा के, हँ अचके मुक्का लागे।
अब दिकपाल दिग्गज सइहारे,बेकस कतहीं भागे।।

आ ऊ घड़ी पीड़ासक्त प्रकृति के मुंह से जइसे शाप निकल गइल–

सावधान! सरधा के मोल ना, जगत बनी जो रोगी।
मति मरी मरे के पहिलहीं, बादो वंश ले भोगी ।।

..... महाभारत में ई फलीभूतो भइल ।

अंगूठा दान कइला के कुछ क्षण बाद एकलव्य भावना के भ्रम जाल से निकल गइलन आ उनका ई बात बुझा गइल कि ऊ सामाजिक जातीय विषमता, शैक्षणिक भेदभाव के छल प्रपंच में पीसा गइलन।

उनकर रोआं-रोआं एह कुकृत्य अन्याय के धिक्कारे लागल आ प्रतिकार स्वरूप अपना हाथ के बहत खून से गुरु द्रोण के मूर्ति के मुंह रंग देलन ताकि दोबारा ये संसार में अइसन दोअंखी गुरु मत लउकस आ फेरू केहू के एकलव्य ना बने के पड़े–

काहे कि...

राजा के बेटा राजा ना, राजा बनी जे लायक बा।
ऊहे धनुर्धर ना कहानी, जेकरा हाथे सायक बा।।

आ अइसन होत रही त एकर परिणाम ना कबो अच्छा भइल बा ना होई–

दागी दगाबाज शिक्षा नीति जब, गोड़ छाँट छोट करे।
बनके आग सबुर तब भड़के, देश कटे, जरे, मरे।।

काव्य के सभ गुण जइसे....भाव सौंदर्य,कलागत सौंदर्य, प्राकृतिक सौंदर्य,छंद विधान, दर्शन आदि से परिपूर्ण श्री मूंगालाल शास्त्री के खंडकाव्य "एकलव्य" भोजपुरी के एगो अनमोल कृति बा।卐卐

गजल

जुल्म के सामने चुप रहल
ई त जियते-जियत बा मरल

साँच के साथ देवे बदे
खुद से अक्सर लड़े के पड़ल

पाँव में हमरा काँटा चुभल
दर्द उनका हिया में उठल

हमरे रोपल रहल जंग ई
हमरे कीमत भरे के पड़ल

भीखमंगा सड़क पर सुतल
जइसे बालू प मछरी पड़ल

जेके पत्थर में खोजत रहीं
ऊ त धड़कन में हमरा मिलल

अब त 'भावुक' हो तहरा बिना
दू कदम भी बा मुश्किल चलल

मनोज भावुक

पुस्तक समीक्षा

राजेन्द्र प्रसाद

रेत-रेत नदी: साहित्यिक मूल्यांकन

क्रौञ्च पक्षी की जोड़ी में से एगो पक्षी कवनो बहेलिया के बाण से घायल होके धरती पर गिर गइल, ओके खून से लतपथ देखि के क्रौञ्ची करुण स्वर में विलाप करे लागलि। ई घटना जब वाल्मीकि जी देखलें त उनका मुख से करुण रस अनायासे श्लोक रूप में फूटि पड़ल–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम : शाश्वती समाः।
यत्क्रौञ्च मिथुनादमेकमवधी काममोहितम॥

ई श्लोक वेदवाणी से अलग छन्द क नवीन रचना रहे। कहे के भाव ई बा कि कविता चाहे जेवन होखे, भावना प्रधान मानल जाले। एही से गद्य की अपेक्षा कविता व्यक्ति के मानसपटल पर अधिक प्रभाव डालेले। 'रेत-रेत नदी' क यशस्वी कृतिकार जगत नारायण वर्मा जी एही भावना से भावित होके लिखले बानी कि कविता सिर्फ कविता होली, न अच्छी, न बुरी कविता, न नयी, न पुरानी कविता, न टटकी, न बासी कविता, कविता सिर्फ कविता होली। कविता की सम्बन्ध में वर्मा जी के विचार विचारणीय बा। उहाँ के कथन बा कि –

जब लिखे खातिर कुछऊ लिखल जाला
आ जवन कुछ लिखल जाला ओके 'गद्य'
आ लिखले बिना न रहल जा सके
आ अपने आप जवन लिखा जाय
ओके 'पद्य' कहल जाला

कवि वर्मा जी रस छन्द अलंकार योजना में पूरा माहिर बानी। देश-काल-पात्र-वातावरण के अनुसार रस छन्द अलंकार के प्रयोग कवि-कृति में बखूबी देखल जा सकेला।

यथार्थ की मरुपेटिका में कवि जाने भर में कुछऊ लिखला में चूकल नइखें। जिनिगी में अनेक बार उतार-चढ़ाव आवेला लेकिन सबकी साथे सामञ्जस्य बनावे के परेला। जीवन की सगरो परिस्थितियन में कवि आपन पाँव साधि-साधि के रखत नजर आवत बानें। जेठ की तपन की बाद सावन क रिमझिम फुहार केकरा ना भावेला? आजु पतझड़ बा, त कल बहार भी। न्यायालय न्याय बदे बनावल गइलें लेकिन व्यवहार में कहीं झूठ के साँच, त कहीं साँच के झूठ बनावे के युक्ति-जोगाड़ लगावल जाता। आखिर कलमकार की लगे कलमिये त सहारा होखेले। सात-आठ दशक बाद भी आजादी संकट में परलि बा। चिन्तन आ सोच क नदीजल नीचे सोखत-सूखत गइल, ऊपर रेत क तलछट जमत गइल, जेमे फँसल नाव के सब लोग अपनी-अपनी ओर खींचि रहल बा लेकिन नाव तनिको हिलति भी नइखे। आखिर आपन वजूद मिटिये जाई त का बची? ई एगो चिन्ता का विषय

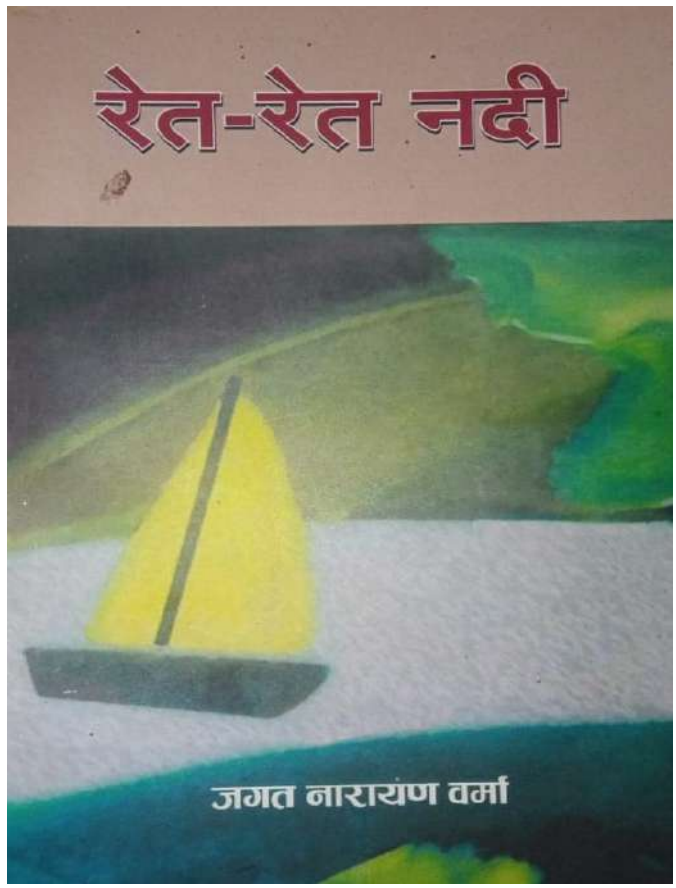

किताब: रेत-रेत नदी
लेखक: जगत नारायण वर्मा
विधा: कविता-संग्रह
प्रकाशक: सर्जनपीठ, प्रयागराज
प्रकाशन वर्ष: 2021
पृष्ठ संख्या: 100
किताब के मूल्य: 150 रु

बा। आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कवि के शब्दन में आदमी क पहचान ओकरी रूप से नाहीं, बल्कि स्वरूप से होला–

ऊ आदमी, आदमी नाहीं हऽ, जेकरी में आदमीयत न बा,
लाख करे पूजा-पाठ सिजदा जेकर साफ नीयत न बा।

जइसे हाथी क दुश्मन ओकर दाँत ह, गैंडा क शत्रु ओकर सींग ह, हिरन क बैरी ओकर चाम ह, बाघ–शेर क बैरी उनकर खाल ह, नदी के शत्रु ओकर बहाव ह, ओही तरह आदमी क शत्रु औ आदमी की भीतर क अहंकार ह। आदमी बदे ई नसीहत बा। अइसही कासी में उहाँ विशुद्ध प्रेम क अभाव बा, सब कुछ भौतिकवाद में ढलि रहल बा, उहाँ ना त रैदास क बन्धुत्व प्रेम लखात बा और ना कबीर क ढाई आखर वाला प्रेम केहू पढ़े–पढ़ावे वाला लउकत बा। पिण्डदान के नाम पर महज बनावट बा, यथार्थ पिण्डदान कहाँ बा? जेमे पिण्ड यानी शरीर के भगवत्कार्य में, लोकहित में अर्पित क दिहल जाला। धोखेबाज आदमी की बजाय बफादार कुत्ता बढ़िया। जोंक, ताल–पोखरा में कबो अपनी जाति–बिरादरी के खून ना चूसले बाकी आजु क आदिमी, अदिमिये के खून चूसे वाला बा, धिक्कार अइसन धूर्त आदमी के।

कवि की निगाह में बच्चा जनमते ही मृत्यु की ओर जाये लागेला, अन्यत्र भी कहल गइल बा कि अहनि–अहनि भूतानि गच्छन्ति यं मन्दिरे ... हालाँकि जनम भइला पर थरिया बजावल जाले, जश्न मनावल जाला, जबकि महाप्रयाण में सुसुकि–सुसुकि रोवल जाला। पनघट पर टूटल–फूटल घड़ा की माध्यम से कवि क नसीहत बा कि ई संसार सपना ह, इहाँ केहू ना अपना ह, एक राह से आना त एक राह से जाना ह। सबकर परिणाम एकही ह।

एहिलिये प्रभुता पा के गुमान कइल बेकार बा। क्षणभंगुर जीवन के का भरोसा? आजु बा, काल्हि नाहीं। चुनौती भरल संसार में उचित राह तलाशे के बा, अपने के तराशे के बा, आदिमी नंगे आइल, जीवन भर कमाइल–खाइल, बाकी जीवन की अन्तिम पायदान पर सारा वस्त्र उतार लियाइल, रेत–रेगिस्तान में आदिमी अकेला रहि गइल, हायरे नियति ...!

लम्बा जमाना देखि चुकल कवि वर्मा जी की पैनी निगाह गाँवन की देश में प्रजातन्त्र माखौल बनि के रहि गइल बा। गाँवन क देश भारत में गाँव पिछड़त गइलें, शहर–कस्बा बढ़त गइलें। भय भूख भ्रान्ति भीख दर्द चीख शोषण उत्पीड़न से बेबस रोटी के मोहाल जनता छटपटा रहलि बे जबकि रईसन क पालतू कुत्ता दूध के कुल्ला करत बाड़न। विधान अपनी सुख–सुविधा खातिर बनावल जाता, जनता चूल्हेभाड़ में जाय त जाय, जबकि इतिहास की मुताबिक ई जानकारी सबके बा कि जन–आक्रोश की ज्वाला से केहू बचि ना सकेला।

अपनी सान्त्वना–सन्देश में कवि की ओर से नसीहत बा कि सब लोग सर्व–धर्म समभाव की धरातल पर एक दूसरा की सुख–दुख में सहभागिता करे त देश– दुनिया में जइसन चाहीं ओइसन खुशहाली हो सकेले। सूर्य–चन्द्र क एक ही साथे उदय–अस्त भइला से जाहिर होता कि विश्व–परिवार नियम–निबद्धित बा, नियम–भंग से भारी आपदा सम्भाव्य बा। संसार सुख–दुख क खेल बा, दूनों में अटूट मेल बा। अन्तर्मन में विशालता आ गइला पर सुख–दुख, सुन्दर–असुन्दर में भेद ना रहि जाला, असुन्दर भी सुन्दर लागेला आ दुख में भी सुखानुभूति होले। दर–असल सन्तुलन ही सृष्टि क जीवन–चक्र ह एही बाति के गीता में समत्व योग कहल गइल बा। दीवाली क मतलबे का, कि अन्तर्मन में अन्हारे रही ? भीतर की एगो बरल दीया क बराबरी बाहर क सौ गो सूरज भी ना करि सकेलें। फफ

गजल

जुल्म के तूफान के रउरे कहीं, कबले सहीं
खुद ना काहें बन के तूफानी हवा उल्टे बहीं

भेद मन के मन में राखब कब ले अइसे जाँत के
आज खुल के बात कुछ रउरो कहीं, हमहूँ कहीं

का हरज बाटे कि ख्वाबे के हकीकत मान के
प्यार के दरियाव में कुछ देर खातिर हम दहीं

घर बसल अलगे-अलग, बाकिर का ना ई हो सके
रउरा दिल में हम रहीं आ हमरा में रउरा रहीं

छल-कपट आ पाप से जेकर भरल बा जिन्दगी
कुछ हुनर सीखे बदे तऽ पाँव हम ओकरो गहीं

जिन्दगी के साँच से महरूम बाटे जे गजल
ओह गजल के हम भला 'भावुक' गजल कइसे कहीं

मनोज भावुक

अध्याय-4

भोजपुरी सिनेमा के आधुनिक युग (2001-2022)

हालाँकि इहो बात साँच बा कि भोजपुरी सिनेमा के आधुनिक दौर 2011 ले आवत-आवत 10 साल के हो गइल रहे लेकिन कंटेंट अउरी कहानी में धीरे-धीरे एकरस होत गइल रहे। उहे हीरो हीरोइन के प्यार अउरी ओकरा खिलाफ समाज, उहे ठाकुर अउरी एमएलए के अत्याचार अउर फिर हीरो के प्रतिकार, ए तरे के कहानी खूब बने लागल रहे, बस अंतर होखे त कलाकार में अउरी फिल्म के नाम में। इहे दौर रहे जब भोजपुरियो मे गुटबाजी शुरू हो गइल। फलाना स्टार के साथे ओकरा इर्द-गिर्द के कलाकार, विलेन सब एक जइसन होखे लगले माने कि अगर रउआ फिल्मन के पोस्टर देखीं त लागे कि पिछलके फिलिमिया ह खाली नाम चेंज भइल बा। ई चलन भोजपुरी सिनेमा खातिर दुर्भाग्य रहे जवन आगे चलके लोग के बुझाइल।

दूसरा काल खंड (2011-15)

साल 2011 भोजपुरी सिनेमा के स्वर्णिम वर्ष के रूप में मनावल गइल। कहीं भोजपुरी फिल्म अधिवेशन, कहीं भोजपुरी फिल्म अवार्ड त कहीं भोजपुरी सिटी सिने अवार्ड। मतलब सालो भर भोजपुरी फिल्म के उत्सव भइल। दिल्ली में आयोजित विश्व भोजपुरी सम्मलेन में भी फिल्मन पर विशेष सत्र रखल गइल। ओह में भोजपुरी सिनेमा के 50 साल के सफर पर हमार बनावल डॉक्यूमेंट्री भी देखावल गइल अउर पहिला बार हमरा विशेष प्रयास पर भोजपुरी सिनेमा के दर्जन भर हिरोइन, हीरो, निर्देशक, कोरियोग्राफर आ चरित्र अभिनेता एक साथ एतना तादाद में शिरकत कइले रहले। फिल्म सत्र के संचालन के सौभाग्य भी हमरे मिलल रहे। ओही साल पटनो में साल के शुरूआते में स्वर्णिम भोजपुरी के नाम से भोजपुरी सिनेमा पर तीन दिन के कार्यक्रम आयोजित भइल जे में भोजपुरी फिल्मन के दिग्गज लोग शिरकत कइल। इहवों भोजपुरी सिनेमा के अर्ध-सदी के सुनहरा सफर पर आयोजित एगो सेमीनार के संचालन के सौभाग्य हमरा मिलल जवना मे अभिनेता कुणाल सिंह, मनोज तिवारी, रविकिशन, **निर्माता** अभय सिन्हा, टी पी अग्रवाल, शारदा सिन्हा, मालिनी अवस्थी अउरी निर्देशक अजय सिन्हा समेत कई गो फिल्मी हस्ती लोग आपन-आपन बात रखल।

2012 में ही निरहुआ के फिल्म आइल 'एक बिहारी सौ पर भारी' अपना अनूठा टाइटल से ई फिल्म काफी चर्चित रहल आ महाराष्ट्र में कुछ दिन बैन भी रहल। बाद में मामला सुलझल अउरी ई फिल्म दर्शकन के बीच आइल। दिनेश लाल यादव निरहुआ के संवाद बहुत हिट भइल। फिल्म के कहानी बिहारी के गौरव आ शान के इर्द-गिर्द बा।

साल 2011 के सफल फिल्मन के चर्चा कइल जाव त ए साल निर्देशक राजकुमार पाण्डेय के ट्रक ड्राईबर, गायक से हीरो बनल खेसारी लाल यादव के फिल्म साजन चले ससुराल अउरी निरहुआ इंटरटेनमेंट के बैनर तले बनल पारिवारिक फिल्म औलाद अच्छा बिजनेस कइलस।

निर्देशक असलम शेख के औलाद के सफलता ई बात के साबित कइलस कि अश्लीलता के तरफ मुड़त फिल्म इंडस्ट्री के अइसन पारिवारिक फिल्म के जरूरत बा अउरी अगर ओके सही ढंग से प्रस्तुतिकरण होखे त उ चलबो करी। एही साल हैदर काजमी के रंगबाज आ मनोज पाण्डेय के मैं नागिन तू नगीना के सफलता ई भ्रम के तूर देहलस कि बिना स्टार के फिल्म ना चलेला। अगर स्टार के फिल्मन के बात कइल जाय त मनोज तिवारी आ संगीता तिवारी के फिल्म इन्साफ, **निर्माता** रमाकांत प्रसाद के निरहुआ आ विराज भट्ट अभिनीत दिलजले भी सफल रहल।

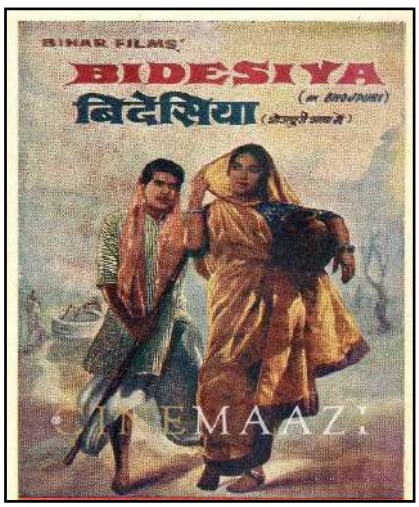

एह साल कुछ भोजपुरी फिल्म लीक से हट के बनली सन अउर खूब चर्चा मे भी अइली सन जइसे कि नीतू चंद्रा के देसवा अउरी किरण कान्त वर्मा के फिल्म हमार देवदास। साहित्यिक कृति पर भी एगो फिल्म बनल 'सैंया डराइबर बीबी खलासी'। ई तीनो फिल्म साफ सुथरा रहल अउर एकनी के अलग ऐतिहासिक महत्त्व बा।

पवन सिंह के फिल्म जंग, कॉलेज स्टूडेंट लाइफ पर आधारित रहे। यूपी आ बिहार के राजनीतिक पार्टी राज्य में स्टूडेंट लाइफ केतना बुरा तरह से प्रभावित करेली सन एही के केंद्र में रख के फिल्म के कहानी लिखाइल बा। मनोज हंसराज एह फिल्म के लेखक बाड़ें। मनोज सामाजिक मुद्दा पर खूब कहानी लिखेलें।

निर्माता आलोक कुमार अउरी निर्देशक प्रेमांशु सिंह के फिल्म साजन चले ससुराल से खेसारीलाल के भोजपुरी सिनेमा में एंट्री भइल। फिल्म में उनके ऑपोजिट स्मृति सिन्हा रहली। खेसारी फिल्म में आवे से पहिले एल्बम के दुनिया में काफी हिट हो गइल रहलें। जेकर फायदा उनका फिल्म के मिलल अउरी ई फिल्म सिनेमाघरन में खूब चलल। खेसारी के करियर उनका पहिले फिलिम से सेट हो गइल। एह फिल्म में अनूप अरोरा लड़की के बाप रहलें जे अपना बेटी के प्यार के दुश्मन बा, अंत में जाके ओके अकल ठिकाने आवता। साजन चले ससुराल व्यवसायिक दृष्टि से सफल सिनेमा साबित भइल।

लगभग 40 साल बाद एक बेर फेर बिदेसिया नाम से फिल्म बनल। बाकिर इ 'बिदेसिया' मुँहखड़िये गिर गइल। जबकि ई बिदेसिया भिखारी ठाकुर के प्रसिद्ध नाटक बिदेसिया के फिल्म रूपांतरण रहे।

हालाँकि इहो बात साँच बा कि भोजपुरी सिनेमा के आधुनिक दौर 2011 ले आवत आवत 10 साल के हो गइल रहे लेकिन कंटेंट अउरी कहानी में धीरे-धीरे एकरस होत गइल रहे। उहे हीरो हीरोइन के प्यार अउरी ओकरा खिलाफ समाज, उहे ठाकुर अउरी एमएलए

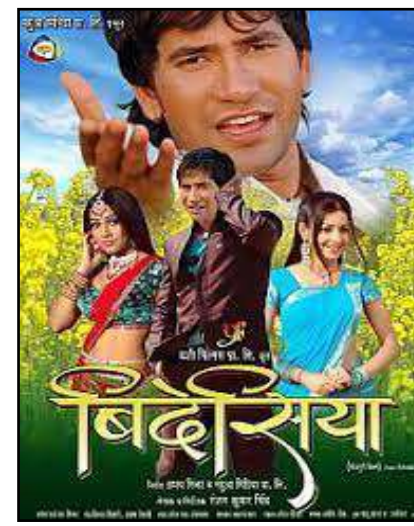

के अत्याचार अउर फिर हीरो के प्रतिकार,

अमिताभ बच्चन, जया बच्चन, निरहुआ और पाखी हेगड़े जइसन सितारा से सजल गंगा देवी पूरा भारत में एक साथ प्रदर्शित भइल, लेकिन कवनो जादू ना कर पवलस। एह फिल्म के चलते बहुत दिन बाद पति-पत्नी यानि अमिताभ बच्चन अउरी जया बच्चन एक साथे पर्दा पर आइल रहे लोग।

ए तरे के कहानी खूब बने लागल रहे, बस अंतर होखे त कलाकार में अउरी फिल्म के नाम में। इहे दौर रहे जब भोजपुरी में भी गुटबाजी के दौर शुरू हो गइल। फलाना स्टार के साथे ओकरा इर्द-गिर्द के कलाकार, विलेन सब एक जइसन होखे लगले माने कि अगर रउआ फिल्मन के पोस्टर देखीं त लागे कि पिछलके फिलिमिया ह खाली नाम चेंज भइल बा। ई चलन भोजपुरी सिनेमा खातिर दुर्भाग्य रहे जवन आगे चलके लोग के बुझाइल।

एह साल के कुछ चर्चित फिल्मन में मोर बालमा छैल छबीला, बतासा चाचा, धर्मात्मा, आव ना ओढ़ा दीं ओढ़निया, ए राजा जी, दरार, देवर भाभी, लोफर, मार देब गोली केहू ना बोली, कुरुक्षेत्र, प्रेम पुजारन, शराबी, भगजोगनी, पायल, नजरिया तोहसे लागी, चंदू की चमेली, नथुनिया पे गोली मारे, हम हई धरम योद्धा आदि उल्लेखनीय बाटे।

वर्ष 2012 में प्रदर्शित भइल लगभग 4 दर्जन फिल्म में से मात्र 8-10 गो फिल्म ही दर्शक के लुभावे में कामयाब भइल। ए साल पहिला प्रदर्शित फिल्म रहल रवि किशन के केहू हमसे जीत ना पायी अउरी लोकगायक गुड्डू रंगीला के ससुरो कब्बो दामाद रहल। एह फिल्म के दर्शक एकदम नकार देहलें। फिर निरहुआ अउर पवन सिंह स्टारर 'खून पसीना' रिलीज भइल। ई फिल्म बिहार, मुंबई में बेहतरीन अउरी यूपी में औसत व्यवसाय कइलस। एकरे साथे प्रदर्शित भइल 'अचल रहे सुहाग' बुरा तरह से फ्लॉप भइल।

भोजपुरी सिनेमा के पी आर ओ आ वितरक लोग से एह साल के फिल्म व्यवसाय पर विस्तार से बात कइनी। उ लोग बतावल कि प्रवेशलाल यादव के फिल्म 'राजा के रानी से प्यार हो गइल' भी ना चलल। होली पर प्रदर्शित भइल रानी चटर्जी स्टारर 'दुर्गा' पूरा बिहार अउरी मुंबई में अच्छा व्यवसाय कइलस। एही दिन रिलीज भइल रवि किशन अउरी रानी चटर्जी के फिल्म 'कइसन पियवा के चरितर बा' अउरी रवि किशन आ अक्षरा सिंह के प्राण जाये पर वचन ना जाये भी औसत व्यवसाय करे में सफल भइल। मनोज तिवारी पाखी हेगड़े स्टारर 'भइया हमार दयावान' बुरा तरह से फ्लॉप भइल।

भोजपुरी सिनेमा के अग्रणी अभिनेता कुणाल सिंह के पिछला तीस साल से भोजपुरी सिनेमा में आपन अमूल्य योगदान देबे खातिर भारत के माननीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी उनका के 'दिनकर साहित्य सम्मान 2012' से विभूषित कइलें। भोजपुरी फिल्मन के प्रमोशन खातिर अमिताभ बच्चन के सहयोग अउरी समर्थन काबिले तारीफ रहल। अमिताभ बच्चन कहलें कि क्षेत्रीय फिल्मन के सहयोग अउरी बढ़ावा के जरूरत बा अउरी इहे कारण बा कि ऊ अइसन फिल्म में काम करे के बदले कबो पइसा ना लेलें।

लगभग 40 साल बाद एक बेर फेर बिदेसिया नाम से फिल्म बनल। बाकिर इ 'बिदेसिया' मुँहखड़िये गिर गइल। जबकि ई बिदेसिया भिखारी ठाकुर के प्रसिद्ध नाटक बिदेसिया के फिल्म रूपांतरण रहे।

'जान तेरे नाम' बिहार में शानदार व्यवसाय कइलस। खेसारी लाल के ई फिल्म बिहार के कई गो सिनेमाघर में पचास दिन पूरा कइलस अउर सिर्फ बिहार से ही 1 करोड़ से अधिक के कमाई कइलस। ए फिल्म के यू पी में शानदार प्रदर्शन रहे लेकिन मुंबई में ई कुछ खास कमाल ना देखा पवलस। आलोक कुमार के खेसारीलाल, स्मृति सिन्हा और अंजना सिंह स्टारर 'देवरा पे मनवा डोले' बढ़िया ओपनिग कर के अच्छा व्यवसाय कइलस अउरी हिट के पायदान पर पहुँच गइल। खेसारीलाल- अंजना सिन्हा स्टारर 'दिल ले गइल ओढ़निया वाली' बिहार-यूपी में औसत व्यवसाय कइलस लेकिन मुंबई में ई फिल्म अउरी हिट साबित भइल। त ई साल खेसारी लाल के उठान के साल रहे।

2012 में ही निरहुआ के फिल्म आइल 'एक बिहारी सौ पर भारी' अपना अनूठा टाइटल से ई फिल्म काफी चर्चित रहल आ महाराष्ट्र में कुछ दिन बैन भी रहल। बाद में मामला सुलझल अउरी ई फिल्म दर्शकन के बीच आइल। दिनेश लाल यादव निरहुआ के संवाद बहुत हिट भइल। फिल्म के कहानी बिहारी के गौरव आ शान के इर्द-गिर्द बा।

निर्देशक राजकुमार पांडेय के भाई मनोज पाण्डेय के 'राजाजी', विक्रांत सिंह के 'मेहरारू बिना रतिया कइसे कटी', विराज भट्ट और रानी चटर्जी के 'काहे कइले हमसे घात', विनय आनंद के 'ऐलान-ए-जंग' अउरी 'पागल प्रेमी', पवन सिंह के 'बजरंग' अउरी रवि किशन के 'रणबीर', पंकज केसरी के 'प्यार मोहब्बत जिंदाबाद', विराज भट्ट अभिनीत 'जानवर', विराज भट्ट के 'दिल त पागल होला' 'खुद्दार', 'नंदू निकम्मा' अच्छा व्यवसाय ना कर पवलस।

कोर्ट के रोक के चलते देर से रिलीज भइल भोजपुरी फिल्म 'सौगंध गंगा मइया के' औसत व्यवसाय ही कर पवलस।

अरविन्द अकेला कल्लू के बड़ भइला के बाद लीड में आइल फिल्म 'कलुआ भइल सयान' सिनेमाघर में जवानी के दिन देखे से पहिलहीं उतर गइल। फ्लॉप हो गइल।

पवन सिंह स्टारर 'डकैत' आ निरहुआ स्टारर 'एक बिहारी सौ पे भारी' बॉक्स ऑफिस पर शानदार ओपनिंग कइलस।

रवि किशन आ रानी चटर्जी के ज्वालामंडी आ पवन सिंह के फिल्म लावारिस औसत व्यवसाय कइलस। ज्वालामंडी में अवधेश मिश्रा के हिजड़ा वाला रोल बहुत जबर रहे अउरी उ 'संघर्ष' के आशुतोष राणा के रोल ईयाद दिया देहलस।

अमिताभ बच्चन, जया बच्चन, निरहुआ और पाखी हेगड़े जइसन सितारा से सजल गंगा देवी जवन पूरा भारत में एक साथ प्रदर्शित भइल, लेकिन कवनो जादू ना कर पवलस। एह फिल्म के चलते बहुत दिन बाद पति-पत्नी यानि अमिताभ बच्चन अउरी जया बच्चन एक साथे पर्दा पर आइल रहे लोग। फिल्म के कहानी प्रतिष्ठित कॉलेज से राजनीति विज्ञान में पढ़ाई कर के लौटल एगो युवती के रहे जवन गाँव में आके राजनीति के दशा-दिशा सुधारे के जिम्मा उठावतिया। ए

आधुनिक भोजपुरी सिनेमा जवन पिछला दस साल में आपन चरम पर रहे, दूसरा दशक के शुरू होते भरभराये लागल। एकरा पीछे कई गो फैक्टर बा। जइसे एक जइसन कंटेंट आवे लागल, कहानी में नयापन कम होखे लागल। लेखक भी दोसरा इंडस्ट्री के फिलिम के सस्ता कॉपी लिखल शुरू कर देहलें, एहमें लेखक के भी तर्क सही बा कि भइया 80 लाख के फिलिम मे 40 लाख हीरो लेता अउरी बाकी हीरोइन आ कुछेक कलाकर। जवन बचता ओ में फिल्म के प्रोडक्शन, एडिटिंग आ अउरी खर्चा, लेखक के मिलता मेहनताना के नाम पर चवन्नी। अब चवन्नी में लेखक चवन्नीये छाप लिखाई करी नू। कबले पेट जार जार के नया कहानी पैदा करी। कहावत बा, भूखे भजन ना होय गोपाला, हई ल आपन कंठी-माला। इहे हाल निर्देशक लोग के भी रहे, पइसा मिले ना आ मिले त हेतनी मनी। त निर्देशक स्टोरीटेलिंग में कहाँ से जान डाले, जब ओके खुदे जान फँसल रहे।

दूसर वजह ई भी रहे कि शुरू में पारिवारिक फिल्म बनला के वजह से अउरी भोजपुरी के नया नया दौर अइला के वजह से लोग सिनेमा हॉल में आइल। जब देखलस कि चलत फिलिम में अइसन अइसन दृश्य आ गाना आवता कि लइका बच्चा के सामने उठ उठ के लघु शंका करे के बहाना बनावे के पड़ता, त दर्शकन के ई वर्ग भोजपुरी फिल्मन से कटे लागल।

ई भोजपुरी के उ दौर चलत रहे जब हिंदी सिनेमा लेखाँ एको शुक्रवार बाँव ना जाय, हर हफ्ता फिलिम रिलीज होखे लेकिन दर्शकन के सिनेमाघर में टोटा रहे। ए दौर में औसतन 65-70 गो फिलिम हर साल प्रदर्शित होखे लेकिन कुछेक के छोड़ के सब आओ सनम जाओ सनम के तर्ज पर हफ्ता-दू हफ्ता में उतर जाव।

फिल्म में युवती के टाइटल रोल किरदार पाखी निभवले रहली। बैडमैन गुलशन ग्रोवर के भी एमें भूमिका रहे। अमिताभ बच्चन के साथ गंगा अउरी गंगोत्री बना चुकल अभिषेक चड्ढा ही एकर निर्देशक अउरी लेखक रहलें। एह फिल्म के **निर्माता** महानायक के मेकअप मैन दीपक सावंत रहलें।

एह साल अधिकतर फिल्म कमाई त दूर के बात, आपन लागत भी ना निकाल पवलस। जइसे पवन सिंह स्टारर 'डोली चढ़ के दुलहन ससुराल चली', विराज भट्ट के मर्द तांगावाला, सुदीप पाण्डेय के गजब सिटी मारे सइंयां पिछवारे, रानी चटर्जी स्टारर चिंगारी बुझ गयी, विनय आनंद के आज के दबंग दामाद, निरहुआ-पवन स्टार एक दूजे के लिए अउरी विराज भट्ट के हिम्मतवाला सिनेमाघर में पानी भी ना मांग पवलस। दुर्गा पूजा पर प्रदर्शित भइल निरहुआ-पाखी के फिल्म रिक्शावाला आई लव यू बिहार में पीट गइल लेकिन यू पी में शानदार व्यवसाय कइलस। अँधा कानून सिर्फ मुंबई में रिलीज भइल और फ्लॉप गइल। 'सेज तैयार सजनिया फरार' से दर्शक फरार रहलें। छठ पर आइल नागिन, लहू के दो रंग अउर आंधी तूफान में राजकुमार पाण्डेय के नागिन और लहू के दो रंग ही कमा पइलस जबकि आँधी तूफान कुछ खास कमाल ना देखवलस।

भोजपुरी सिनेमा के अग्रणी अभिनेता कुणाल सिंह के पिछला तीस साल से भोजपुरी सिनेमा में आपन अमूल्य योगदान देबे खातिर भारत के माननीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी उनका के 'दिनकर साहित्य सम्मान 2012' से विभूषित कइलें। भोजपुरी फिल्मन के प्रमोशन खातिर अमिताभ बच्चन के सहयोग अउरी समर्थन काबिले तारीफ रहल। अमिताभ बच्चन कहलें कि क्षेत्रीय फिल्मन के सहयोग अउरी बढ़ावा के जरूरत बा अउरी इहे कारण बा कि

ऊ अइसन फिल्म में काम करे के बदले कबो पइसा ना लेलें।

सेलिब्रिटी अउरी फिल्म स्टार्स के क्रिकेट लीग शुरू हो गइल रहे जवन आईपीएल क्रिकेट के तर्ज पर रहे। अंजन टीवी CCL के मीडिया पार्टनर रहल। हम (मनोज भावुक) भोजपुरी दबंग टीम खातिर CCL song लिखले आ तइयार कइले रहीं। धनंजय मिश्रा के संगीत रहे। पहिला सीजन चार गो टीम खेललस आ 2013 में दू गो टीम अउर बढ़ गइल जवना में रहे भोजपुरी दबंग अउरी वीर मराठी। भोजपुरी दबंग के कप्तान भोजपुरी लोकगायक, स्टार मनोज तिवारी रहलें आ उप-कप्तान सुपरस्टार दिनेशलाल यादव निरहुआ रहलें। एह तरे भोजपुरिया कलाकार के धमक राष्ट्रीय स्तर पर दोसरा भाषा के कलाकार के पास भी पहुँचल। मनोज तिवारी के प्रदर्शन मैच के दौरान अच्छा रहल।

एह साल के हिट फ्लॉप फिल्म के ई त एगो मोटा मोटी रिपोर्ट बा लेकिन एहसे ई पता चलता कि आधुनिक भोजपुरी सिनेमा जवन पिछला दस साल में आपन चरम पर रहे, दूसरा दशक के शुरू होते

इंडस्ट्री के कुछ ट्रेड-जानकार लोग के ई धारणा बा कि जेंगा हिंदी सिनेमा में 2005-07 के बाद कुछ साल तक बाजार ठंडा रहे, काहें कि सिंगल स्क्रीन टूटत रहे,मल्टीप्लेक्स आवत रहे, परिवर्तन के दौर रहे, हर जगह कॉर्पोरेट कल्चर विकसित होत रहे, दर्शकन के च्वाइस मसाला फिल्म के जगह कंटेंट के ओर अउरी रीयलिस्टिक सिनेमा के तरफ बदलत रहे। ओहींगा भोजपुरी में भी 2012-13 के बाद ई दौर आइल, अउर फिर हालत अइसन हो गइल कि भोजपुरी फिल्म के क्वालिटी मल्टीप्लेक्स में लागे लायक नइखे अउरी सिंगल स्क्रीन थिएटर अब ढेर बचले नइखे। अब फिल्म कुल बनता त उ चली कहाँ। भला हो 2016 के बाद भारत में नेट न्यूट्रालिटी के अउरी सस्ता इंटरनेट डाटा के कि डिजिटल क्रांति आइल आ लोग के वेब अउरी यूट्यूब एगो नया प्लेटफॉर्म मिलल आपन कंटेंट देखावे खातिर।

भरभराये लागल। एकरा पीछे कई गो फैक्टर बा। जइसे एक जइसन कंटेंट आवे लागल, कहानी में नयापन कम होखे लागल। लेखक भी दोसरा इंडस्ट्री के फिलिम के सस्ता कॉपी लिखल शुरू कर देहलें, एहमें लेखक के भी तर्क सही बा कि भइया 80 लाख के फिलिम मे 40 लाख हीरो लेता अउरी बाकी हीरोइन आ कुछेक कलाकर। जवन बचता ओ में फिल्म के प्रोडक्शन, एडिटिंग आ अउरी खर्चा, लेखक के मिलता मेहनताना के नाम पर चवन्नी। अब चवन्नी में लेखक चवन्नीये छाप लिखाई करी नू। कबले पेट जार जार के नया कहानी पैदा करी। कहावत बा, भूखे भजन ना होय गोपाला, हई ल आपन कंठी-माला। इहे हाल निर्देशक लोग के भी रहे, पइसा मिले ना आ मिले त हेतनी मनी। त निर्देशक स्टोरीटेलिंग में कहाँ से जान डाले, जब ओके खुदे जान फँसल रहे।

दूसर वजह ई भी रहे कि शुरू में पारिवारिक फिल्म बनला के वजह से अउरी भोजपुरी के नया नया दौर अइला के वजह से लोग सिनेमा हॉल में आइल। जब देखलस कि चलत फिलिम में अइसन अइसन दृश्य आ गाना आवता कि लइका बच्चा के सामने उठ उठ के लघु शंका करे के बहाना बनावे के पड़ता, त दर्शकन के ई वर्ग भोजपुरी फिल्मन से कटे लागल।

एगो अउरी फैक्ट देखीं कि कुछ **निर्माता** निर्देशक लोग के भोजपुरी में बढ़िया नामे ना मिले। ई सवाल बरबस उठता कि अनिल अजिताभ आ अभय सिन्हा जइसन दिग्गज लोग भी अपना फिल्मन के नाम काहे रखल 'एक दूजे के लिए'। राजकुमार पाण्डेय एगो फिलिम बनवलें नाम रहे 'मैं नागिन तू नगीना'। हालाँकि ई त उदहारण बा, हिंदी नामन के लिस्ट लमहर बा। आगे के साल में हिंदी नाम रखे के सिलसिला अउर तेज भइल। ई भोजपुरी के उ दौर चलत रहे जब हिंदी सिनेमा लेखाँ एको शुक्रवार बाँव ना जाय, हर हफ्ता फिलिम रिलीज होखे लेकिन दर्शकन के सिनेमाघर में टोटा रहे। ए दौर में औसतन 65-70 गो फिलिम हर साल प्रदर्शित होखे लेकिन कुछेक के छोड़ के सब आओ सनम जाओ सनम के तर्ज पर हफ्ता-दू हफ्ता में उतर जाव।

एह साल हमहूँ (मनोज भावुक) 'सौगंध गंगा मइया के' अउरी 'रखवाला' दू गो फिल्म में काम कइनी अउरी भोजपुरी फिल्म निर्माण के बहुत करीब से देखनी।

साल 2013 में राजकुमार आर पाण्डेय अपना बेटा चिंटू पाण्डेय के लीड हीरो लॉन्च कइलें। चिंटू एकरा से पहिले निरहुआ के एगो फिल्म में आ देवरा बड़ा सतावेला में रविकिशन और पवन सिंह के साथे दिखल रहलें। उनके एह फिल्म के एगो गाना जीन्स छोड़ पेन्ह सलवार काफी हिट भइल रहे, वजह शायद ई रहे कि बीच सड़क पर लइकिनी के छेड़खानी से बचला खातिर एगो जवान लइका लइकी के छेड़ छेड़ के समझावता आ टिप्स देता कि हइसे मत करा ना त हमरा जइसन जवान लोग के दिल तोहरा के हेंगा छेड़े पर लाचार हो जाई। वाह रे कल्पना, भोजपुरिया फिल्मी गीतकार लोग के कल्पना बड़ा अद्भुत बा! बाकी फिलिम जीना तेरी गली में बनल अउरी अच्छा बिजनेस कइलस। उनके अपोजिट हीरोइन इंट्रोड्यूस भइली प्रियंका पंडित जे बाद में आपन नाम बदल के गार्गी पंडित रख लेहली। कहानी

2014 में मॉरीशस में अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव के आयोजन भइल जवना में सिनेमा के भी जगह दिहल गइल। हम लोकगायिका पद्मश्री मालिनी अवस्थी आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन के महासचिव अरुणेश नीरज जी के सानिध्य में भोजपुरी सिनेमा के सफरनामा पर पेपर पढ़नी आ साथ हीं भोजपुरी सिनेमा के 1948 से लेके 2014 तक के सफर पर हमार बनावल एगो डॉक्यूमेंट्री के भी प्रदर्शन भइल।

टीनएज लवस्टोरी रहे जे में समाज अउरी माई-बाप के अड़ंगा के इर्द-गिर्द प्लॉट बुनल रहे। ताजमहल तर जा के शूटिंग भी भइल रहे एगो गाना के, जे के चर्चा इंडस्ट्री में खूब चलल।

एही साल भोजपुरी सिनेमा खातिर मनोज तिवारी के राष्ट्रपति से सम्मान मिलल गौरव के बात रहे।

सेलिब्रिटी अउरी फिल्म स्टार्स के क्रिकेट लीग शुरू हो गइल रहे जवन आईपीएल क्रिकेट के तर्ज पर रहे। अंजन टीवी CCL के मीडिया पार्टनर रहल। हम (मनोज भावुक) भोजपुरी दबंग टीम खातिर CCL song लिखले आ तइयार कइले रहीं। धनंजय मिश्रा के संगीत रहे। पहिला सीजन चार गो टीम खेललस आ 2013 में दू गो टीम अउर बढ़ गइल जवना में रहे भोजपुरी दबंग अउरी वीर मराठी। भोजपुरी दबंग के कप्तान भोजपुरी लोकगायक, स्टार मनोज तिवारी रहलें आ उप-कप्तान सुपरस्टार दिनेशलाल यादव निरहुआ रहलें। एह तरे भोजपुरिया कलाकार के धमक राष्ट्रीय स्तर पर दोसरा भाषा के कलाकार के पास भी पहुँचल। मनोज तिवारी के प्रदर्शन मैच के दौरान अच्छा रहल।

काजल राघवानी एही साल भोजपुरी फिल्म में डेब्यू कइली जिनके जोड़ी पहिले पवन सिंह के साथ, फेर बाद में खेसारीलाल यादव के साथ खूब हिट भइल। काजल गुजराती फिल्मन में किशोरावस्था से ही लीड रोल कइल चालू कर देले रहली। उनका भोजपुरी के फिल्म मिलल 'सबसे बड़ा मुजरिम' जवना फिल्म के राइटर डायरेक्टर धीरज कुमार रहलें अउरी ऊ 90 के दशक के आशिकी फेम राहुल रॉय के साथ भोजपुरी में 'ऐलान' फिल्म बना चुकल रहलें जेकर हीरो मनोज तिवारी रहलें। ई फिल्म बहुत खास कमाल त ना देखवलस बाकी काजल दोसर **निर्माता** निर्देशक के नजर में आ गइली।

साल के सबसे बड़ फिलिम रहे गंगा जमुना सरस्वती। इंडस्ट्री के तीनों स्टार साथे अइलें अउरी ई फिल्म बनल,मार्च में रिलीज भइल। हालाँकि कहे वाला इहो कहेला कि ये फिल्म के शूटिंग फिल्म से ज्यादा मजेदार रहे जब तीन गो ओ बेरा के हिट स्टार सेट पर होखो लोग त ओहिजा के नजारा देखते बने। फिल्म आलोक कुमार के निर्माण में बनल अउरी डायरेक्शन हैरी फर्नान्डिस के रहे।

एह साल प्रदर्शित कुछ उल्लेखनीय फिल्मन में टाइगर, वर्दी वाला गुंडा, गोबर सिंह, प्रेम दिवानी, दिलदार सवारिया, सपूत, दम होई जेकरा में उहे गाड़ी खूंटा, धुरंधर दि शूटर, तू ही तो मेरी जान है राधा, प्रतिघात, मजनू मोटर वाला, लड़ब मरते दम तक, प्यार झुकता नहीं, रानी नं.786, ए बलमा बिहार वाला, पंचायत, संसार, इज्जत, कोठा, कसम वर्दी के, चुन्नू बाबू सिंगापुरी के चर्चा कइल जा सकेला।

इंडस्ट्री के कुछ ट्रेड-जानकार लोग के ई धारणा बा कि जेंगा हिंदी सिनेमा में 2005-07 के बाद कुछ साल तक बाजार ठंडा रहे, काहें कि सिंगल स्क्रीन टूटत रहे,मल्टीप्लेक्स आवत रहे, परिवर्तन के दौर रहे, हर जगह कॉर्पोरेट कल्चर विकसित होत रहे, दर्शकन के च्वाइस मसाला फिल्म के जगह कंटेंट के ओर अउरी रीयलिस्टिक सिनेमा के तरफ बदलत रहे। ओहींगा भोजपुरी में भी 2012-13 के बाद ई दौर आइल, अउर फिर हालत अइसन हो गइल कि भोजपुरी फिल्म के क्वालिटी मल्टीप्लेक्स में लागे लायक नइखे अउरी सिंगल स्क्रीन थिएटर अब ढेर बचले नइखे। अब फिल्म कुल बनता त उ चली कहाँ। भला हो 2016 के बाद भारत में नेट न्यूट्रालिटी के अउरी सस्ता इंटरनेट डाटा के कि डिजिटल क्रांति आइल आ लोग के वेब अउरी यूट्यूब एगो नया प्लेटफॉर्म मिलल आपन कंटेंट देखावे खातिर।

भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्रीज के साल 2014 याद कइल जाई मगर फिल्मन के सफलता खातिर कम आ भोजपुरी सिनेमा के कलाकार लोग के राजनीति में प्रवेश कइला खातिर ज्यादा। साल

2014 में भइल लोकसभा चुनाव में भोजपुरी सिनेमा जगत के चार गो बड़ कलाकार भोजपुरी स्टार मनोज तिवारी, रविकिशन,नगमा अउरी कुणाल सिंह के टिकट मिलल। एमें मनोज तिवारी के भाजपा से अउरी बाकी जाना कांग्रेस के टिकट पर लड़ल लोग। हालाँकि खाली मनोज तिवारी जीत पइलें अउरी सभ के हार के सामना करे के पड़ल। मनोज तिवारी एही साल प्रधानमंत्री मोदी द्वारा शुरू कइल गइल स्वच्छता अभियान के हिस्सा भी बनलें अउरी भाजपा के स्टार प्रचारक बन के देश के कई राज्य में भइल विधानसभा चुनाव में पार्टी के जमके प्रचार भी कइलें।

भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्रीज खातिर 2014 सफलता के साल रहे। एह साल लगभग 60 गो फिल्म प्रदर्शित भइल। साल के पहिला प्रदर्शित फिल्म विराज भट्ट और रिंकू घोष अभिनीत ई कइसन प्रथा रहे। निहाल सिंह के निर्देशन में बनल ई फिल्म के मकर संक्रांति के वजह से बिहार, उत्तर प्रदेश अउरी मुंबई में अच्छा ओपनिंग मिलल आ दर्शकन के ई फिल्म पसंद त आइल मगर फिल्म के **निर्माता** के कौनो खास फायदा ना मिलल। फिल्म के कहानी एगो अइसन गाँव के प्रथा पर आधारित बा जहाँ के ठाकुर गाँव के हर नई नवेली दुल्हन के साथ पहिले सुहागरात मनावता। एकरा पीछे के भ्रांति ठाकुर के पूर्वज फइलावत आ रहल बाड़ें कि अगर अइसन ना होई त गाँव में सूखा पड़ जाई। अकाल अउरी बेमारी से लोग मरे लागी। एही बीच ठाकुर के लइकिनी के एगो साधारण लइका से प्यार हो जाता अउर नया द्वंद्व शुरू होता। ईहे फिल्म के कहानी बा। ई फिल्म लम्बाई में बहुत अधिक लगभग 4 घंटा के आसपास के रहे।

विराज भट्ट के एगो अउर बड़ फिल्म कसम वर्दी के दर्शकन के काफी पसंद आइल अउरी एकर निर्देशक दिनेश यादव के एगो नया पहचान मिलल। कांतिलाल पी मारू के प्रोडक्शन के ई फिल्म के मुंबई में भी अच्छा कलेक्शन भइल।

भोजपुरी सुपर स्टार दिनेश लाल यादव के निरहुआ हिन्दुस्तानी त कामयाबी के झण्डा गाड़ देहलस। आदिशक्ति इंटरटेनमेंट के बैनर के ई फिल्म दर्शक के सिनेमाहॉल तक खींच लिअइलस। एही फिल्म से आम्रपाली दुबे भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री में एंट्री कइली। उनके किरदार सोना एगो शहर के अकड़ू अउरी चालू लइकी रहतिया जवन निरहुआ से बियाह अपना बाप के प्रॉपर्टी पावे खातिर करतिया लेकिन ओकरा निरहुआ के गाँव अइला के बाद प्यार हो जाता अउर उ निरहुआ के साथ रहे लागतिया। बाद में जब असलियत पता चलता त बहुत बवाल होता। कॉमेडी के साथ परिवार के इर्द गिर्द बुनल ई फिल्म दर्शक के खूब पसंद आइल। एही फिल्म के सफलता रहे कि आम्रपाली दुबे अउरी निरहुआ के जोड़ी एतना हिट भइल कि आगे आवे वाला साल में अमूमन हर फिल्म में साथ लउके लागल लोग।

दिनेश लाल यादव के फिल्म अदालत भी एही साल रिलीज भइल। पिछला साल के तरह ए साल भी खेसारी लाल यादव के बादशाहत बरकरार रहल अउरी उनके फिलिम हथकड़ी, बेताब, लाडला, जो जीता वही सिंकदर बढ़िया प्रदर्शन कइलस। उनके कच्चे धागे फिल्म के भी बड़ा शोर भइल।

रिंकू घोष भी ए साल कामयाबी के राह पर बरकरार रहली अउरी राजकुमार पांडेय के फिल्म नगीना और असलम शेख निर्देशित औरत खिलौना नहीं आ खूनभरी मांग में

अपना शानदार प्रदर्शन से सबके विभोर कइली। रिंकू घोष के स्क्रिप्ट अउरी फिल्म सेलेक्शन से पता चलता कि उ भोजपुरी में सेंसिबल सिनेमा करे आइल बाड़ी। मिसाल के तौर पर अपना शुरूआती करियर में ही ऊ बिदाई फिल्म में रविकिशन के पत्नी के रोल में रहली अउरी फिल्म बलिदान में रविकिशन के माई के भूमिका में। एह तरह के चैलेंज लिहल एगो कलाकार खातिर बहुत रिस्की होला उहो तब जब ऊ अपना करियर के प्रारम्भ में होखे।

एही साल स्टार अभिनेता मनोज तिवारी के तीन गो फिल्म 'देवरा भइल दिवाना', 'औरत खिलौना नहीं' अउरी 'गोबर सिंह' रिलीज भइल।

'औरत खिलौना नहीं' अपना कहानी खातिर बहुत चर्चित भइल। ए फिल्म में औरत के ऊपर होत अत्याचार के आधार रख के स्क्रिप्ट

लिखाइल रहे। निर्देशक असलम शेख शुरू से सामाजिक अउरी राजनीतिक मुद्दा पर ही फिल्म लिखत बनवात आइल बाड़ें, ई फिल्म भी उनकरा शिल्प के सुंदर नमूना रहे। फिल्म के कहानी तीन गो लड़की के रहे जे अपना जिनगी में आगे चलके समाज के अनेक अत्याचार सहत बाड़ीं अउरी अंत में सबसे बदला लेतारी। रिंकू घोष, मोनालिसा अउरी मोहिनी घोष तीन गो हीरोइन मुख्य भूमिका में रहली।

'देवरा भइल दिवाना' मनोज तिवारी पाखी हेगड़े के ही फिल्म रहे जे में प्रदीप पाण्डेय चिंटू भी रहलें। एह में अपना भाभी के दुलरुआ देवर कइसे भ्रम के वजह से भइया भाभी के शादी के बंधन के रोड़ा बन जाता

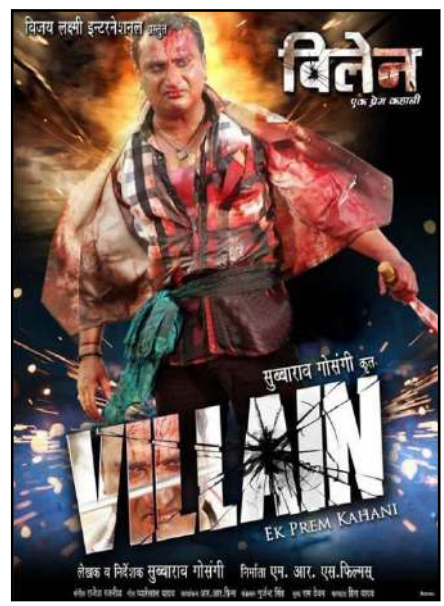

अउरी कइसे उहे देवर उ दुनो के मिलवावता ईहे कहानी रहे। फिल्म के निर्देशक अउरी **निर्माता** राजकुमार आर पाण्डेय रहलें।

रमाकांत प्रसाद के निर्देशन में बनल फिल्म प्यार किया तो डरना क्या में राकेश मिश्रा अउरी पूनम दुबे के एक साथ पर्दा पर उतारल गइल। राकेश मिश्रा देवी गीत गाके प्रसिद्ध भइल रहलें अउर उनका जल्दिये फिल्म में चांस मिल गइल।

साउथ के जी सुब्बाराव के फिल्म विलेन भी लीक से हटके बनल फिल्म रहे अउरी बिहार में काफी पसन्द भी कइल गइल। एह फिल्म में इंडस्ट्री के हिट खलनायक अवधेश मिश्रा लीड रोल में रहलें।

अभिनेता विनय आनंद के फिल्म मंगलफेरा कम बजट में बनल रहे जेकरा चलते उ आपन

लागत वसूल लिहलस हालाँकि विनय आनंद के अभिनय के काफी चर्चा भइल।

खलनायकी में ई साल स्टार खलनायक संजय पांडे के नाम रहे। संजय पांडे पिछला साल के तरह एहू साल आपन जादू कायम रखलें। नीरज यादव के खलनायकी के क्षेत्र में बड़ा भूमिका मिलल अउरी उ मल्टी स्टारर फिल्म हथकड़ी में आपन अलग पहचान बनवलें। चरित्र अभिनेत्री में जहाँ किरण यादव आपन जादू बरकरार रखली। कृष्णा कुमार, पुनम दुबे,शिखा मिश्रा, करण यादव इंडस्ट्री में डेब्यू के बाद चर्चा के विषय बनल लोग। रविकिशन अपना होम प्रोडक्शन से फिल्म पंडित जी बताई ना बियाह कब होई के दुसरा भाग बनावे के घोषणा कइलें।

पवन सिंह के हिट फिल्म के सीक्वल आइल प्रतिज्ञा-2 जेमें पवन सिंह के अलावा खेसारीलाल यादव भी रहलें। फिल्म के कहानी मे एगो खूँखार अपराधी मलखान सिंह परिवार के सब केहू के मार देता, ओकर

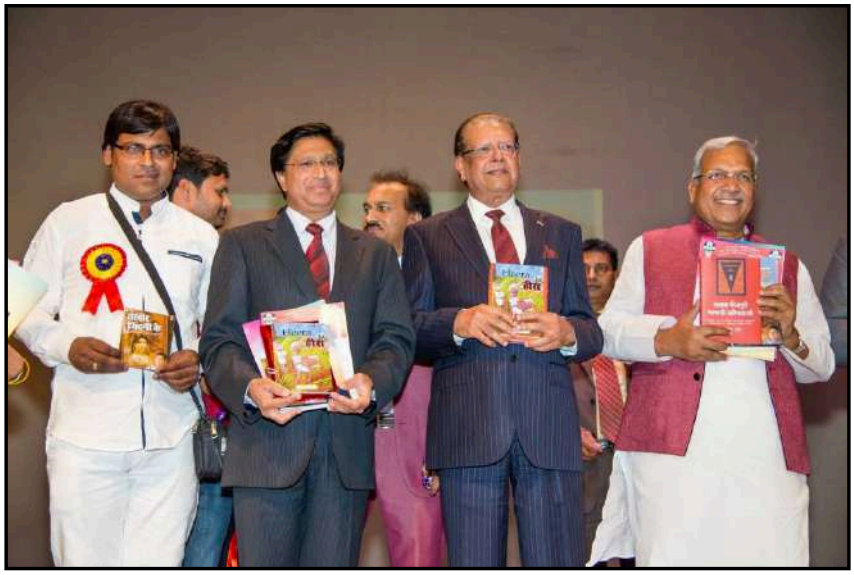

गवाही देहला के वजह से उ एगो अउर आदमी के मार देता। दुनु परिवार के बेटा जब बड़ हो तारें त मिलके मलखान से बदला ले तारें। जवना में एगो चोर बन जाता अउरी एगो पुलिस अधिकारी। सुशील उपाध्याय के निर्देशन मे बनल ई फिल्म अच्छा चलल।

2014 में मॉरीशस में अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव के आयोजन भइल जवना में सिनेमा के भी जगह दिहल गइल। हम लोकगायिका पद्मश्री मालिनी अवस्थी आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन के महासचिव अरुणेश नीरज जी के सानिध्य में भोजपुरी सिनेमा के सफरनामा पर पेपर पढ़नी आ साथ हीं भोजपुरी सिनेमा के 1948 से लेके 2014 तक के सफर पर हमार बनावल एगो डॉक्यूमेंट्री के भी प्रदर्शन भइल।

2015 में भोजपुरी फिल्मन के हिट करावे के एगो नया ट्रेंड चल पड़ल। ए ट्रेंड के नाम रहे भोजपुरी फिल्मन के पाकिस्तान कनेक्शन। माने कि जेंगा हिंदी में देशभक्ति फिल्म एगो टाइम में पाकिस्तान आ हिंदुस्तान के बीच के जंग, घुसपैठ, जासूसी अउरी अमन संदेश के केंद्र में रखके बने लागल, उहे कुछ भोजपुरी में भी शुरू भइल आ खूब चलल, चलते ही जाता।

एकर शुरूआत कइलें **निर्माता** अनंजय रघुराज अउरी लेखक निर्देशक संतोष मिश्रा। दुनो लोग निरहुआ के लीड में लेके एगो फिल्म बनावल लोग **पटना से पाकिस्तान**। निरहुआ के साथे एह फिल्म में आम्रपाली दुबे अउरी काजल राघवानी रहली। फिल्म के कहानी कबीर नाम के एगो युवक के रहे जवन आतंकवादी के मंदिर पर हमला नाकाम कर देता अउरी पाकिस्तान के अखबार में प्रमुखता से छपता। जब आतंकवादी गुट के सरगना ई देखता त उ कबीर के मारे के प्लानिंग करता। ओह प्लानिंग के तहत भइल बम विस्फोट में कबीर त बच जाता लेकिन ओकर प्रेमिका अउरी पूरा परिवार मर जाता। पहिले कबीर सरकार से मदद मांगता, जब नइखे मिलत त खुद बीड़ा उठा लेता अउरी पाकिस्तान में घुसके आतंकवाद से लड़ता। एही दरमयान ओकरा एगो पाकिस्तानी लड़की से प्यार भी हो जाता। इहे फिल्म के कहानी बा।

फिल्म बहुत सफल भइल अउरी भोजपुरिया निर्देशक **निर्माता** के एगो नया टॉपिक मिल गइल फेर त धड़ाधड़ पाकिस्तान बेस्ड फिल्म बने लागल। एक साल बाद 2016 में फिल्म आइल 'ले आइब दुल्हनिया पाकिस्तान से' अउरी ए फिल्म में विशाल सिंह आ तनुश्री के जोड़ी रहे। एही कड़ी में पवन सिंह के फिल्म आइल 'गदर' जवन काफी अच्छा बिजनस कइलस। गदर में पवन सिंह के साथे मोनालिसा अउरी नेहा सिंह रहली, निर्देशक रमाकांत प्रसाद रहलें। प्रदीप पांडेय चिंटू के भी फिल्म आइल 'दुल्हन चाही पाकिस्तान से'। ई फिल्म पाकिस्तान कनेक्शन के फामूर्ला पर बनल तब तक के सब फिल्मन के रिकॉर्ड तोड़ देहलस।

निर्देशक लेखक फिल्म के नाम अलग अलग रखल लोग लेकिन सब फिल्म में कॉमन रहे पाकिस्तान के हीरोइन जवन इंडिया में हीरो द्वारा लिआवल जाव भा ओकरा प्यार हो जाव त उ खुद आ जाव। हालाँकि ओ समय राष्ट्रवाद अउरी बीफ के लेके जवन माहौल समाज में बनल रहे, भोजपुरी प्रोड्यूसर्स इहे माहौल के कैश करे में लागल रहलें अउरी एकर लाभ भी ऊ लोग के मिलल। बॉलीवुड में इंडो-पाक फिल्म में सनी देओल के पाकिस्तान के खिलाफ दमदार डायलॉगन के असर भोजपुरी फिल्म पर

भी पड़ल। सबमें जोश अउरी जुनून से भरल संवाद अउरी शायरी लिखाये लागल। जइसे फिल्म 'पटना से पाकिस्तान' में निरहुआ के भी एगो हिट डायलॉग बा 'लाहौर से गुजरेगी गंगा, इस्लामाबाद की छाती पर लहराएगा तिरंगा'।

एही साल कल्लू के बतौर हीरो फिल्म आइल 'दिल भइल दीवाना' जे के डायरेक्टर अरविन्द चौबे रहलें। एमें उनका साथे विराज भट्ट रहलें अउरी हीरोइन मोनालिसा रहली।

खेसारीलाल के फिल्म हीरो नम्बर 1 साल 2015 के सफल फिल्म में से एक बा। फिल्म में खेसारीलाल, अक्षरा सिंह, कृष्ण कुमार अउरी प्रियंका पंडित मुख्य भूमिका में रहे लोग। फिल्म के कहानी एगो विधवा सेठानी के रहे जे फालतू के शान में अउर अपना मुंशी के बहकावा में आके अपना बेटी के रिश्ता ठुकरा दे तारी। फिर जवना लइकन के उ रिश्ता ठुकरावतारी उ दुनु योजना बना के उनके सबक सिखावतारे। सेठानी अपना छोटकी बेटी के खूब दुलारत बाड़ी अउरी बड़की से काम

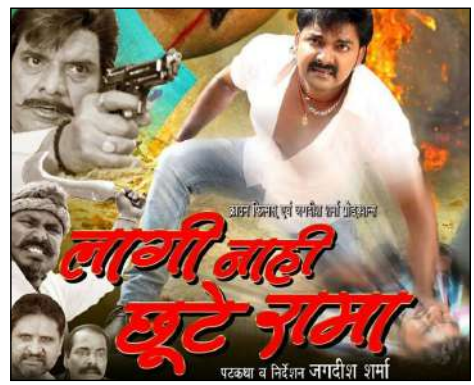

करवावत बाड़ी। एहिजा खेसारी नौकर बन के घर मे घुसतारे फिर कहानी में कॉमेडी अउर इमोशनल ड्रामा शुरू होता। फिल्म कहानी के स्तर पर भी बढ़िया रहे अउरी व्यवसाय के स्तर पर भी कामयाब रहल।

के मनोज झा के लिखल अउरी जगदीश शर्मा के निर्देशन में बनल फिल्म लागी नाही छूटे राम अच्छा विषय पर बनल अर्थपूर्ण फिल्म रहे लेकिन व्यवसाय बहुत बढ़िया ना कर पवलस। बकौल जगदीश शर्मा, फिल्म के परिणाम उनका खातिर निराशाजनक रहे।

फिल्म के कहानी में पवन सिंह के जबरदस्ती बियाह करा दिहल जाता अउरी उ पुलिस के चक्कर लगावत फिरतारे। फिल्म बिहार में कुप्रचलित पकड़ुआ बियाह पर आधारित रहे। एह साल के कुछ अच्छा अउरी उल्लेखनीय फिल्मन में पंडी जी बताई ना बियाह कब होई-2, जान तेरे लिए, तेरी मेरी आशिकी, प्रशासन, बाज गइल डंका, बगावत, बिन बजावा सपेरा, माई के कर्ज, रक्तभूमि प्रमुख बा।卐卐

भोजपुरी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा है यह

सम्यक समुचित वस्तुपरक समीक्षा। समीक्षक विष्णुदेव तिवारी और सम्पादक मनोज भावुक को साधुवाद। प्रेमशीला शुक्ल जी, आपको एक बार पुनः नये सिरे से आत्मीय बधाई।

भोजपुरी जंक्शन ने समीक्षा विशेषांक निकाल कर भोजपुरी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा की है। मनोज भावुक से ऐसी ही उम्मीद रहती है।

डा. दिवाकर प्रसाद तिवारी, पूर्व प्राचार्य,दी.ना.पा.रा.म.पी.जी. कालेज, देवरिया

भोजपुरी जंक्शन भोजपुरी पत्रकारिता के दुनिया में एगो क्रांतिकारी कदम बा

भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के समीक्षा विशेषांक, भाग–2 पढ़े के मिलल। मन बहुत प्रफुल्लित हो गइल। अमूमन एक दूगो भोजपुरी किताबन के समीक्षा पढ़े के मिलेला पर एक साथे 25 गो किताब के समीक्षा परोसल बहुत बड़ बात बा। साथ ही भोजपुरी सिनेमा के इतिहास पर धारावाहिक रूप में अद्भुत सामग्री आ एक से बढ़ के एक कविता। साचहूँ भोजपुरी जंक्शन भोजपुरी साहित्य आ पत्रकारिता के दुनिया में एगो क्रांतिकारी कदम बा। एक से बढ़ के एक साहित्यकार के पढ़ के बहुत खुशी के अनुभूति होता। संपादक मनोज भावुक जी के ई बहुत सराहनीय कदम बा। आपके बहुत बधाई।

संध्या सिंह, गांधीनगर, गुजरात

रउरा भोजपुरी भाषा-साहित्य के पत्रकारिता खातिर एगो नया मानक गढ़ि रहल बानी

भोजपुरी जंक्शन के समीक्षा विशेषांक के भाग-2 मिलल। एकर अवलोकन कइला के बाद बेहिचक हम कह सकीला कि रउरा भोजपुरी साहित्य के नया दिशा आ गति देबे खातिर एगो मुहिम छेड़ देले बानी। एहू अंक में भोजपुरी के हर विधा के चयनित पच्चीस गो पुस्तकन पऽ समीक्षा पढ़ि केहू अनुभव संपन्न बन सकेला। भोजपुरी के पहिल उपन्यास 'बिंदिया' से ले के 'भोजपुरी लोक साहित्य' पऽ चर्चा करावल एगो बड़हन पहल बा। भोजपुरी में अबही ले आलोचना के ले के केवनो स्वस्थ आ सुंदर माहौल नइखे बन पावल--छिटपुट कोशिश होत रहल बा। राउर जुनून आ नशा जेवन बा भोजपुरी के सेवा के ले के ओह के इयाद राखल जाई आज के दौर में जब सगरो अन्हार बढ़ल जा रहल बा, राउर काम अँजोर करे वाला बा। राउर जेवन जिजीविषा बा हम ओकरा के खासतौर से रेखांकित कर रहल बानी। आपन पहल आ कोशिश जारी राखब चाहे जेतना अडंगा डालल जाई। हम जोर देके कह रहल बानी कि रउरा भोजपुरी भाषा-साहित्य के पत्रकारिता खातिर एगो नया मानक गढ़ि रहल बानी। एह अंक में राउर गजल, अनिल ओझा जी के कवितन के पढ़ि के बहुत आनंद मिलल। बाकी आलेख जेवन भोजपुरी फिल्म पऽ बा चाहे अन्य रचना भी--सब सराहे जोग बा।

हमार बधाई आ शुभकामना लीं

राउर भाई आ साथी -- चंद्रेश्वर/ लखनऊ

भोजपुरी के उत्थान में भोजपुरी जंक्शन की भूमिका सराहनीय

पिछले साल हमारे पिता तुल्य अभिभावक परम आदरणीय प्रोफेसर राजगृह बाबू (चाचा) के साथ मेरे ही गांव पर एक मांगलिक कार्यक्रम में आपसे मुलाकात होना और आज भोजपुरी जंक्शन जैसे प्लेटफार्म पर आपके द्वारा किसी न किसी शख्शियत के साथ स्थापित संवाद कार्यक्रम को देखना सुनना और गुनना एक सुखद अहसास भरा हुआ लगता है।

लंगट सिंह महाविद्यालय में भोजपुरी के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर स्वर्गीय सतीश बाबू के छात्र होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं अपने शैक्षणिक जीवन में मात्र दो सालों तक भोजपुरी भाषा का छात्र भी रहा हूं। समसामयिक कतिपय कारणों से भोजपुरी भाषा की पढ़ाई जारी नहीं रख सका!

भोजपुरी जंक्शन पाक्षिक पत्रिका को पढ़कर भोजपुरी भाषा और साहित्य में आपके योगदान और भोजपुरी के उत्थान में आपकी भूमिका सराहनीय लगी जिसके लिए आपको और भोजपुरी जंक्शन पाक्षिक पत्रिका के सभी साथियों को सहृदय साधुवाद देना चाहुंगा।

आज के डिजिटल युग में आप बहुत ही बढ़िया तरीका से भोजपुरी को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं जो भोजपुरी भाषा और साहित्य को एक अलग अंदाज में ऊंचाइयों तक ले जाएगा।

छात्र जीवन के प्रारंभिक काल में अपन गांव मुबारकपुर में सम्पन्न हुए अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन में अपने पिता स्वर्गीय शिव यत्न सिंह जी के साथ अपने अभिभावक परम आदरणीय स्वर्गीय डॉ. प्रभू नाथ सिंह जी के देखरेख में हिन्दी और भोजपुरी के तमाम साहित्यिक शख्सियत यथा स्व. केदारनाथ सिंह जैसे लोगों का अपने दरवाजे पर आतिथ्य सत्कार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मुझे याद है उस साहित्य सम्मेलन में मेरे गांव मुबारकपुर का एक एक दरवाजा सुसज्जित गेस्ट हाउस बना हुआ था जिसमें हम सभी नौजवान एक अनुशासित कार्यकर्ता के रूप में रात दिन लगे हुए थे। हमे भोजपुरिया माटी पर जन्म लेने का गर्व है।

भोजपुरी भाषा के उत्थान में आप जैसे शख्सियत के साथ कदम दो कदम चलना सौभाग्य होगा।

राहुल प्रकाश सिंह, भूतपूर्व मुखिया मुबारकपुर, मांझी सारण

रउआ साहित्य के पुरातत्वविद् के काम कर रहल बानी

भोजपुरी जंक्शन के समीक्षा विशेषांक के दोसरका भाग पढ़ के मन जुड़ा गइल। हर अंक का साथे पत्रिका के कलेवर निखर रहल बा।

रउरा संपादन में नियमित रूप से निकल रहल 'भोजपुरी जंक्शन' भोजपुरी पत्रिकन का इतिहास में मील के पत्थर साबित हो रहल बा। एह पत्रिका के कई गो विशेषांक निकल चुकल-'संस्मरण', 'युद्ध', 'जीवन आ मृत्यु' विशेषांक। सब विशेषांक एक से बढ़ के एक। सगरो विशेषांकन से गुजरला का बाद ई बुझाता कि चार्ल्स डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत 'भोजपुरी जंक्शन' पर भी लागू होता। 'समीक्षा विशेषांक' चार खण्ड में प्रकाशित करे के राउर परिकल्पना राउर अन्वेषी प्रवृत्ति के परिचय दे रहल बा। पुरातत्त्वविद् समय

बीतला का साथ ओझल हो चुकल अतीत के वही रूप में सामने ले आवे के काम करेला जवना रूप में उ कभी रहे। ई पुरातत्व के काव्यशास्त्र ह। समीक्षा विशेषांक का माध्यम से रउओ वइसहीं काम कर रहल बानी। रउआ साहित्य के पुरातत्वविद् के काम कर रहल बानी–भोजपुरी के कृतियन के समीक्षा का जरिये प्रकाश में ले आके।

भोजपुरी जंक्शन के एह अंक के कलेवर भी पहिले के अंकन अइसन बेजोड़ बा। भोजपुरी जंक्शन का जरिये भोजपुरी माटी आ भाषा का प्रति राउर लगन आ समर्पण बेजोड़ बा, श्लाघनीय बा। हम साधुवाद कहतानी, आशीर्वचन दे रहल बानी।

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव, बी-1, शांति इन्क्लेव, कुसुम विहार, राँची

समीक्षा अंक संग्रहणीय बा...

समीक्षा अंक में जवना जवना किताब क समीक्षा छपल बा, ओमेसे कइगो किताब त खोजलो पर भी ना मिली। एक जगह पर एतना किताब क एक साथ समीक्षा मिलल बड़ा मुश्किल बा। मनोज भावुक नियर संपादक बा जवन, कहां से खोज के लेखकन से लिखवा लेत बाड़न, इ मामूली बहादुरी क काम नइखे। भोजपुरी क मशहूर किताबन क ई अंक संग्रहणीय हो गइल बा। ए अंक के बड़ा सम्हार के रक्खे के पड़ी। आगे क अंक भी एही तरे होखे एकरा खातिर पहिले से शुभकामना बा।.....

गोपाल जी राय, बाबा खड़क सिंह मार्ग, नई दिल्ली

भोजपुरी पत्र पत्रिका के प्रकाशन के इतिहास में एगो नया आयाम स्थापित

हाल में मनोज भावुक के संपादन में निकलल डिजिटल पाक्षिक पत्रिका भोजपुरी जंक्शन के समीक्षा विशेषांक 2 मिलल। भोजपुरी पत्र पत्रिका के प्रकाशन के इतिहास में मनोज भावुक हर विशेषांक के साथ एगो नया आयाम स्थापित कर रहल बाड़े।

लवट के हम पाछे के तरफ देखे के कोशिश कइनी त जानकारी मिलल कि भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के अधिकांश अंक कवनो ना कवनो महत्वपूर्ण चुनल विषय पर विशेषांक के रूप में आइल बा, जवना में अभी लगातार कुछ बरिसन से लिख रहल रचनाकार आ कुछ नया रचनाकर उपस्थित बाड़े। ई ओह सब के महत्वपूर्ण बनावत बा।

यदि कुछ विशेषांकन के नाम गिनावल जाव त ऊ बाड़ी सन बसंत विशेषांक, फगुआ विशेषांक, चइता विशेषांक , भगवान राम पर दुगो विशेषांक , गांधीजी पर तीन विशेषांक, चीन के विरुद्ध मुहिम पर विशेषांक , वीर कुंवर सिंह विशेषांक, देशभक्ति विशेषांक, सिनेमा विशेषांक, दशहरा विशेषांक, गिरमिटिया विशेषांक, दियरी बाती अउर छठ विशेषांक, राजेंद्र प्रसाद विशेषांक आदि आदि। एह प्रकार केंद्रित कुछ विषयन पर कवनो पाठक के एक जगह समकालीन लेखकन के विचार मिल जाता जवन कि महत्वपूर्ण बा।

समीक्षा विशेषांक–1 में 25 पुस्तकन पर लेखक लोग के परिचयात्मक टिप्पणी के साथ छोट समीक्षा बा। दोसरका विशेषांक में एहि तरी 25 गो प्रकाशित किताबन पर विभिन्न लेखक लोगन के परिचयात्मक टिप्पणी बा। साधारण पाठक से लेके, शोध में रुचि राखे वाला विद्यार्थी खातिर ई महत्वपूर्ण बा। प्रारंभिक जानकारी ऊंहा उपलब्ध बा जेकर बिस्तार आपन रुचि के अनुसार पाठक भा शोधार्थी कर सकेले।

डिजिटल पत्रिका के पन्नन के मोबाइल पर आगा पीछा घुसुकावत पढ़े में हमरा नियर आदमी के थोड़े दिक्कत भइल ह, जवन कि हमरा समझ से प्रायः हर व्यक्ति के साथे गुजरत होई। टच स्क्रीन हाथ के हर हलुक छुवन के साथे सरक के आगे पांच घसक जात रहे। फेर खोज के घसेट के मुख स्क्रीन पर ओह पाठ के ले आवे के जद्दोजहद शुरू होत रहे। थोड़े झुंझुवावनो लागत रहे। मोबाइल पर पढ़े के आ पत्रिका हाथ में ले के पढ़े के अनुभव अलग अलग होला। बाकिर जुग के अनुसार त जीवन के हर गतिविधि के हमनी के एडजस्ट करते बानी सन। करहीं के परी। मनोज भावुक के लगातार बढ़िया काम खातिर ढेर बधाई आ शुभकामना ।

प्रोफेसर पी राज सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार, सारण

समीक्षा विशेषांक के संपादकीय साहित्य, दर्शन आ विज्ञान के "अर्क" जइसन बा

विशेषांक के श्रृंखला के क्रम में "भोजपुरी जंक्शन" के समीक्षा विशेषांक 1, 2 आ गइल बा आ 3–4 आवे वाला बा। समीक्षा अपने आप में जेतना कठिन ह ओहुसे कठिन ई विशेषांकन के संपादकीय लिखल ह। केतना **"Concentration"** आ अध्ययन के जरूरत होला एगो संपादकीय लिखे में ई केवल विजुअलाइज कइल जा सकेला।

समीक्षा विशेषांक के संपादकीय साहित्य, दर्शन आ विज्ञान के "अर्क" जइसन बा। अर्क कहला के मतलब, जइसे कौनो जड़ी बूटी के शोधन करके अर्क निकालल जाला,

ठीक ओही तरे ई संपादकीय साहित्य, दर्शन आ विज्ञान के गूढ़ अध्ययन आ शोध के बादे लिखाइल बा।

एतना सक्रियता, एतना व्यस्तता के बावजूद एक के बाद एक "भोजपुरी जंक्शन" के विशेषांकन के प्रकाशन आ प्रत्येक विशेषांक के एतना उच्चस्तरीय संपादकीय, कम से कम हमरा बस के त नाहिए बा ।

बस एतने कहेब, एह संपादकीय सब के दिल से तल्लीनता से पढ़ला पर हीं एकरा तत्व के महसूस कइल जा सकेला।

अजय पांडेय, वरिष्ठ साहित्यकार, चंपारण

'भोजपुरी जंक्शन' समीक्षा प्रक्रिया के बहुआयामी बना के पाठकन के सोझा ले आ रहल बा

'भोजपुरी जंक्शन' के समीक्षा अंक के दुसरका भाग डाउनलोड होके सोझा आ गइल बा। एकरा पहिलिये नजर में देख लेवे से मन ना मानल। एह लगले भोजपुरी साहित्य के समृद्धी के पता त चलते बा, जे कवना-कवना विधा प कवना ढङे लिखाइल बा, बलुक, भोजपुरी प काम करे वाला लोगन के क्षमता आ ओकर अध्ययन के गहिराइयो के पता चल रहल बा। कृतियन के कथ्य के प्रस्तुती में आ सम्बद्ध विधा आ ओकर विधान से परिचय करावे में जवन जतन भइल बा, ऊ पाठक के मन के संतुष्ट क रहल बा। जवना ढङ से समीक्षा अंक प काम भइल बा, ऊ सम्पादकीय के सोचे ले ना, ओह सोच के गठन तक प भरोसा करा रहल बा।

समीक्षा का ह? ई आलोचना ह, जवन बिसय के नीर-छीर क के सोझा राखि देवे। ना निंदा, ना कवनो किसिम के कुचुराही, भा ना बेजरूरी प्रशंसा। बाकिर रचनाकार आ पाठक मन खातिर ई कतना दुख के बात बा, जे आलोचना के माने भेदभाव करत चर्चा हो के रहि गइल बा। अतने ना, आलोचना के 'सकारात्मक' करे के फेर में 'समालोचना' जइसन शब्द के जनम कइल गइल। अंक के सम्पादकीय में मनोज जी एही बिन्दू के पुरजोर ढंग से उठवले बानीं, 'समीक्षा के काम ना प्रशंसा कइल ह ना भर्त्सना। ओकर काम कवनो रचना के सही विश्लेषण आ मूल्यांकन कइल ह जवन ओह रचना का बारे में पाठक के समझदारी बढ़ावे आ नया दृष्टि देवे। ... समीक्षा में अतिवाद से बचे के चाहीं।'

जब एह समीक्षा अंक के सुरू करे के उत्जोग प बिचार होत रहे, आ एकरा लेके पहिल चर्चा भइल रहे त ओह चर्चा में हमरो भाग लेवे के अवसर मिलल रहे। ओह चर्चा के प्रमुख बिन्दू रहे जे अधिका से अधिका भोजपुरी कृतियन से परिचय करावल जाव। माने, आजु ले प्रकाशित भइल किताबन में से अधिका से अधिका प सोझ-सोझ परिचयात्मक चर्चा कइल जाव। जेह से, आजु के भोजपुरिया पीढ़ी अपना साहित्य के लेके जनकार हो सके आ आवे वाली पीढ़ी खातिर एकरा एगो थाती के तौर प जोगा के राखल जा सके। बाकिर, जवने रूप में समीक्षा के रूप जोगावल जा सकल बा, सोआगत जोग बा।

एह संदर्भ में ई चर्चा जरूरी हो जाता, जे, भोजपुरिया समाज, एकर लोक-भासा आ लोक-साहित्य भारत भूमी के सबले पुरान जियतार समाज आ अक्षुण्ण लोक-साहित्य में से बा। ई संस्कृत साहित्य के काव्यशास्त्र, जे गद्य-पद्य साहित्य के मूल ह, से अनछुआ होखो ई हो ना सके। संभवे नइखे। एह भारतीय काव्यशास्त्र के चार शास्त्रन से अउलाह तथ्य मिलल बा। पहिल, भारतीय दर्शनशास्त्र, जवन मनई के सोच के अध्यात्म के कगरी पहुँचावत ओकर मन के निर्दोष क देला। दोसर, व्याकरनशास्त्र, जवन प्रयुक्त भासा-बेवहार के गठन के प्रमुख साधन आ समाधान बतावेला। तीसर, कामशास्त्र, जे आनन्द के चरम बुझवावत भाव के सर्वोच्च अवस्था, समाधि, के राहि सहज करत विवेक के तार्किक क देला। आ, चौथा, कलाशास्त्र, जे रस आ ओकर अनुभूती के गझिन भाव के संभव करत भावमय क देला। एह चारों शास्त्र के मूल में सनातनी बिचार के सोर होला। एही से भारतीय भा भोजपुरिया साहित्य के कृतियन के समीक्षा भा आलोचना बलुक पच्छिमी-साहित्य भा अंगरेजी साहित्य के आलोचना-परिपाटी से ना नाथल जा सके। पच्छिमी आलोचना के बेवहार कृतियन के 'लैटेरल' आलोचना भर ले क सकेला। चाहें कतनो आयाम काहें ना जोरल जाव। जबकि सनातनी सोच उपरा बतावल चारों आयामन के लिहाज से कवनो कृति के कथ्य-तथ्य के उजागर करत सोझ क सकेला।

समीक्षा अंक के सम्पादकीय के कथ्य आ ओकर उठान आलोचना के बिचार-प्रक्रिया के साधे प महती जोर दे रहल बा। ई समीक्षा प्रक्रिया के बहुआयामी बना के पाठकन के सोझा ले आ रहल बा।

सूचना के अनुसार एह क्रम में अबहीं दू गो आउर भाग आवे वाला बा। इंतजार रही। मनोज भाई आ उनका सहयोगी टीम के एह पौढ़ उत्जोग प बेरि-बेरि बधाई। आ, आगा के अंकन खातिर अशेष शुभकामना..

अस्तु,
सौरभ पाण्डेय, नैनी, प्रयागराज (सम्प्रति भोपाल से

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

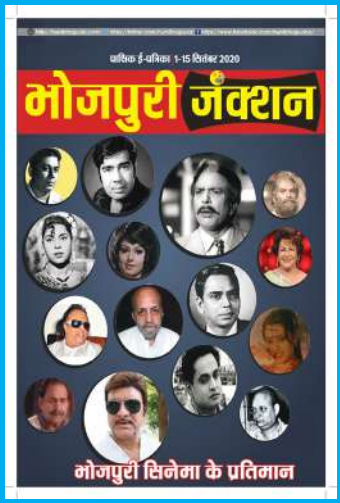
पाक्षिक ई-पत्रिका 1-15 दिसंबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के प्रतिमान

पाक्षिक ई-पत्रिका 16-30 दिसंबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
बम्बई में का बा?... त बिहार में का बा?
भोजपुरी स्वाभिमान के राह गढ़त ...
भोजपुरी सिनेमा के कलाकार

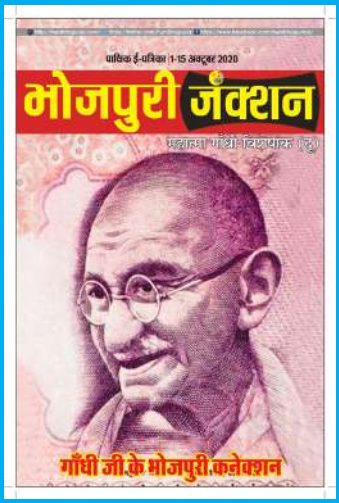
पाक्षिक ई-पत्रिका 1-15 अक्टूबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
गाँधी जी के भोजपुरी कनेक्शन

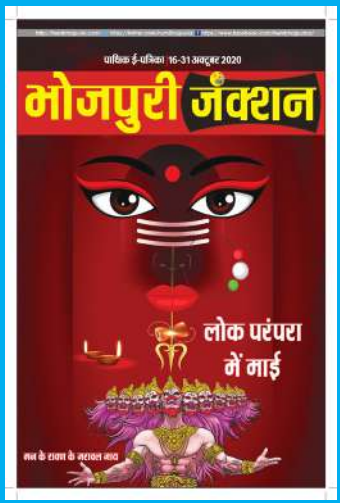
पाक्षिक ई-पत्रिका 16-31 अक्टूबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
लोक परंपरा में माई

पाक्षिक ई-पत्रिका 1-15 नवम्बर 2020
भोजपुरी जंक्शन
गिरमिटिया विशेषांक
गिरमिटिया
सियाह सत के सोनहुला भोर

भोजपुरी जंक्शन
दिवरी-बाती अउर छठ विशेषांक
उगी हे दीनानाथ...

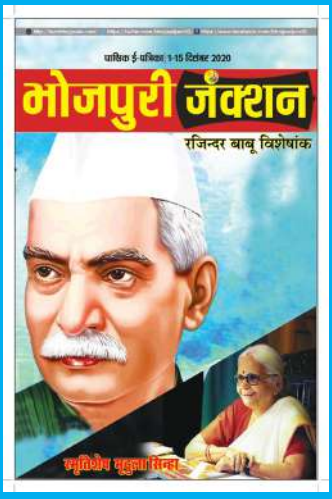
पाक्षिक ई-पत्रिका 1-15 दिसंबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
रजिन्दर बाबू विशेषांक

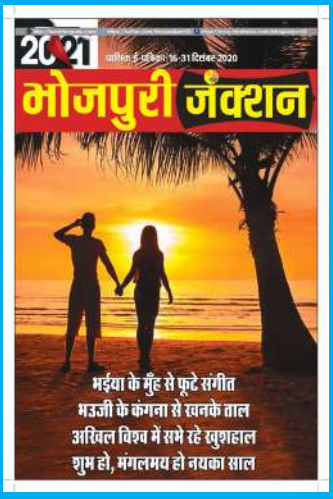
2021
पाक्षिक ई-पत्रिका 16-31 दिसंबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
भईया के मुँह से फूटे संगीत
भउजी के कंगना से खनके ताल
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल

भोजपुरी जँक्शन
गाव से रिवल्वरी लाइव

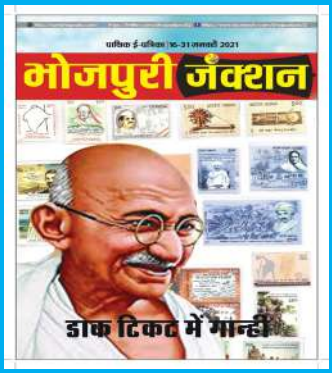
भोजपुरी जँक्शन
डाक टिकट में गान्ही

भोजपुरी जँक्शन
कोरोना विशेषांक
... ताकि सनद रहे

भोजपुरी जँक्शन
एगो कोरोना रहे...

भोजपुरी जँक्शन
होली विशेषांक
फगुनाहट हऽ कि कोरोनाहट

भोजपुरी जँक्शन
चइता विशेषांक
हम काटब गेहूं
गोरी कटिहऽ तू भुसुकी

भोजपुरी जँक्शन
कोरोना काल
का आदमी के आदमी बना सकी ?

भोजपुरी जँक्शन
कोचिंग से बेसी
'सोचिंग' के जरूरत बा

भोजपुरी जँक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
पानी प पानी लिखे के कोशिश

भोजपुरी जँक्शन
काहे खातिर फादर्स डे
काहे खातिर मदर्स डे

भोजपुरी जँक्शन
देशभक्ति विशेषांक
सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से

भोजपुरी जँक्शन
सुनीं सभे
विशेषांक
समसामयिक मुद्दन पर
विचार मंथन

भोजपुरी जँक्शन
प्रेमी इलाज बा तनाव के

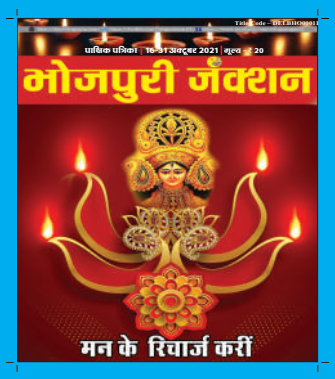
भोजपुरी जँक्शन
मन के रिचार्ज करीं

भोजपुरी जँक्शन
संस्मरण विशेषांक
अनुभव के अँटिया ह संस्मरण

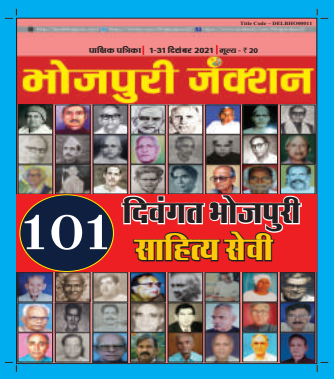
भोजपुरी जँक्शन
101
दिवंगत भोजपुरी
साहित्य सेवी

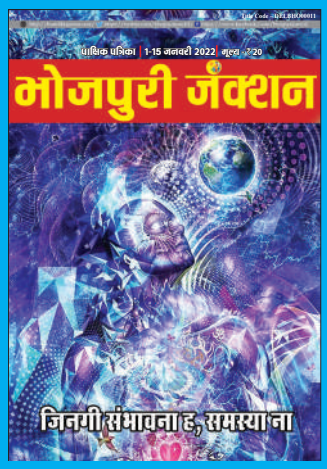
पाक्षिक पत्रिका | 1-15 जनवरी 2022 मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
जिनगी संभावना ह, समस्या ना

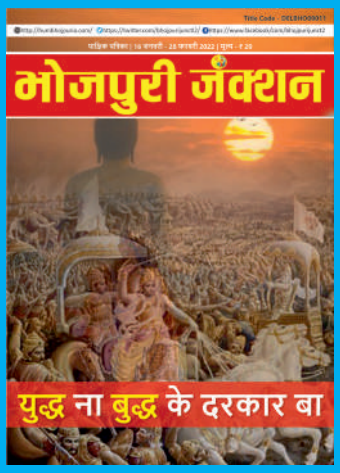
भोजपुरी जंक्शन
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा

भोजपुरी जंक्शन
रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक
जिंदगी युद्ध ना उत्सव ह

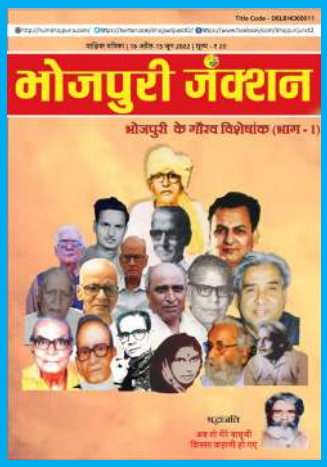
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी के गौरव विशेषांक (भाग - 1)

भोजपुरी जंक्शन
संपादकीय विशेषांक
ए हो रामा !
सावधान, ठैगन दगाबाज !
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा
हम भोजपुरिआ | भोजपुरी जंक्शन | 62 अंक

भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -1)
कवनो
ठगवा
नगरिया
लूटल हो
- कबीर

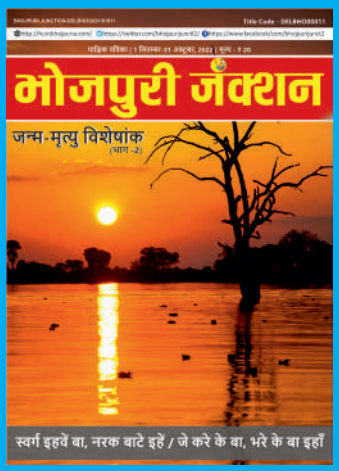
भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -2)
स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहें / जे करे के बा, भरे के बा इहाँ

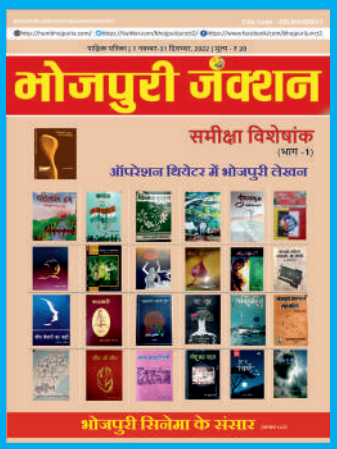
भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग -1)
ऑपरेशन थियेटर में भोजपुरी लेखन
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-2)
रोज रात समीक्षा, रोज सुबह उत्सव
भोजपुरी सिनेमा के संसार

एह अंक के रचनाकार

1.श्री आर. के. सिन्हा
श्री रवींद्र किशोर सिन्हा वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार अउर पूर्व सांसद हईं।

2.श्री मनोज भावुक
भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक, अचीवर्स जंक्शन चैनल के निदेशक, कवि, फिल्म-समीक्षक आ पत्रकार।

3.डॉ. अशोक द्विवेदी
डॉ. अशोक द्विवेदी जी भोजपुरी खातिर साहित्य अकादेमी के भाषा सम्मान से सम्मानित वरिष्ठ साहित्यकार हईं। पाती के यशस्वी संपादक अशोक जी दर्जनों पुस्तकन के प्रणेता, गंभीर अध्येता आ भोजपुरी साहित्य के समर्पित सेवक के रूप में जानल जानीं।

4. श्री हरेराम त्रिपाठी चेतन
संस्कृत में तीन, हिंदी में 35 आ भोजपुरी में 22 पुस्तकन के रचनाकार, समालोचक, लोकगन्धी भोजपुरी के संस्कार गीतन के आ भोजपुरी में गारी के मनोवैज्ञानिक विश्लेषक। कन्नड़ भाषा के सन्तसाहित्य (लिंगायत, बंसल) के पच्चीस सौ वचन के अनुवादक। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के वर्तमान अध्यक्ष।

5.श्री निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव
हिंदी आ भोजपुरी में मुक्त छंद में कविता, व्यंग्य, साहित्यिक निबन्ध आ आलोचना पत्र-पत्रिका में प्रकाशित। काव्य संग्रह 'समय की रेत पर' प्रकाशित। हिंदी भाषा आ साहित्य का उन्नति में सेवा खातिर बिहार हिंदी सम्मेलन द्वारा डॉ० काशी प्रसाद जायसवाल सम्मान से सम्मानित। बिहार पुराविद परिषद् के आजीवन सदस्य आ झारखण्ड हिंदी साहित्य संस्कृति मंच के उपाध्यक्ष।

6.डॉ. प्रमोद तिवारी
कैमूर, बिहार में जन्म। गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक। "सितुही भर समय", "भोजपुरियत के थाती" सहित 6 गो पुस्तक प्रकाशित।

7.श्री सूर्यदेव पाठक 'पराग'
सूर्यदेव पाठक 'पराग', जन्मः 23 जुलाई 1943, बगौरा, सीवान (बिहार)। भोजपुरी में मौलिक, संपादित आ अनुवाद के चौदह गो,हिन्दी में मौलिक आ संपादित तेरह गो आ संस्कृत में एगो अनूदित किताब प्रकाशित बा। 46 बरिस से अ०भा०भो०सा०सम्मलेन से जुड़ाव आ क्रमशः कार्य समिति सदस्य, प्रकाशन मंत्री, प्रवर समिति सदस्य रहला के बाद 2011 में सम्मलेन के 11वाँ जमशेदपुर सम्मलेन के अध्यक्ष। अभयआनंद पुरस्कार, आचार्य महेन्द्र शास्त्री पुरस्कार आ आउरो कई गो पुरस्कार से सम्मानित।

8.डॉ. शंकर मुनि राय 'गड़बड़'
हिंदी आ भोजपुरी के प्रतिष्ठित लेखक, समीक्षक आ व्यंग्यकार। भोजपुरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य पर पीएचडी आ भोजपुरी लोक साहित्य में यूजीसी परियोजना कार्य। डेढ़ दर्जन किताबन के लिखवयिया, आकाशवाणी आ दूरदर्शन से कविता कहानी आ व्यंग्य पाठ। विभागाध्यक्ष-हिंदी आ शोध निर्देशक, शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)।

9.श्री चंद्रेश्वर
30 मार्च 1960 में बिहार के बक्सर ज़िला के आशा पड़री गाँव के एगो किसान परिवार में जन्म। हिन्दी आ भोजपुरी में चालीस साल से जादा समय से कविता आ सृजनात्मक गद्यलेखन के सात गो प्रकाशित पुस्तक। एह घरी यूपी के बलरामपुर शहर में एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज में हिन्दी के प्रोफेसर।

10. डॉ. बलभद्र
हिंदी विभाग, गिरिडीह कॉलेज, गिरिडीह, झारखंड।

11.श्री विष्णुदेव तिवारी
भोजपुरी के स्थापित कहानीकार आ कहानी-समीक्षक हईं।

12. डॉ. संध्या सिन्हा
सम्पादक 'अँगना', प्राध्यापक, हिंदी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर। कविता संग्रह-दोहमच (भोजपुरी) आ बोलने दो (हिंदी)।

13. श्री जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सम्पादक जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के 4 गो भोजपुरी के किताब प्रकाशित हो चुकल बा अउर 4-5 गो किताबन के संपादनों कइले बानी।

14. श्री दिव्येन्दु त्रिपाठी
दिव्येन्दु त्रिपाठी, लेखक, अन्वेषक आ वास्तुविद्, कैलाश धाम, मानगो डिमनारोड, जमशेदपुर।

15.प्रोफेसर रामदेव शुक्ल

हिन्दी-भोजपुरी के प्रख्यात साहित्यकार प्रोफेसर रामदेव शुक्ल गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहल बानी। दर्जनों उपन्यास, कहानी-संग्रह, आलोचना-ग्रंथ, संपादित ग्रंथ के अलावा साठ से अधिक पुस्तकन में सह-लेखन कइले बानी।

16.श्री केशव मोहन पांडेय

सर्व भाषा ट्रस्ट के समन्वयक केशव मोहन पांडेय हिन्दी-भोजपुरी के स्थापित कथाकार-कवि बानी।

17. श्री रवि शंकर सिंह

हिदी-भोजपुरी के युवा साहित्यकार डॉ. रवि शंकर सिंह वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार) में असिस्टेंट प्रोफेसर (गेस्ट फैक्लटी) बानी।

18.डॉ. किरण सिंह

उत्तर प्रदेश, बलिया के निवासी डॉ. किरण सिंह के 18 गो पुस्तक प्रकाशित बा। दूरदर्शन, आकाशवाणी आ विभिन्न साहित्यिक मंच पर इहाँ के सक्रिय रहेनी।

19.श्री अखिलेश पांडेय

अखिलेश कुमार पांडेय एगो वरिष्ट रंगकर्मी आ रंग निर्देशक बानी। पिछला 16 साल से रंगमंच का अलावे अभिनेता के तौर पर कई गो टीवी सीरियल का संगे-संगे, फिल्मों कइले बानी। विभोर पत्रिका के प्रबंध संपादक बानी।

20.श्री शिब्बू गाजीपुरी

15 जुलाई 1972 में उत्तर प्रदेश के गाजीपुर ज़िला के युवराजपुर गाँव के एगो किसान परिवार में जनमल शिब्बू गाजीपुरी जी हिन्दी आ भोजपुरी में 30-35 साल से जादा समय से कविता आ सृजनात्मक गद्यलेखन करि रहल बानी। इहाँ के हिन्दी में 'मैं क्या कहूँ' पुस्तक प्रकशित हो चुकल ह। महुआ आ MH 1 दिल से टीवी चैनल में असिस्टेंट डायरेक्टर आ स्क्रिप्ट राइटर रह चुकल बानी।

21.श्री विश्वजीत शेखर राय

विश्वजीत शेखर राय कुशीनगर जिला के सलेमगढ़ गाँव के निवासी हईं आ वर्तमान में हैदराबाद के एगो बहुराष्ट्रीय आईटी कम्पनी में कार्यरत बानी। भोजपुरी-हिन्दी साहित्य में समान रूप से रुचि रखेवाला विश्वजीत के लिखल लेख समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिका में छपल करेला आ इहाँ के स्वयं एगो प्रतिष्ठित ई-पत्रिका 'तमकुही-समाचार' के सम्पादक बानी।

22.श्री अभिषेक भोजपुरिया

भोजपुरी-हिंदी भाषा में लेखन आ सिनेमा में अभिनय में सक्रिय अभिषेक भोजपुरिया के भोजपुरी कविता संग्रह 'मन कचनार भइल' आ हिंदी कविता संग्रह 'अस्मिता' प्रकाशित हो रहल बा।

23. डॉ. रजनी रंजन

घाटशिला झारखंड में रहे वाली डॉ. रजनी रंजन हिन्दी आ संस्कृत में एम० ए०, फेर एम०एड० आ बी० एच० यू० से पी० एच० डी० कइले बानी। हिन्दी-भोजपुरी में रचना प्रकाशित होत रहेला।

24. डॉ. आदित्य कुमार अंशु

डॉ. आदित्य कुमार अंशु गीत, गजल, कहानी, नाटक,,संस्मरण, समीक्षा आदि विधन में लगातार लेखन कर रहल बानी।

25.श्री आनंद कुमार

बलिया, उत्तर प्रदेश के निवासी। लखनऊ में अध्ययन-अध्यापन के कार्य। "साहित्य समीक्षा" नाम के एगो राष्ट्रीय स्तर के युवा साहित्यिक, शैक्षिक संस्था के संस्थापक-अध्यक्ष। हिन्दी, भोजपुरी भाषा में विभिन्न विधा में रचनाकर्म करे अऊर पढ़े में रुचि।

26.श्री अजय साहनी

ग्राम महुली, जिला सारण, बिहार के रहनिहार श्री अजय साहनी जी के भोजपुरी में काव्य संग्रह "काहे?" आ "अन्हरिया में अंजोर" प्रकाशित बा।

27.श्री राजेन्द्र प्रसाद विद्रोही

डूहा बिहरा बलिया, उत्तर प्रदेश के निवासी राजेंद्र प्रसाद विद्रोही आजकल परम धाम आश्रम मौनी बाबा के आश्रम पर सेवा दे रहल बानी। बाबा जी के साहित्य के प्रूफ रीडिंग कर रहल बानी। अद्वैत दर्शन मासिक पत्रिका आ मनुज अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादन से भी जुड़ल रहल बानी।

卐卐

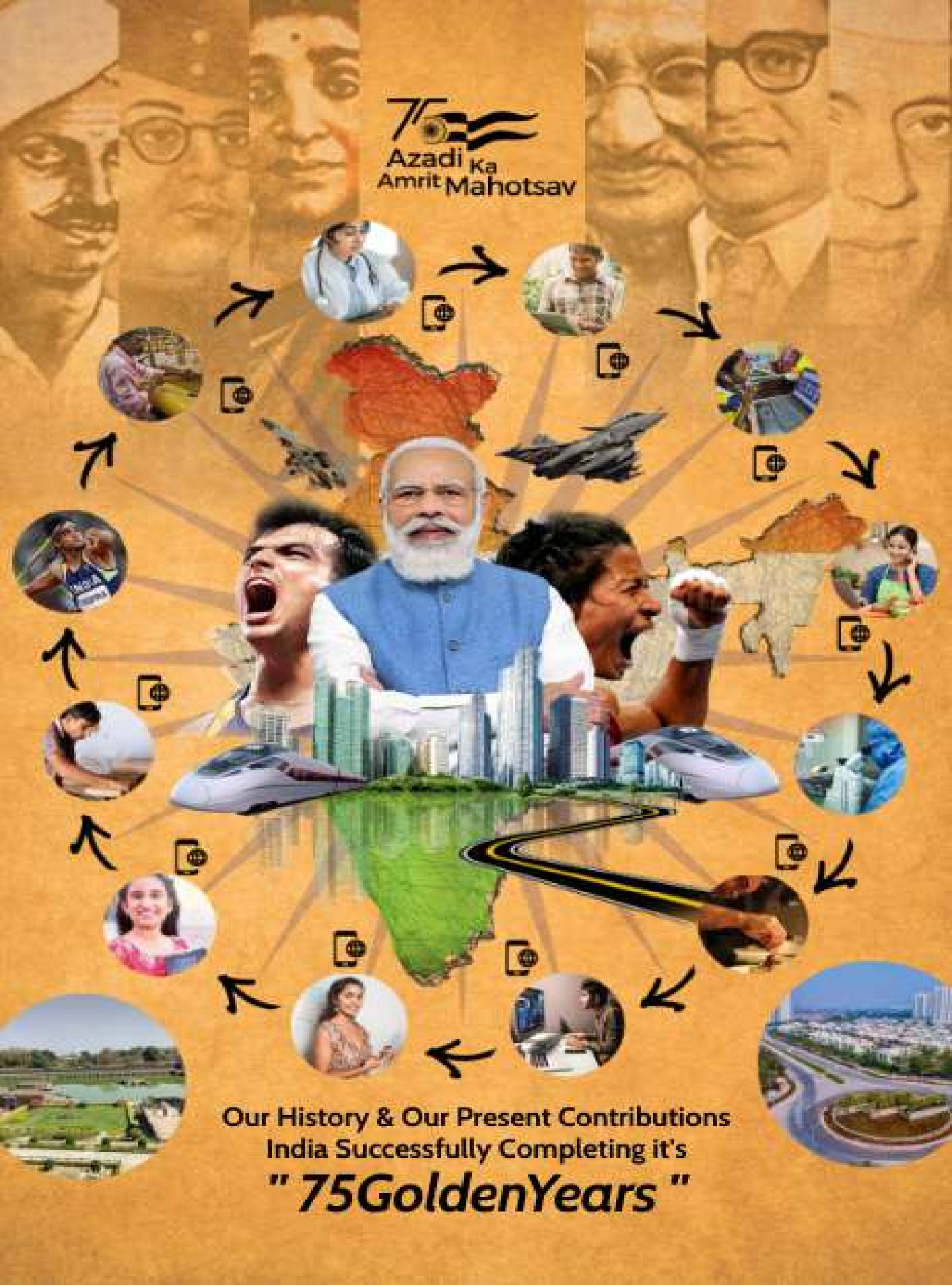
Azadi Ka
Amrit Mahotsav
Our History & Our Present Contributions
India Successfully Completing it's
" 75GoldenYears "

ACFL माइक्रो फाइनेंस

विकास आपका - साथ हमारा

3 राज्य || 46 जिलें || 87 शाखाएँ

2.5 लाख+ ग्राहक सेवित || 850 करोड़+ ऋण संवितरित

लक्ष्य

वंचित महिला उद्यमियों को सशक्त बनाना

हमारी ऋण सेवाएँ

आय वृद्धि ऋण

10,000 से 1,00,000 तक

कृषि, पशुपालन, लघु उद्योग, फेरीवाले, हस्तशिल्प, या आय सृजन के अन्य गतिविधियाँ

स्वच्छ घर ऋण

5,000 से 25,000 तक

शौचालय या बाथरुम के निर्माण या मरम्मत, जल संचय या स्वच्छ पेयजल से जुड़े कार्य

शिक्षा ऋण

5,000 से 25,000 तक

स्कूल, कॉलेज या कोचिंग की फीस, यूनिफार्म या किताब खरीदने, या कंप्यूटर खरीदने

कल्याण ऋण

5,000 से 20,000 तक

शादी या जेनेऊ, बच्चों का मुंडन या छट्ठी, जन्मदिन या सालगिरह, या अन्य आकस्मिक खर्च

गृह सुधार ऋण

15,000 से 50,000 तक

घर में विद्युतीकरण, पेंटिंग, प्लास्तेरिंग, टाईलिंग, किचन, लकड़ी या छत मरम्मत का कार्य

महिला सशक्तिकरण

के तरफ एक प्रयास

सहेली ऐप

सभी ग्राहकों के लिए ऋण से संबंधित संपूर्ण जानकारी

ई-क्लिनिक

सभी शाखाओं पर मुफ्त परामर्श और जरुरी दवाएं उपलब्ध

STAY HOME STAY SAFE

GOVERNMENT OF KARNATAKA

I protect you
You protect me!

A person suffering from COVID-19 may not show symptoms but can still spread the virus. Wear face masks at all times when you step outside.

#MaskForAll

#KarnatakaFightsCorona

#breakthechain